

प्रकाशक—
रत्नाश्रम, आगरा ।



मुद्रक—
चन्द्रहंस शर्मा विशारद
रत्नाश्रम फा० आ० प्रि० व० आगरा ।

महाकवि तुलसीदास



ससार अपार के पार को सुगम रूप नोका लयौ ।
कलि कुटिल जीव निस्तार हित वालमोकि तुलसी भयौ ॥

—नाभाजी

जन्मकालीन परिस्थिति ।

उस समय ससार की सबसे पुरानी सभ्यताभिमानिनी जाति का जीवन घोर सकट में फँस चुका था । प्रेम, सौहार्द और सहानुभूति के पवित्र बन्धन जीर्ण हो चुके थे । इपा, ड्रेंप, कलह और बाह्याडम्बरों ने आर्ष-काशीन नि श्रेयस और अभ्युदय वाले जादूओं को एक दम तिलुप्त कर दिया था । अहम्मन्यता-जन्य मिथ्या ज्ञान का चारों ओर प्रसार हो रहा था । इन्द्रिय जन्य विलासिता ने जीवन की प्रगति ही चदल दी थी । समाज की कुत्सित और घृणित भावनाएँ स्वार्थ क्षेत्र में ताण्डव नृत्य कर रही थीं । “गुरु शिष्य अन्ध बधिर कर लेखा, एक न सुनाई एक नहिं देखा” के चारों ओर ज्वलन्त उदाहरण दिखाई पड रहे थे । वैदिक धर्म की शाखा प्रशाखाओं की मत विभिन्नता शत्रुता के रूप में परिणत हो चुकी थी । साहित्य में कुत्सित और विलासी भावों ने स्थान पाकर जनता के हृदय और मस्तिष्क को क्लुपित कर दिया था उस समय की आन्तरिक स्थिति तो ऐसी थी ही, बाह्य परिस्थिति भी नितान्त निरापद नहीं थी । तीन चार सौ वर्ष पर्यन्त क्रमागत आक्रमणों से भारत के अधिकांश विभागों में खून-प्राधान्य स्थापित हो चुका था । एक ओर सैनिक-शक्ति का केन्द्र राजा मानसिंह व राजा पृथ्वीसिंह अकबर के दरबारी होने का फल करते थे, दूसरी ओर राजा वीरबल और टोडरमल मुगल साम्राज्य

के विस्तार का उपाय दूध निकालने में तत्पर थे। राष्ट्र के कृषि, मुगल सम्राट् के यशोगान का, और पण्डित, सम्राट् की विद्वत्परिपट में वाद प्रतिवाद का अवसर पा जाने को पूर्ण सौभाग्य समझते थे। इस प्रकार जब कि हिन्दू जाति का भाग्याकाश धीरे अनिष्टान्धकार से व्याप्त था, उसी समय प्रकाशमान पिण्ड के रूप में महाकवि गोस्वामी तुलसीदास का प्रादुर्भाव हुआ।

प्रारम्भिक जीवन।

प्रायः महाकवि का आविर्भाव काल स्वत् १५८९ विक्रमी माना जाता है। इनका जन्म स्थान राजापुर है और कुछ लोग तारी गाँव को यह गौरव देते हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि अभिजित नक्षत्र में जन्म होने के कारण माता पिता ने इनको त्याग दिया था। इनके पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम तुलसी था। दानवन्धु पाठक का रत्नावली कन्या के साथ इनका पाणि ग्रहण हुआ था।

अपनी स्त्री के साथ इनका प्रगाढ प्रेम था। उनका ओखों से ओझल होना इन्हें असह्य था। अनेक आग्रह होने पर भी रत्नावली को उसके पिता के घर न भेजा। एक बार भाई के साथ विना आज्ञा लिए ही देवी चली गई। जब तब वहाँ पहुँच ही पाई थी कि महाराज जी जा धमके। इस कारण से रत्नावली को प्रती ग्लानि हुई। उसी अवस्था में यह उद्गार उनके हृदय से निकल पड़े,—“मेरे इस पारिवन्धारी में बापका इतना स्नेह है, यदि यही स्नेह श्रीरघुनाथ जी के चरणकमलों में होता तो बेड़ा पार था।”

यस, यहीं मे हमारे चरितनापक के विकास का आगणेश है। जो प्रेम की अत्रिल धारा रत्नावली के लिए संचालित हो रही थी, वही भय से हरि-पद पकड़ों की ओर बहने लगी। उनके हृदय-पटल-बुल गये, माया का

पदा उठ गया, मोहतम हट गया रत्नावली का आरोप सारे विश्वमें हुआ। व्यष्टि, समष्टि रूप में प्रकट हुई। प्रगय ने भक्ति का भेप बदला।

एक छोटेसे परिवारी से "बसुधेन कुटुम्बकम्" वाले हुए। ससार-त्याग के पीछे आपने पुन अपने गुरु की शरण ली। यही पर इनका पालन-पोषण हुआ था और यहा पर इन्होंने शिक्षा पाई थी। विद्वानों और साधुओं का सत्संग किया। पहले के अनिश्चित रूप से प्रवेश किये हुए सस्कार धीरे धीरे जागृत हो चले। सरस्वती के इस लखिले पुत्र ने नाना पुराण, निगम और आगमों का अध्ययन किया। जो कुछ देखा, दृश्य तक पहुँचा, जो कुछ सुना मस्तिष्क में घुमटाया। "जहाने मूरत ना जरा २ जमाल (७) माना का आइना" बन गया। इस प्रकार जीवन क्षेत्र की दुर्भेद्य अगम्य घाटियोंको पार कर तुलसी ने इस विस्तृत मेहनतम विचरण किया। गुरु प्रसाद से, "हिय के विमल त्रिलोचन' उबरे और 'भय रज्जा के दुख-लपे' दूर हुए। आत्मा में अमरत्व का बीजारोपण हुआ और हृदय में अमृत तत्त्व का अकुरोद्भव। ऐसे ही समय में इनका रचनाकाल आरम्भ होता है। रामचरित मानस ही इनकी सर्व प्रथम और सर्व प्रिय रचना है। गुसाई जी ने भौमवार चेत्र शुक्रानवमी स० १६३१ वि० को अयोध्या में यह महाकाव्य प्रारम्भ किया था। पीछे किसी मुरख हेतु से काशी चले गये, वहाँ पर मानस की पूर्ति हुई। रामचरित मानस के अतिरिक्त उनका "प्रिय पतिज्ञा" प्रिय सम्बन्धी महाग्रन्थ है। भाषा क्लिष्ट होने पर भी इसमें पद गलित्य और माधुर्य की कमी नहीं है। रचना-शास्त्र विद्वानों की दृष्टि में यह गोस्वामी जी की सर्वोत्कृष्ट रचना है। इनके अतिरिक्त गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली, रामरत्नानन्द, वैराग्य सतीपनी, धरवाराभाषण पार्वतीमंगल, जानकी-मंगल, रामाज्ञाप्रश्न, कलिधर्म निरूपण आदि अनेक रचनाएँ हैं।

रस्तु और उसका विकास ।

महाकवि ने जिस मुख्य रस्तु (मूत्र ढाँचे) पर अपना दिव्य और अव्यय रचना प्रामाद खडा किया है वह न तो स्वकल्पित है और न किसी

रचना-मौष्ठव ।

वस्तु निर्देश ओर उसके विनास करने में कवि पूर्ण स्वतन्त्र होता है, परन्तु भाग्य बातों में साहित्यशास्त्र के चिरमान्य नियमों का यथाशक्ति पालन करने के लिये उसे बाध्य होना पड़ता है ।

अलंकार शास्त्रियों ने उत्कृष्ट रचना के लिये तीन गुणों की आवश्यकता बतलाई है, शक्ति, व्युत्पत्ति ओर अभ्यास । पूर्व सस्कार जन्य देवी चमत्कार ही शक्ति है । परम ध्रुवावान् भगवद्भक्ति की दृष्टि में यह पूर्व सस्कार जन्य शक्ति भगवद् कृपा के सिन्धु और क्या है !

“जापर कृपा करहिं जन जानी ।
कवि-उर अजिग नचावहिं जानी ॥”

सर्व प्रिय राम चरित मानस का निमाण ही इनका प्रथम कौशल है ।
उसमें कहा है —

“कवि न होउँ नहिं चतुर प्रवीनू ।
सकल कला सब विद्या हीनू ॥
आपस, अर्थ अलंकृत नाना ।
छन्द प्रबन्ध अनेक विधाना ॥
भाव—भेद रस—भेद अपारा ।
कवित—दोष गुण—विधि प्र प्रकारा ॥
कवित—विप्रेरु एक नहिं मोरें ।
मत्य नहों लिखि कागद फोरें ॥”

भाव, अर्थ, अलंकार, छन्द प्रबन्ध, भाव और रसा का ज्ञान, रचना के लिये कितना आवश्यक है और गोस्वामीजी इनका ज्ञान न रखने के लिये कोरे कागज पर लिखकर शपथ कर रहे हैं । कुछ लोग समझेंगे, कि उनका यह महज तर्कलुप है, कोरा दिखावा है, शापों की सी आजिजी है, किन्तु दोहायली में कहा है —

इन्हीं अपार भावों की अभिव्यक्ति पर ही काव्य के उत्कर्ष का शायित्व है। महाकवि की रचना में भावों की अभिव्यक्ति का अपूर्व कौशल है। देखिये —

“भैया कहतु कुशल दोउ वारे,
तुम नीक निज नयन निहारे।”

इस सीधे-साधे शब्दा में प्रसाद गुण के साथ कितना काल्पित्य और माधुर्य है। वात्सल्य भाव में सरायोर अयोध्या के वृद्ध सम्राट् राजा दशरथ के हृदय का केसा कोमल और स्निग्ध चित्र है। राजा जनक के दूत — प्लची नहीं धारक हरवारे—राम, लक्ष्मण के कुशल समाचार लेकर अयोध्या में आये हैं। अत्यन्त हित से झटपट पास बिठाकर मधुर, मीठे वचनों में पूछते हैं,—“भैया ! दोनों वारे नकुशल हैं ?” इतना ही पूछ कर उत्तर की प्रतीक्षा नहीं करते। आगे कहते हैं “तुमने अपनी आँखों से भी देखा है ?” पुत्र प्रेम में तटनीन राजा की मनोवृत्ति किस प्रकार तरंगित होती है ! पत्र में उन्हें सन्तोष नहीं। वह धावकों की आँख में आँख मिलाकर स्वर्य देखना चाहते हैं। “दर्शनोत्सुक्य” का कितना प्रबल भाव है ! दूत उत्तर देते हैं —

किशोर अवस्था है, सौंजला और गोरा रंग है, धनुष बाण लिए हुए विद्यामित्र के साथ है इस चिन्हारी से क्या न बना, कहते हैं “जो देखा तो कहौ स्वभाऊ” इतने पर मनोवेग स्थिर हुआ और लम्बी साँस के साथ निकल पटा —

“जा दिन ते मुनि गये लिवाई ।
तत्र ते श्राजु साँच सुत्रि पाई ॥”

दूमरा उदाहरण लीजिए। इस महा नाटक का आनन्द हृदय सामने है। राम के व्याह के पीछे “नित नव मंगल मोद प्रधाये” हो रहे हैं। कलोल करती हुई रिधि सिधि-सम्पत्ति की नदियाँ अवधअम्बुधि में गिर रही हैं। रामचन्द्र का मुख चन्द्र देखकर मंत्र विधि में पुर-लोग सुरी हैं।

मनोरथ बेलि फलित देखकर सब सखी सहेली सहित माताएँ मुदित हैं। राम के रूप गुण शील और स्वभाव को देखकर राजा प्रमुदित है। “सब पायउ प्रभु, पद रज पूजे” वाले युग में एक चिन्ता हृदय में तरंगित हो उठी है। रात्र मूर्त राम के हाथ में दे दिया जाय, इसके लिये भी गुरु ने आज्ञा दे दी। तैयारी होने लगी। दासी मन्धरा को यह सब अच्छा न लगा, हृदय में विरोधी भाव जागृत हुए। ईर्ष्या और द्वेष ने उसके मस्तिष्क में खलपली मचा दी। इस आयोजन को निफल करने के लिये युक्ति सोची। रानी कैम्हई से जाकर कहा।

देखती नहीं हो राजा का कपट जाल। प्रियास म मग्न हा, यदि राम राजा हो गये तो तुम्हारा कल्याण नहीं? सुनते ही कैम्हई का अन्त करण आन्दोलित हुआ। हृदयस्थ भावों के तितान्त विरुद्ध बात असह्य हुई। लोधावेश हो आया —

‘पुनि अरु कहसि करहुँ घर फोरी।

तो धरि जीह रढ़ावहुँ तोरी ॥”

कहते कहते आवेश कम हो चला। कुछ तर्क और विवेक ने अपना काम किया—निष्कर्ष निकला —

“काने खारे कूपरे गुट्टिता कुचाली जानि।

तिय विशेष पुनि चेरि कहि भगत मानु मुसिकानि ॥”

ऐसी कुचाल करने के लिये काने, गारे होने का दोष ही पर्याप्त था। स्त्री और स्त्रियों में भी चर्चा होनेसे वह दोष (कारण) और भी प्रबल हो गया, तो मला ऐसी कुटिलता क्यों न करें? स्वभाव से ही ऐसे लोग ऐसा करते हैं। उन बातों को कहने ही रानी मुस्करा गई यह मुस्कराहट उपेक्षा मूककह है। इतने पर भी रानी से छुप नहीं रहा गया, काने लगी—

प्रियपादिनि, सिख दीन्हैउ तोहीं,

रूपनेउ ता पर फोप न मोहीं ॥”

जो हो, इस राजवंश के परिचय के साथ २ अन्य कुछ व्यक्तियों का परिचय देना भी उचित है—जिनके कारण रामायण की कथा में सोने में सुगन्ध आ गई है। जिनमें से एक तो—

सुमन्त

जो, अयोध्या के राजवंश के सच्चे सेवक और हितैषी थे। महाराज की गुप्त-मन्त्रणाएँ प्रायः इनसे ही हुआ करती थीं। यह बहुत ही उदार और सहृदय थे। रामचन्द्र जी इन्हें सदैव पूज्य ऋषि से देखते थे।

“तुम पुनि पितु सम भति हित मोर ।
बिनती करहुँ तात कर जोरे ॥”

रामचन्द्र को पहुँचाकर जब वन से सुमन्त लौटे तो उनकी बहुत ही शोचनीय अवस्था हो गई, इसका वर्णन कल्पनातीत है, एक उदाहरण से कवि ने उस समय की अवस्था का चित्र खींचा है—

“जिमि कुलीन तिय साधु सयानी ।
पति दयता कर्म मन घानी ॥
रहै कर्म बस परिहरि नाहू ।
सचिव हृदय तिमि दारुन दाहू ॥”

यथा ही दारुण वेदना है। इससे —

“बिबरन भयो न जाइ निहारी ।
मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥
हानि गलानि विपुल मन व्यापी ।
यमपुर-पथ सोघ जनु पापी ॥”

ऐसी दशा में—

हृदय न बिदरत पक निमि बियुरत पीतम नीर ।
जानन हौं मोहि दीन दुख यम-यातगा सरीर ॥

और राम को मागा, उस समय दशरथ जी बड़े चकर में " गये, कहा—

मँगहु भूमि धेनु धन कोपा ।
सर्वस देहुँ आज सह रोपा ॥
देह प्राण ते प्रिय क्यु नार्हीं ।
सोड मुनि देहुँ निमिप इक् माहीं ॥

इतना तो बात की बात में टे सकता हूँ । पर राम के देने में कुछ सकोच है । मैं ससैन्य चल सकता हूँ । राजसो से लड कर उनके अत्याचार से अपने देश को बचा सकता हूँ । परन्तु राम सुकुमार है, वच्चे हैं "घोर मायावी असुरों के मुकाबिले में उन्ते भोजना" समझ में नहीं आया—

'जिये पन पायेउ सुत चारी ।
बिप्र बचन नहिं कहेउ सँभारी ॥”

अस्तु । थोड़ी देर के लिये मर्वस्व दे सकने पर भी पुत्र के न देने का विचार जी में रहा । वशिष्ठ जी ने समझाया कि भारत-मात की छाती से राजसी अत्याचार, यदि तुम्हारे पुत्र के द्वारा दूर हो जाय तो तुमसा भाग्यवान कौन होगा ? राजा का मोह दूर हो गय देश और धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राण से प्यारे पुत्रों व ऋषि के अर्पण कर दिया । धन्य त्याग !

इतने गुण होते हुए भी एक अवगुण था—राजा ने क विवाह किये । इसी कारण गृह-कलह हुआ ।

वृद्ध अवस्था में भी वह सयमी न रहे । कामान्धता से वैकेर की चालों को न समझ सके, उससे प्रतिज्ञा कर बैठे । परन्तु प्रतिज्ञा को किस प्रकार निवाहा, यह इतिहास के पत्रों पर स्वर्णाचरो में लिखा हुआ है—

“जियन मरन फल दसरथ पावा । भइ अनेक ६मल जस छावा ॥
जियत राम बिधु भदन निहारा । राम विरह मरि मरन सँभारा ॥”

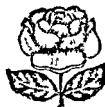
समर मरन, पुनि सुग्सरि तीरा ।
राम काज, छिन-भगु सरीरा ॥
भरत भाइनुप, र्म जन नीचू ।
यहे भाग अस पाइय मीचू ॥

अस्तु ! अपढ जगली जाति के नायक के आत्म बलिदान की समता क्या किन्ही सभ्य जाति के इतिहास में कहीं मिल सकती है ?

॥ इति ॥

आगरा)
आरण वृ णा x)
स० १६७८ वि०)

अध्यापक रामरत्न ।



आदि, पश्चात्ताप करते हुए अयोध्या आए । अंधेरे में नगा प्रवेश किया । खाली रथ देखकर लोगों की रही सही आशा भूट गई । अयोध्या पहुँचकर स्वयं धीरज बाँधा और बड़े पाटिल पूर्ण भाषण द्वारा राजा को समझाने की चेष्टा की, पर अन्तः "हरीच्छा बलीयसी" ही रहा ।—अस्तु ।

दूसरे निपाट पति —

गुह

थे, जिनका चरित्र भी पवित्र प्रेम से भरा हुआ और अति उज्ज्वल था । रामचन्द्र जी से इनका घनिष्ठ स्नेह हो गया था । वन में जब रामचन्द्र साथरी पर सो रहे थे और लक्ष्मण धनुषबाण ले पहरा दे रहे थे, निपाट भी उनके पास जा पहुँचा ।

“सोऽत प्रभुहि निहासि निपाट् ।
भयउ प्रेम-वस हृदय निपाट् ॥
ननु पुलङ्गित जल लोचन बहही ।
वचन सप्रेम लखन सन कहही ॥”

इस समय जो दुःख से भरी हुई बातचीत गुह ने की जिससे उसकी सहृदयता का पता चलता है । इसके सिवाय वह बड़ा भारी वीर भी था । जब यह अनुमान हुआ कि भरत ससैन्य राम से लड़ने जाते हैं—तो अपनी सेना को लड़ने की आज्ञा दी असहाय राम पर ससैन्य भरत चढ़कर जाते हैं, जीते जी ह । इस अन्याय को कैसे सहे—

होइ सजोइल रोकहु घाटा ।
ठाटहु सकल मरन कै ठाटा ॥
सनमुख लोह भरत सन लेहु ।
जियत न सुरसरि उतरन देहु ॥

॥ श्री ॥

श्रीमद्गोस्वामी

तुलसीदास कृत रामायणम्

अयोध्याकाण्ड प्रारम्भः

यस्याङ्के च विभाति^१ भूधर-सुता^२, देवापगा^३ मस्तके,

भाले बालविधुर्गले च गरले, यस्योरसि व्यालराट्^४ ।

सोऽयं^५ भूतिनिभूपण, सुरवर, सर्वाधिप सर्वदा^६,

शर्व^७, सर्वगत, शिव शशिनिभ श्रीशकर पातु माम् ॥१॥

प्रसन्नता या न गताभिपेकतस्तथा न मन्ते वनवासदुःखत ॥

मुखावुजश्रीरघुनन्दनस्य मे सदाऽस्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥२॥

नीलावुजश्यामलकोमलाङ्गम्, सीतासमारोपितवामभागम् ॥

पाणौ महासायकं चाक्रुचाप नमामि राम रघुवश नाथम् ॥३॥ ५५६

अर्थ — जिनके अङ्क में पार्वतीजी, सिर पर गगाजी मस्तकपर नवीन चन्द्रमा, गले में त्रिप, हृदय पर सर्पराज का यज्ञोपवीत, शोभित है। भस्म रमाए, देवताओं में श्रेष्ठ, सबके स्वामी, भविनाशी, सहार करने वाले सर्वव्यापी, कल्याणकारी तथा चन्द्रमा के समान गौरवर्ण होने श्रीमहादेव की मेरी सदैव रक्षा करें ॥१॥

राज्याभिपेक्ष से प्रसन्नता को और वनवास के दुःख से मलिनता को प्राप्त नहीं हुई ऐसी श्री रामचन्द्र के मुख-चमल की शोभा, मुखे कल्याण की देने वाली हो ॥२॥ नील कमल के समान सुन्दर श्याम और कोमल भगवाले, जिनके वाम भाग में जानकी जी निराजमान हैं, हाथों में सुन्दर धनुषबाण है ऐसे रघुवश के स्वामी श्रीरामचन्द्र को मैं प्रणाम करता हूँ ॥३॥

१ सुशोभित २ पार्वती ३ (देव + अप + गा) गगाजी ४ तगराज
५ (स अयम्) ६ भविनाशी ७ सहारकर्ता ८ मेरी रक्षा करें ।

॥ श्री ॥

श्रीमद्गोस्वामी

तुलसीदास कृत रामायणम्

अयोध्याकाण्ड प्रारम्भः

यस्याङ्के च विभाति^१ भूधर-सुता^२, देवापगा^३ मस्तके,
भाले बालविधुर्गले च गरले, यस्त्योरसि व्यालराट्^४ ।
सोऽयं भूतिविभूषणं, सुरवर, सर्वाधिप मर्वदा^५,
शर्व^६, सर्वगत, शिव. शशिनिभ श्रीशकर पातु माम् ॥१॥

प्रसन्नता या न गताभिपेकतस्तथा न मन्त्रे वनवामदुःखत ॥

मुखाबुजश्रीरघुनन्दनस्य मे सदाऽस्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥२॥

नीलाबुजश्यामलकोमलाङ्गम, सीतासमारोपितवामभागम् ॥

पाणौ सहासायक चारुचाप नमामि राम रघुनश नाथम् ॥३॥ *८५५*

अर्थ — जिनके अङ्क म पार्वतीजी, सिर पर गगाजी मस्तकपर नवीन चन्द्रमा, गले म विप, हृत्पथ पर सर्पराज का यज्ञोपवीत, शोभित है। भस्म रमाण, देवताओं में श्रेष्ठ, सबके स्वामी, अविनाशी, सहार करने वाले सर्वग्यापी, वन्याणकारा तथा चन्द्रमा के समान गौरवर्ण ऐसे श्रीमहादेव जी मेरी सदैव रक्षा करें ॥१॥

राज्याभिपेक मे प्रसन्नता को और वनोवास के दुःख से मलिनता को प्राप्त नहीं हुई, ऐसी श्री रामचन्द्र के मुख-कमल की शोभा, मुझे कल्याण की देने वाली हो ॥२॥ नील कमल के समान सुन्दर श्याम और कोमल अंग वाले, जिनके वाम भाग में जानकी जी विराजमान हैं, हाथों में सुन्दर धनुषबाण है ऐसे रघुनश के स्वामी श्रीरामचन्द्र को मैं प्रणाम करता हूँ ॥३॥

१ सुशोभित २ पार्वती ३ (देव + अप + गा) गगाजी ४ नागराज
५ (स अयम्) ६ अविनाशी ७ सहारकर्ता ८ मेरी रक्षा करें ।

दोहा—श्रीगुरु चरन-सरोज^१-रज, निज मन मुकुर^२ सुधारि ।
वरनउ^३-रघुवर-विमल-जसु, जो दायकु फल चारि^४ ॥

जब तें राम व्याहि घर आये । नित-नव-मगल मोट बधाये
ॐ भुवन-चारिदस भूधर-भारी । सुकृत^५ मेव वरपहिं सुख-चारि
रिविसिधि-सपति-नदी सुहाई । उमगि अवध-अवुधि कहँ आ
मनिगन-पुर-नर-नारि-सुजाती । सुचि-अमोल-सुन्दर सब भाँत
कहि न जाइ कछु नगर विभूती । जनु इतनिअ विरचि-करतूत
सब विधि सब पुर-लोग सुखारी । रामचन्द्र-सुख-चन्दु^६ निहारी
मुदित मातु सब सखी महेली । फलित^७ विलोकिमनोरथ-बेली
रामरूप गुन सीलु सुभाऊ । प्रमुदित होहि देखि सुनि राऊ

दाहा—सब के उर अभिलापु अस कहहि मनाइ महेसु ।
आपु अछत^८ जुनराजपद, रामहिं देहि नरेसु ॥२॥

एक समय सब सहित समाजा । राज-सभा रघुराजु विराजा
मफल-सुकृत-भूरति नरनाहू । राम-सुजसु सुनि अतिहि उद्धाहू
नृप सब रहहिं कृपा अभिलासे । लोरुप^९ रहहिं प्रीति-रस रासे
त्रिभुवन तीनि काल जग माहीं । भूरि-भाग^{१०} दमरथ सम नाई
मगल-मूल रामु सुत जासू । जो कछु कहिअ थोर सबु तासू
राय सुभाय मुकुर^{११} कर लीन्हा । वदनु विलोकि मुकुटसमकीन्हा

१ (सर + ज) कमल २ दर्पण ३ अर्ध, धर्म, काम और मोक्ष ४ पुण
५ अवधरूपी ममुट ६ (चन्द्रना रूरी मुँह) ७ फलती हुई (कर्मवाच
८ मोजूदगी ९ उत्साह १० बड़ भागी ११ दर्पण ।

ॐ पहले ही पद्य में तुलसीदास जी अलङ्कार-चमत्कार किस स्तरी
दिग्ग्य रहे हैं, इस पद्य में सम अभेद रूपक है ।

ॐ देग्यो गद्यार्थ प्रकाश ।

वन^१ समीप भए सित केसा । मनहुँ जरठ-पनु अस उपदेसा ॥ ४
 प्र जुवराजु राम कहूँ देह । जीवन-जनम-लाहु किन लेहू ॥
 दो०—यहि विचारु उरु यानि नप, सु^२ दिन सु-अवसरु पाइ ।

॥१॥ प्रेम पुलकितन, मुदितमन, गुरहि सुनायेउ जाइ ॥
 रहइ सुअल^३ मुनिअ मुनि नायक । भये रामसव विधि सव लायक ॥
 वैयक सचिव सकल पुर बासी । जे हमार अरि मित्र उदासी ॥ ८
 सबहिं रामु प्रिय जेहि विधि मोही । प्रभुअसीस जुनु तनु बरि सोही ॥
 विप्र सहित, परिहार गोसाईं । करहिं छोहूँ^४ सव रौरिहि नाई ॥
 जे गुरु चरन रेनु सिर धरहीं । तेजनु सकल विभव बस करहीं ॥
 मोहि सम यहु अनुभयेउ न दूजें । सन पायेउ प्रभु पद-रज पूजे ॥
 अब अभिलापु एक मन मोरे । पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
 मुनि प्रसन्न लखि सहज-सनेहूँ^५ । कहेउ नरेस रजायसु^६ देहू ॥

दो०—राजन, राउर नामु-जसु, सब अभिमत^७ दातार ।
 फल अनुगामी महिप मनि^८, मन अभिलापु तुम्हार ॥ ४ ॥
 विधिगुरु प्रसन्न जिय जानी । चोलेउ राउ त्रिहंसि मृदु-बानी ॥
 नाथ, रामु करिअहि जुवराजू । कहिय कृपाकरि करिअ समाजू ॥
 मोहि अछत यहु होइ उछाहू । लहहिं लोग सब लोचन-लाहू ॥
 प्रभु-प्रसाद सिव सप्रद निवाहीं । यह लालसा एक मन माहीं ॥
 मुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ । जेहि न होइ पाछे पछिताऊ ॥
 मुनि मुनि दसरथ बचन सुहाण । मगल मोद-मूल मनभाए ॥
 सुनु नृप जासु त्रिमुख पछिताहीं । जासु भजन विनु जरनि न जाहीं ॥

१ (श्रवण) काण्ड २ (भूपाल) राजा ३ कृपा ४ अभाव मे ही स्नेह है
 नितम, (घट्टमाहि ५ आज्ञा ६ इच्छाओं ७ (महिषों में शिरोमणि, सप्तमी
 तक्षुरप ।

८ राजा, आपका नाम और यद्य सब इच्छाओं को पूरा करने
 वाला है । हे महिष मणि, चारों फल आपकी मनोऽभिलाषाओं के पीछे
 पीछ चलते हैं—अर्थात् कोई मनोरथ आपका छूँछा नहीं पड़ता ।

भयेउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी । रामु पुनीति 'प्रेम अनुगामी' ।

दो०—वेगि विलबु न करिअ नृप, साजिअ सबुइ समाजु ।

सु-दिन सु-मगलु तवहिं जव, राम होहिं जुवराजु ॥१॥

मुदित महीपति मन्दिर आए । सेवक सचिव सुमत बुलाए
कहि 'जय जीव' सीसतिन्ह नाए । भूप सु-मंगल-वचन सुनाए ॥
प्रमुदित मोहि कहेउ गुरु आजू । 'रामहिं राय देहु जुवराजू' ॥
जौ पाँचहि मत लागइ नोका । करहु हरपि हिय रामहिं टीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय-वानी । अभिमत-निरव' परेउ जनु' पानी ॥
विनतो सचिव करहि कर-जोरी । जिअहु जगत-पति वरस करोरी ॥
जग-मगल भल काजु प्रिचारा । वेगिअ नाथ न लाइअ वारा ॥
नृपहिं-मोडु सुनि सचिव सु-भाखा । वढत वौडें' जनु लही सु-साखा ॥

दो०—कहेउ भूप मुनिराज कर, जोइ जोइ आयसु होइ ।

राम राज-अभिपेक-हित वेग करहु सोइ साइ ॥६॥

हरपि मुनीस कहेउ मृदु वानी । आनहु सकल सु-तीरथ पानी ॥
ओपधि मूल फूल फूल पाना । कहे नाम गनि मगल नाना ॥
चामर चरम' वनन' बहुभाँती । रोम-पाट-पट' अगनित-जाती ॥
मनिगन मगल वस्तु अनेका । जो जग' जागु भूप अभिपेका ॥
वेद-विदिति कहि सकल विद्याना । कहेउ रचहु पुर विविध-विताना ॥
सफल रसाल' पु-गफल' केरा । रोपहु वीथिन्ह' पुर चहुँ फेरा ॥
रचहु मजु मनि-चौकई चारु । कहहु वनावन वेगि बजारु ॥
पूजहु गनपति गुरु कुलदेवा । सब विधि करहु भूमि-सुर-सेवा ॥

१ प्रेम के अनुगामी (पट्टी तत्पु०) २ आर्षकाल में राजा के सम्मुख जाते समय प्रजावग यह मगल सूचक पद उच्चारण करते थे । ३ रा-न-तिलक, ४ इच्छा रूपी पौधे पर, ५ मानों (उत्प्रेक्षालकार वाचक पद) जब मानों, जानो भागि पदों से एक अर्थ में दूसरे अर्थ की सभायना की जाती है । ६ कुम्हडा की धे- ७ रेशमी व ऊनी वस्त्र ८ चँदोरा ९ नाम १० सुपारी ११ गलियों में

दोहा—ध्वज पताक-तोरन-कलस, सजहु 'तुरग रथ-नाग'^१ ।

सिर धरि मुनि-र-वचन सवु निजनिजकाजहि लाग ॥७॥

जेहि मुनीस जो आयसु दीन्हा । सोतेहिकाजु प्रथम जनु कीन्हा ॥

विप्र-साधु-सुर पूजत राजा । करत राम-हित मगल काजा ॥

सुनत राम-अभिपेक-सुहावा । बाज गहागह^२ अवध वधावा ॥

राम सीय-तनु सगुन जनाए । फरकहि मगल अग सुहाए^३ ॥

पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं । भरत आगमनु-सूचक अहहीं^४ ॥

ए बहुत दिन अति अवसेरी^५ । सगुन प्रतीत भेंट प्रिय केरी ॥

रत-सरिस प्रिय को जगमाहीं । इहइ सगुन-फलु दूमर नाहीं ॥

महि वधु सोच दिन राती । अइन्हि कमठ-हृदय जेहि भाँती^६ ॥

दोहा—ऐहि अनसर मगलु परम, सुनि हरपेउ रनिवासु ।

मोमत लरि-विधु वढत जनु, वारिधि वीचि^७ बिलासु ॥८॥

थम जाड जिन्ह वचन सुनाए । भूपन बमन भूरि तिन्ह पाए ॥

मेम पुलकि तन-मन अनुरागी । मगल साज सजन सव लागी ॥

वौकई चारु सुमिगा पूरे । मनि-मयविनिध भाँति अतिरुरे^८ ॥

आनंद मगन राम सह-तारी । दिण दान बहु निप्र हँकारी ॥

पूजी आमदेवि-सुर-नागा । कहेउ वहोरि देन बलि भागा ॥

जेहि निधि होइ राम कल्याणू । देहु दया करि मो वरदानू ॥

गात्रहि मगल कोकिल-चयनी^९ । विधु-वदनी मृग-सावक-नयनी ॥ ४

दोहा—राम राज अभिपेकु सुनि, हिय हरपे नर-नारि ।

लगे सु-मगल सजन सव, विधि अनुकूल विचारि ॥९॥

१ घोडा रथ और हाथी २ गहहरे ३ पुरप वा दाहिना और स्त्री का थोथा भग फउकना शुभ सूचक माना गया है । ४ है ५ चिन्ता ६ कतुआ तट पर अडे रगसर जिस प्रकार चिन्तित रहता है । ७ लहर, मानो पूर्ण चन्द्र को देग समुद्र म लहरें उदो लगीं (उदक्षालकार) ८ अति सुन्दर ९ कोकिल के बंन समान है बंन जिनके भादि (बहुव्रीहि समास)

तव नर-नार वसिष्ठु बुलाये । राम-धाम सिंग देन-पठाये ।
 गुरु-आगमनु मुनत रघुनाथा । द्वार आइ नायेउ पद माथा ।
 'मादर अरघ' देइ घर आने । सोरहु-भौति^२ पूजि मनमाते ।
 गहे चरन सिय सहित बहोरी । बोले रामु कमल-कर जोरी ।
 सेवक-सदन स्वामि-आगमनू । मगल-मूल अमगल-दमनू ।
 तदपि उचित जनु बोलि स-प्रीती । पठइअ काज नाथ 'अमनीती'^१ ।
 प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू । भयेउ पुनीत आजु यहु गेहू ।
 आइसु होइ सो करउँ गोसाई । सेवक लहइ स्वामि-सेवकाई ।
 दोहा—मुनि सनेह-साने-वचन, मुनि रघुवरहि प्रसस ।

राम कसन तुम्ह कहहु अस, 'हस-वस-अवतस'^३ ॥१०॥

वरनि राम-गुन सील-सुभाऊ । बोले प्रेम-पुलाकि मुनिराऊ ।
 भूप सजेउ अभिपेक समाजू । चाहत देन तुम्हहि जुबराजू ।
 राम करहु सव सज्जम^४ आजू । जो विधि कुसल निवाहइकाजू ।
 गुरु सिंग देइ राउ पहि गएऊ । राम-हृदय अस विसमय भणऊ ।
 जनमे एक सग सव भाई । भोजनसयन केलि लरिकाई ॥
 करन बेध उपवीत विप्राहा । सग सग सव भए उछाहा ॥
 विमल-वस यह अनुचित^५ एकू । अनुज विहाइ बडेहि अभिपेकू ॥
 प्रभु सप्रेम-पछितानि सुहाई । हरउ भगत-मन कै कुटिलाई ॥

दोहा—तेहि अवसर आये लपन, मगन प्रेम आनन्द ।

सनमाने प्रिय वचन कहि, रघुकुल-कैरव-चन्द्रः ॥११॥

१ आगन्तुः के स्वागत के लिये पात्र से पृथ्वी पर जल छोड़ना, आर्षकाल की स्वागत विधि । २ देपो गृधार्थ कोप ३ हस (सूर्य) के वश पथी तत्पु० हस वश से अवतंस (भूपण) मसमी तत्पु० । ४ व्रत, नियम ५ यद्यपि गीति उचित समक्षता है परन्तु राम वा स्वार्थत्यागी हृदय इसे अनुचित समक्षता है । ६ रघुकुल रूपी कैरव, (रूप्य-रूपक भाव सं रूपक कर्मधारय,) रघुकुल रूपी करव के लिये चन्द्रमा रूप-पर-परित रूपक ।

कहिं वाजन् विविध विधाना । पुर प्रमोदु नहिं जाय वराना ॥
 अत आगमनु^१ सकल मनाग्रहि । आग्रहि बेगि नयन फल पाग्रहि ॥
 गट वाट घर गली अथाई^२ । कहहिं परसपर लोग लोगाई ॥
 शलि लगन^३ भलि केतिक वारा । पूजिहि विधि अभिलापु हमारा ॥
 नक सिधासन सीय समेता । बैठहिं राम होय चित-चेता^४ ॥
 कल कहहि क्व होइहि काली । विघन मनाग्रहि देव कुचाली ॥
 न्हहि मोहाड न अग्र-वधाया । चोरहिं चोंदनि राति न भावा ॥
 गद गोलि विनय गुर करही । वारहिं वार पाँय लै परहीं ॥

दो०—विपति हमारि त्रिलोकि बडि, मातु करिय मोइ आजु ।

रामु जाहि वन राजु तजि, होट सकल सुर-काज ॥

पुनि सुर त्रिनय ठाडि पछिताती । भइउँ सरोज-विपिन-हिमगती ॥

गि देव पुनि कहहिं निहोरी । मातु तोहि नहि योगिउ रोगी ॥

वेसमय-हरप-रहित^५ रघुराऊ । तुम्ह जानहु मव राम प्रभाऊ ॥

जीन करम-प्रम दुग-सुख भागी । जाटग्र अवध देवहित लागी ॥

वार वार गहि चरन सकोची । चली त्रिचारि त्रिवुध^६ मति पोची ॥

उँच निजासु नीच करतूती । देखि न सकहिं पराड विभृती ॥

आगिल काजु निचारि बहोरी । करिहहि चाह कुमुल फनि मोगी ॥

हरपि हृदय दसरथ-पुर आई । जनु ग्रह-दसा^७ दुसह दुख दाई ॥

दो०—नामु मथरा, मद्र मति, चेरि कैकेइ केरि ।

अजम पेठारी^८ ताहि करि गई गिरा^९ मति फेरि ॥१३॥

दीप मथरा नगर-वनावा । मगल मजुल वाज वधाया ॥

पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू । 'राम तिलकु' सुनि भा उर दाहू ॥

१ धाना (भाउ वा० संज्ञा) २ (आम्याई) चौपा, गेटन । ३ मुहूत
 ४ स्फूर्ति, आनन्द ५ गट, अपराध ६ सुख दुःख मे रहित । (अपादान
 धारक में) ७ देवता ८ वैभय ९ जन्म राति मे ४, ८, १० स्थान पर
 धनिग्रह, राहु, मंगल आदि ग्रहण हों तो कुदशा होती है । १० उराई
 की पिठारी ११ सरम्बती

करइ विचारु कुबुद्धि-कुजाती । होइ अकाजु कवनि विधि रू
 देखि लागि मधु कुटिल किराती । जिमि गौ-तकई^१ लेउं केहि भाँ
 भरत मातु पहि गइ विलखानी । 'का अनमनि' हसि कह हँसि र
 ऊतरु देइ न लेइ उसासू । नारि-चरित करि ढारइ आँ
 हँसि कह रानि गालु बड तौरें । 'दीन्ह लखन सिर' अस मन
 तबहुँ न योलि चेरि बडि पापिनि । छाँडइ स्वास कारि जनु साँपिनि

दो०—सभयरानि कह 'कहसि किने'^२ कुसल रामु महिपालु ।

लखनु-भरतु रिपु-दमनु^३, सुनि भा^४ कुवरी-उर सालु^५ ॥१॥

कत सिर देइ हमहिं कोउ माई । गालु करव केहि कर वलु पाई
 'रामहि छाँडि कुसल केहि आजू । जेहि जनेसु देहि जुवराव
 भयउ कौसलहि विधि अति दाहिन । देखत गरव रहत उर नाहिन
 देखहु कस न जाइ सव सोभा । जो अवलोकि मोर मनु छोभा
 पूतु विदेस, न सोचु तुम्हारे । जानतिहहु 'वस नाहू हमारे'
 नाँव बहुत प्रिय सेज तुराई^६ । लखनु न भूप कपट-चतुराई
 सुनि प्रिय वचन मलिन मनु जानी । भुकी^७ रानि अब रहू अरगानी
 पुनि अस कवहुँ कहसि घर-फोरी^८ । तब धरि^९ जीह कढायीं तोरी

दो०—'काने सोरे ॐ कवरे, कुटिल कुचाली जानि ।

तिय विसेपि पुनि चेरि, कहि भरत मातु मुसुकानि ॥ १३ ॥

प्रिय वादिनि^{१०} सिर दीन्हि उँ तोही । सपनेहु तो पर कोपु न मोही
 सु दिनु सु-भगल-दायकु सोई । तोर कहा फुर^{११} 'जेहि दिन होई
 जेठ स्वामि, सेवक लघु भाई । एहु दिन कर कुल रीति सोही

१ घात उगाती है । २ क्यों नहीं ३ हुआ ४ पीडा ५ तोशक, तदि
 ६ झिडक कर ७ चुप / घर में फूट डालने की बात ८ पकड़
 १० मिठ बोली (बहुमोहि ममास) ११ सत्य ।

इदुदभी नामक गंधर्वा नापवश लुभडी स्त्री होकर कैवर्डी की दा
 यीं । यह तीन जगह से टेडी थी इसका नाम त्रिचक्रा भी था ।

राम तिलकु जौ साँचेहु काली । देउँ माँगु मन भावत आली ॥
 कौसिल्या सम सब महतारी । रामहि सहजसुभार्य^१ पियारी ॥
 मो पर करहिं सनेहु विसेपी । मैं करि प्रीति परीच्छा देखी ॥
 जौ निधि जनमु देइ करि छोहू । होहु राम-सिय पूत-पतोहू^२ ॥
 प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरें । तिन्ह केतिलक छोभु कस तोरें ॥

दो०—भरत सपथ तोहि, सत्य कहु, परिहरि कपट दुराड ।

हरप समय विपमय करसि, कारनमोहि सुनाड ॥१६॥

कहि वार आस सन पूजी । अब कछु कहव जीह करि दूजी ॥
 फोरइ जोगु कपारु अभागा । भलेउ कहत दुरग रौउरेहि लागा ॥
 कहहिं भृठि फुरि वात बनाई । ते प्रिय तुम्हहि, करुइ मैं माई ॥
 हमहुँ कहव अब ठरुर-सोहाती । नाहिं त मौन रहव दिन राती ॥
 करिकुरूप निधि परवस कीन्हा । 'वगामोलुनिर्त्र'^३ लहिअ जो दीन्हा ॥
 फोड नृप होउ हमहि का हानी । चेरि छाँडि अब होव कि रानी ॥
 जारइ जोग सुभाउ हमारु । अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥
 ताते कछुक वात अनुसारी^४ । छमिअ देवि बडि चूक हमारी ॥

दो०—गूढ-कपट-प्रिय वचन सुनि, तीय अधर-पुधि रानि ।

सुर-माया-बस वैरिनिहि, मुहद ज्ञानि पतियानि^५ ॥१७॥

सादर पुनि पुनि पूछति ओही । मवरी-गान^६ मृगी जनु मोही ।
 तसि मतिफिरी अहइ जसि भागी^७ । रहसी^८ चेरि घात^९ जनु फावी^{१०} ।
 तुम्ह पूछहु मैं कहत डगऊँ । धरेहु मोर धरफोरी नाऊँ ॥
 सजि प्रतीत, बहुविधि गढि छाँली । अबध साढ साती^{११} तव बोली ॥

१ स्वभाव से ही २ बहू थेटा ३ जो बोया गया वही काटा गया
 अर्थात् करनी का फल पाया । ४ कही ५ विश्वास किया । ६ भीलनी
 के गाने से ७ होनहार ८ प्रसन्न हुई ९ तब १० (फतती) लगी । ११
 शनिश्चर एक राशि पर २२ वर्ष रहता है जन्म का, बारहवाँ और दूसरा
 जन्म राशि में घुरा समझा जाता है, तीनों की मिलकर (बहुर्माहि समाप्त)
 साढ़े सात वर्ष वाली दशा ।

‘प्रिय मियरामु’ कहा तुम रानी । ‘रामहिं तुम प्रिय’ सो फुरि वानी ॥
रहा प्रथम अव ते दिन वीते । समउ फिरे रिपु^१ मोहि पिरीते ॥
भानु^२ कमल-कुल पोपनिहारा^३ । विनु जर जारि करै सोइ छारा^४ ॥
जर^५ तुम्हारि चह सवति उखारी । रूंधहु^६ करि उपाउ वर-वारी ॥

दो०—तुम्हहि न सोचु, सुहाग^७ बल, निज बसजानहु राउ ।
मन-मलीन मुहु-भीठ नृप, राउर सरल सुभाउ ॥१५॥

चतुर गंभीर^१ राम महतारी । वीचु^२ पाइ निज वात सँभारी ॥
पठए भरतु भूप ननिचौरै । राम-मातु-मत जानव रारै^३ ॥
सेवहि सकल सवति मोहि नीके । गरवित भरत-मातु बल पीके ॥
सालु तुम्हार कौसलाहि माई । कपट-चतुर^४ नहि होइ जनाई ॥
राजहिं तुम पर प्रेम विसेयी । सवति^५ सुभाउ सकड नहि देरी ॥
रचि प्रपच^६ भूपहि अपनाई । राम-तिलक हित लगन वराई ॥
यहु कुल उचित राम कहँ टीका । सवहि सुहाउ मोहि सुठि नीका ॥
आगलि वात सनुभि डर मोही । देउ दैव फिरि सो फलु थोही ॥

दो०—रचिपचि कोटिक कुटिलपन, कीन्हेसि कपट प्रबोधु
कहेसि कथा सत-सवति कै, जेहि विधि वाढ विरोधु^१ ॥

भावी बस प्रतीति उर आई । पूँछि रानि निज सपथ दिवाँ ॥
का पृछहु तुम्ह अवहु न जाना । निज हित-अनहित पसु पहिचान ॥
भयेउ पाग्न^२ दिनु मजत समाजू। तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आ ॥
राइअ पहिरिअ राज तुम्हारे । सत्य कहे नहि दोषु हमारै ॥
जौ असत्य फलु कहव बनाई । तौ विधि वेइहि हमहि मजाई^३ ॥

१ बरी २ सूर्य ३ पालन करने वाला ४ ग्राहक ५ (जट) ६ रक्षा ७
७ उपायरूपी सुन्दर वारि से (धारा वार कँटे आदि लगाता) ८ (सौभा
९ गहरी, मनक भावा को गूढ रखने वाली १० अवसर ११ आप
कपटमें चतुर, छलिया, १२ (सपत्नी) १४ पड्यध, जाल १५ पैर १६ (द
१७ सजा ।

एतद्दि तिलतु कालि जौं भयेउ । तुम्ह कहँ निपति-वीजु^१ निधि जयेऊ ।
 ऐस सँचाइ कहँ बलुभासी^२ । भामिनि भइहु दूध कइ माग्यी ॥
 जौं सुत सहित करहु सेवकाई । तौ घर रहहु न ध्यान उपाई ॥

दो०—^३कद्रू विनतहि दीन्ह दुखु, तुम्हहिँ कौसिला देव ।

भरत बटि-गृह सेइहहिँ, लखनु राम के नेत्र^४ ॥२०॥

इत्यसुता सुनत कटु-यानी । कहि न सहे कछु सहमि सुगानी ॥
 अनुपसेउ^५ रुदली जिमिकाँपी । कुारी दसन जीभ तत्र चाँपी^६ ॥
 कहि कहि कोटिक कपट-कहानी । वीरज धरहु प्रबोधिसि रानी ॥
 कौन्दिम कठिन पडाट कुपाट^७ । जिमिन नये फिर उकटि^८ कु-काट^९ ॥
 फेरा भरमु प्रिय लागि कुचाली । बकिहि^{१०} सराटइ मानि मगली ॥
 पुनु मथरा वात फुरि तोरी । दहिनि आरि नित फरकहि मोरी ॥
 दिन प्रति देखौं राति कु-मपने । कहौ न तोहि मोह बस अपने ॥
 काह करउँ सखि सूध सुभाऊ । दाहिन ब्राम^{११} न जानउँ काऊ ॥

दो०—अपने चलत न त्राजु लागि, अनभल काहुक कीन्ह ।

केहि अघ एकहि वार मोहि, देव दुसह दुख दीन्ह ॥२१॥

नेहर^{१२} जनमु भरव^{१३} वरु जाई । जियतन करवि मयति सेनकाई ॥
 ग्रियम टैठ जिआयत जाही । मरनु नीरु तेहि जीव न चाही ॥

कद्रू और विनता नामा कश्यप मुनि की दो स्त्रियाँ था, सबों की माता का नाम कद्रू और पत्निया की माता का नाम विनता था । एक दिन कद्रू न विनता से मृग के घोड़े की पूँछ का रंग पूछा-कसा है ? उसने कहा गौरा है । कद्रू ने कहा जाल है । इस क्षण में निश्चय हुआ कि चल्कर देगो और जिसभी वान खेंडी हो वह गसी वाहर रहे । कद्रू न विनता के लिये घोड़ों की पूछ म नर्प जा लिपट । पूँछ जाती दिव्वाई देन लगा । जिसमे विनता लजित हो उसकी दासी होकर रहने लगी ।

१ दुख का खोज २ प्रतिज्ञा पूर्वक ३ (जात्य) सहायक ४ डरी

५ पर्माना जाया ६ बँले का पेट ७ दायी ८ तुरे पाठ ९ उकटा हुआ, सूखा १० बवू- ११ पगुली १२ हमना १३ मित्र, अमित्र १४ पीहर १५ विनाऊँगी ।

‘प्रिय सियरामु’ कहा तुम रानी । ‘गमहिं तुम प्रिय’ सो फिरि जानौ
रहा प्रथम अत्र ते दिन बीते । समउ फिरे रिपु^१ मोहिं फिरि
भानु, कमल कुल पोपनिहारा^२ । त्रिनु जरु जारि करै सोइ छाया^३
जर^४ तुम्हारि चह सवति उखारी । रूंधहु^५ करि उपाउ वर-गारी^६

दो०—तुम्हहिं न सोचु, सुहाग^७ बल, निज वसजानहु राउ ।
मन मलीन मुँहु-मीठ नृप, राजर सरल सुभाउ ॥१०

चतुर गँभीर^१ राम-महतारी । वीचु^२ पाइ निज वात सँभारी^३
पठए भरतु भूप ननिअरै । गम-मातु-मत जानव गुरै^४
सेअहि सकल सवति मोहि नीकें । गरवित भरत मातु बल पी^५
गालु तुम्हार कौसलहि माई । कपट-चतुर^६ नहि होइ जनाई
राजहि तुम पर प्रेम विसैरयी । सवति^७ सुभाउमकइ नहि देखै
रचि प्रपच^८ भूपहि अपनाई । राम तिलक हित लगन बरसै
यहु कुल उचित राम कहँ टीका । सवहि सुहाउ मोहि सुठि नीक
आगलि वात समुझि डर मोही । देउ देव फिरि सो फलु योही

दो०—रचिपचि कोटिक उटिलपन, कीन्हेसि कपट प्रयोधु
कहेसि कथा सत सवति कै, जेहि विधि बाढ विरोधु^१ ॥

भावी वस प्रतीति उर आई । पूँछि रानि निज सपथ दिवा
का पृछहु तुम्ह अचहु न जाना । निज हित-अनहित पसु पहिचान
भयेउ पाग^२ दिनु सजत समाजू। तुम्ह पाई मुधि मोहि सन आ
साइअ पहिरिअ राज तुम्हारें । सत्य कहे नहि दोषु हमार
जौ असत्य कह्यु कहव बनाई । तौ त्रिधि देइहि हमहि मजाई^३

१ रेरी २ सूर्य ३ पालन करने वाला ४ राक्ष ५ (जड) ६ रक्षा
७ उपायरूपी सुन्दर वारि मे (चारा आर-कॉटे आदि लगाना) ८ (सँभार)
९ गहरी, मनक भावो को गूढ रखने वाली १० अवसर ११ आप
कपटमे चतुर, छलिया, १२ (सपत्नी) १३ पड्यम, जाल १४ रेर १५ (१
१० सजा ।

रामहि तिलकु कालि जौं भयेउ । तुम्ह कहँ विपति वीजु^१ त्रिधि वयेउ ॥
रेण मँचाइ कहँ बलभात्री^२ । भामिनि भइहु दूव कइ मारी ॥
जौं सुत सहित करहु सेवकाई । नौ घर रहहु न आन उपाई ॥

दो०—कद्रू विनतहि दीन्ह दुखु, तुम्हहि कोसिला देव ।
भरत वदि-गृह सेइहहिं, लखनु राम के नेव ॥२०॥

केस्य सुना, सुनत कद्रु-धानी । नहि न सकें कद्रु सहमि सुग्रानी ॥
तनुपसेउ कदली जिमिकाँपी । कुमरी दसन जीभ तव चाँपी^३ ॥
कहिकहि कोटिक कपट-कहानी । वीरज परहु प्रबोधिमि रानी ॥

कोन्हिम कठिन पडाइ कुपाट^४ । जिमिननव फिर उकठि कु काट^५ ॥
फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली । वकिहि^६ मराइइ मानि मराली^७ ॥
सुनु मपरा वात फुरि तोरी । नहिनि आँसिनित फरकहि मोरी ॥

निन प्रति देखौं राति कु-सपने । कटौ न तोहि मोह वन अपने ॥
काह करउँ सखि सूध सुभाऊ । दाहिन ग्राम^८ न जानउँ काऊ ॥
दो०—अपने चलत न प्राजु लागि, अनभल काहुक मीन्ह ।

कोहि अघ एकहि वार मोहि, देव दुमह दुख दीन्ह ॥२१॥
नेहर^९ जनमु भरव^{१०} वरु जाई । जियतन करत्रि सवति सेनकाई ॥
अग्विस दैउ जिआप्रत जाही । मरनु नीक तेहि जीव न चाही ॥

१ कद्रू और विजिता नामा वरुण मुनि की दो स्त्रियों वा, सर्पों का
माता का नाम कद्रू और पक्षियों की माता का नाम विजिता वा । एक
निन कद्रू ने विजिता से मूर्य के चोटे की पूँउ का रंग पूछा—कैसे है ?
उसने कहा तोरा है । कद्रू ने कहा काला है । इस क्षण में निश्चय हुआ
कि चलकर देवों और जिसकी जान झूरी हो वा मारी बनकर रहे । कद्रू
को विजिता के लिये घोंटों की पूछ म सर्प जा लिपट । पूँउ माली दिखाई
दने लगी । जिससे विजिता अहित हो उसकी दामी होकर रहने लगी ।

१ दुग्ध का धीज २ प्रतिज्ञा पूर्वक ३ (तायत्र) सहायक ४ डरी
५ पसीना जाया ६ कले का पेट ७ दाबी ८ तुरे पाठ ९ उकटा हुआ, सूखा
१० बट्टा ११ पगुली १२ हमनी १३ मित्र, भूमि १४ पीहर १५ विताऊँगी ।

दीन-वचन कह बहु-विधि रानी । सुनि कुवरी तिय-माया ठानी ॥
 अस कस कहहु मानि मन ऊना १ । सुखु सोहागु तुम्ह कहँ दिन दूना ॥
 जेहि राउर श्रुति अनभल ताका । सो पाइहि एहु फलु परिपाका २ ॥
 जबते कुमत सुना मैं स्वामिनि । भूप न वासर नींदन जामिनि ३ ॥
 पूछेऊँ गुनिन्ह ४ रेग तिन्ह राँची । भरत भुआल होहि एहु साँची ॥
 भामिनि करहु त कहउँ उपाऊ । हैं तुम्हरी सेवा बस राऊ ॥

दो०—पराँउँ कूप तुम्र वचन लागि, सकौँ पूत ५ पति त्यागि ।

कहसि मोर दुग्गु देगि बड, कसन करव हित लागि ॥ २० ॥

कुवरी करि कुवली कैकेई । कपट-छुरी उर-पाहन टेई ॥
 लखइ न रानि निकट दुग्गु कैसे । चरइ हरित-नृन बलि पम्पु जैसे ६ ॥
 सुनत बात मृदु अन्त कठोरी । देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥
 कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं । स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं ॥
 दुइ बरदानाँ भूप मन याती ७ । माँगहु आजु जुडावहु छाती ॥
 सुतहिं राजु रामहि वननासू । देहु, लेहु, सब सवति हुलासू ८ ॥

। इन्द्र की सहायता के लिये राजा दशरथ एकवार बैकेयी को साथ ले देवों में युद्ध करने गये । युद्ध में रथ की धुरी टूट गई । कैकेयी ने अपने हाथ के सहारे से रथ को ज्यों का त्यों पड़ा रक्खा । जब राजा विजय पाकर रथ से उतरे और यह हाल देखा तब प्रसन्न होकर रानी से कहने लगे कि तेरी मदद से जीत हुई है, तू बर माँग । बैकेयी ने कहा मेरा यह बर आप पर उधार रहा, जब चाहूँगी तब माँग लूँगी ।

एक बार राजा दशरथ के विस्फोटक रोग हुआ । यह कैकेयी के प्रयत्न से अच्छा हो गया था । इस पर राजा ने प्रसन्न होकर बरदान देने को कहा । बैकेयी ने उस बरदान को भी याती रूप रत्न दिया । इस प्रकार दो बरदान हुए ।

१ हिरास होकर २ परिपाक, भोग ३ (यामिनि) रात्रि ४ ज्योतिषियों को ५ पुत्र । छरूपक कर्मधारय समास, रूपकालकार ६ बलि होने वाले पशु को हरी हरी घास आदि पदार्थ दिये जाते हैं, वह खुश होकर खाता है मगर आगे के दुखों का उसे जरा भी ज्ञान नहीं ७ धरोहर ८ परिवृत्त अस्कार-जहाँ एक वस्तु को देकर दूसरी ली जाय ।

पति राम-सपथ जब करई । तव माँगेहु जेहि वचनु न टरई ॥
इ अकाजु आजु निसि वीते । वचनु मोर प्रिय मानहु जीते ॥

दो०—उड कुवातु करि पातिकिनि, कहेसि कोप-गृह जाहु ।

काज सगँरेहु सजग^१सबु, महमा^२जनि पतिआहु ॥२३॥

परिहि रानि प्रान प्रिय जानी । वार वार बडि बुद्धि बरानी ॥

तोहि सम हितु न मोर ससारा । बहे जात कइ भडसि अधारु^३ ॥

तौ निधि पुरव मनोरथु काली । करौ तोहि चरु पूतरि^४ आली ॥

हु विधि चेरिहि आदरु देई । कोप भवन गपनी कैकेई ॥

निपति वीजु वरपारितु चेरी । मुँड भड कुमति कैकेई केरी ॥

हाइ कपट-जलु अकुर जामा । वर दोउदल^५दुरा फल परिनामा ॥

कोप समाजु साजि सबु सोई । राजु करत निजकुमतिनिगोई^६ ॥

उर नगर कोलाहलु होई । यहु कुचाल कछु जान न कोई ॥

दो०—प्रमुदित पुर नर-नारि सज, मजहिं सु भगलचार ।

एक प्रविसहि एक निरगमहिं^७ भीर भूप-दरवार ॥२४॥

पाल-सरसा सुनि हिय हरपार्हीं । मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं ॥

समु प्रादरहिं प्रेम पहिचानी । पूँछहिं कुसल जेम मृदु-जानी ॥

फेरहिं भवन प्रिय आयसु पाई । करत परमपर राम बडाई ॥

को रघुवीर-सरिस^८ ससारा । सीलु-सनेहु निनाहनि-हारा ॥

जेहि जेहि जोनि करम बस भ्रमहीं । तहँ तहँ ईसु देउ यह हमहीं ॥

सेनक हम स्वामी मियनाहू । होउ नात एहु थोर निनाहू ॥

अस अभिलापु नगर सब काहू । केऊय-सुता हृदय अतिदाहू ॥

को न कु-सगति पाइ नसाई । रहै न नीच मते चतुराई ॥

१ चैतन्य २ शीघ्र ३ सहारा ४ भोग्य की पुताली ५ निम अभेद रूपक
अलंकार ५ 'मति ही कुस्ति' कर्मधारय, बहुव्रीहि में 'कुस्ति' ई मति
जिमकी' पेमा विग्रह होगा ६ जमा, निक्का ७ वरदान ८ पत्ते ९ नष्ट
की १० नाते ई ११ सदन ।

दो०—सौंभ समय सानढ नृप, गाण्ड कैकेई गेह ।

गवन निठुरता निकट किय, जनु धरि देह मनेह ॥२॥
कोप भवन सुनि मकुचेउ राऊ । भयवर्म अग्रदुइ परईन पा
सुर-पति बसइ बाँह-बल जाके । नर-पति सकल रहहिं रुख तां
सो सुनि तिय-रिस गयेउ सुरगार्ड । देखतु काम प्रताप बडाइ ॥
मूल कुलिम प्रसि अंगवनिहारे । ते रति-नाथ सुमन-सर भारे
सभय नरेसु प्रिया पहि गयेउ । देखि दमा दुख दारुन भयेउ ।
भूमि-सयन पट्ट मोट पुराना । दिग डारि तन भूपन नाना ।
कुमतिहि कमि कुपेता फारी । अन्-अहिवातु मूच जनु भारी ॥
जाइ निकट नपु कह मृदु-बानी । प्रान प्रिया केहि हेतु रिमानी ॥
छ०—केहि हेतु रानि रिसानि, परसत पानि पतिहि निवारई ॥

१ । मानहु सरोप-भुअग-भामिनि २ प्रियम भाति निहारई ।

दोउ वासना ४ रसना ५ दसन वर ६ मरम ठाहरु ७ देखई,

तुलसी नृपति भमितव्यताप्रस काम-कौतुक लेराई ॥

सो०—बार बार कह राउ, सुमुखि सुलोचनि पिक-वचनि ॥
कारन मोहि सुनाउ, गज-गामिनि निज कोप कर ॥२६॥
अनहित १ २ तोर प्रिया केइ कीन्हा । केहि दुइ-सिर केहि जम चह लीन
कहु केहि रकहि करउ नरेसू । कहु केहि नृपहि निकारउ देसू
सकउ तोर अरि प्रमरउ भारी । काह कीट वपुरे नर-नारी
जानसि मोर सुभाउ वरोरू ३ । मन तव आनन चढ चकोरू ४ ॥

छमानो स्नेह शगर धारण पर कटागता क पाम गया
(उत्प्रेक्षाकार) १ आगे २ सदनगते ३ तसद्वे ४ फूलों के बाण पट
दृष्ट [माना भारी रडापे बी सूचना ६ ६ हाथ छूने से रोकती
७ सौं पति ८ इच्छा ९ जीभ १० वरदान ११ मर्मस्थान १२ ६
१३ सुन्दर जघा वाली १ कवि ने यहाँ बंकेयो हो भुजगिन, क्रोध पूर्ण
को सर्पिण की भयानक दृष्टि, चामनाओं हो जीभ, चन्दानों को द
माना है अत उत्प्रेक्षा ने रूपमालमार है ।

प्रिया, प्रान सुत सरवसु मोरे । परिजन^१ प्रजा मकल वस तोरें ॥
जौं कन्धु कहहुँ कपटि करि तोहीं । भामिनि राम-सपथ मत मोहीं ॥
निहँसि माँगु मन भावति घाता । भूपन सजहि मनोहर गाता ॥
घरी कपरी^२ समुक्ति जिय देखू । नेगि प्रिया परिहरहि कुपेखू ॥

दो०—यह मुनि मन गुनि सपथ बडि, निहँसि उठी मति मड^३ ।

! भूपन सजति तिलोकि मृगु, मनहुँ किरातिनि फड ॥२७॥

पुनि कह राउ मुद्दद जिअ जानी । प्रेम पुलकि मृदु मजुल जानी ॥
भामिनि भयेउ तोर मनभाजा । घरपर नगर अनद नधावा ॥
रामहि देखेँ कालि जुवगजू । मजहि सु लोचनि मगल साजू ॥
दलकि^४ उठेउ मुनि हृदय कठोरु । जनु छुइ गयेउ पाऊ वरतोरु ॥
पेमिउ पीर विहँसि तेइ गोई । चोर नारि जिमि प्रगटि न रोई ॥
लखौ न भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल मनि^५ गुरु पढाई ॥
जद्यपि नीति निपुन^६ नरनाहू । नारि चरित जलनिधि अजगाहू ॥
कपट सनेहु बढाइ बहोरी । बोली विहँसि नयन मुहुँ सोरी ॥

दो०—माँगु माँगु पै कहहु पिच, कबहुँ न देहु न लेहु ॥

देन कहेहु परदान दुइ, तेउ पावत सनेहु ॥२८॥

जानेउँ सरसु राउ हँसि कहई । तुम्हहिँ कोहान^७ परमप्रिय अहई ॥
थाती राखि न माँगेहु काऊ । विस्मरि गयेउ^८ मोहि भोर सुभाऊ ॥
भूठेहु हमहि दोषु जनि देहू । दुइ कै चारि माँगि मकु लेहू ॥
रघुकुल-नीति मदा चलि आई । जान जाहु वरु, वचनु न जाई ॥
नहिँ असत्य मम पातक पुँजा^९ । गिरि मम होहिँ कि कोटिक गु जा ॥
सत्य मूल सब सुकृत सोहाए । वेद पुरान विदित मुनि गाए ॥

१ कुटुम्ब २ समय, धुसमय ३ गोटी तुद्धिवाली ४ चौंऊपडी ५ बाल-
तोड ६ छिपाती ७ करोडों मोट लोगो के सरनारा के गुरु । ८ नीति में
निपुण (मसमी तत्पु०) ९ अथाह समुद्र १० रूटना ११ याद नहीं रहा
१२ पाप का समूह ।

तेहि पर राम-सपथ करि आई । सुकृत-सनेह अवधि^१ रघुराई ॥
वात दृढाइ कुमति^२ हँसि बोली । कुमत कुविहग कुलह^३ जनुजोली ॥

दो०—भूप मनोरथ सुभग वनु, सुख सु-विहग समाजु^४ ।

भिल्लिन जनु छाँड़न-चहति वचन भयकर वाजु ॥२९॥

सुनहु प्रानपति भावत जीका । देहु एक वर भरतहि टीका ॥
मागउँ दूमर वर कर जोरी । पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥
तापस वेप विसेषि उदासी । चौदह वरसि रामु वनवासी ॥
सुनिमृदु-वचन भूप हिय मोजू । मसि-कर^५ छुअतविकलजिमिको^६ ॥
गयेउ सहमिं नहिं कछु कहि आजा । जनु मचान^७ वन भूपटेउलावा^८ ॥
दिवरन^९ भयेउ निपट नरपालू । दामिनि^{१०} हनेहु/मनहुँ तरतालू ॥
माये हाथ मू वि दोउ लोचन । तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन ॥
मोर मनोरथ सुरतरु फूला^{११} । फरत करिनि^{१२} जिमिहतेउसमूला ॥
अवध उजारि कीन्हि कैकेई । दीन्हिसि अचल विपति कैनेई^{१३} ॥

दो०—कपने अवसर का भयेउ, गएउँ नारि विस्वास । X^१

जोग सिद्धि फल समय जिमि, जतिहि^{१४} अविद्यानास ॥३०॥

एहिनिधि राउमनहिंमनभाँखा^{१५} । देखिकुभाँतिकुमतिमनुमाँखा^{१६} ॥
भरतु कि राउर पूत न होही । आनेहु मोल बेसाहि^{१७} कि मोही ॥
जो सुनि सरु अस लागु तुम्हारे । काहे न बोलेहु वचनु सँभारे ॥
देहु उतरु असु करहु कि नाही । सत्य सध^{१८} तुम्ह रघुकुलमाहीं ॥
देन कहेहु अव जनि बरु देहू । तजहु सत्य जग अपजसु लेहू ॥
सत्य सराहि कहेहु बरु देना । जानेहु लेशहि माँगि चबेना ॥

१ सीमा २ (बहुब्रीहि में) कैकेयी ३ टोपी ४ सुखरूपी सुन्दर
पक्षियों का समूह ५ चन्द्रकिरण ६ चम्परा-चकरी ७ दाज ८ घटेर ९
मलीन १० व-पवृक्ष के फूल ११ हथिनो १२ नीव १३ योगी १४ क्षीरे
१५ काध १६ गरीदा १७ सत्य प्रतिज्ञ * रूप-भावकर † (व्यग का भाव) ।

शिविर्दधीचि । बलिजो कङ्कुभापा । तनुधनु तजेउ वचनपनुराखा ॥
अति कटु वचन कहित कैकेई । मानहुँ लोन जरे पर देई ॥

दो०—धरम-धुरधर^२ धीर धरि नयन उघारे राय ।

सिरधुनिलीन्हि उसास असि मारेमि मोहि कुठाय^३ ॥३१॥

१ जले पर लौन लगाना दु ख में दु ख बढ़ाना (लोकोक्ति) २ धरम धुर (धरम की धुर) प० तत्पु० धरम-धुरधर, धरम की धुरी धारण की है निसने (बहुव्रीहि) ३ कुठौर ।

६१—राजा उशीनर का जेठा पुत्र शिवि बटा गनी था उसकी राजधानी कन्धार के पास थी । एक दिन ब्रह्मा उसके दाग की परीक्षा करन को ब्राह्मण बनकर आये । राजा से उसका पुत्र का माँस उसी के हाथ से पका हुआ माँगा । राजा ने ऐसा ही किया । अन्त में राजा ही से खाने को कहा । राजा इस पर भी तुल ग्या । तब ब्रह्मा अपने असली रूप में होगये और राजा की दान शीलता से बड़े प्रसन्न हुए ।

२—राजा शिवि को ६२ यज्ञों में सफल हुआ देखकर इन्द्र व्याकुल हुआ । उसकी यज्ञ विध्वंस करने का स्वयं याज्ञ बनकर अग्नि को क्यूतर बनाया और उसके पीछे दौड़ा । क्यूतर ने यज्ञ की वेदी पर बैठ हुए राणाकी शरण ली । राजा शरणागत को बचाने के लिये अपने शरीर का माँस काट कर क्यूतर के बराबर तोलने लगा । जग पूरा नष्ट हुआ तो अपना गर्दन काटने को तैयार हुआ । तब भगवान् ने प्रगट होकर उस अपने धाम भेज दिया ।

३—दधीच ऋषि ने वृत्रासुर को मारने के लिये अपनी जाँघ की टुड़ी इन्द्र को दे ली, जिससे उन्हें प्राण त्याग करना पडा ।

इजब राजा बलि त्रिलोकी का स्वामी हुआ तब इद्र घबरा कर विष्णु के पास गये, उन्होंने धीरज दे राज्य दिलाने का वायदा किया और यामन रूप धर बलि से जाकर ३३ पैद धरती माँगी । राजा ने हाकी दाग दिया, तब ३ चरण में ब्रह्मलोक तक गाय कर आधे चरण पृथ्वी माँगी, राजा ने कहा "मेरी पीठ नाप लीनिये ।" भगवान् उससे प्रसन्न हुए और इद्र की कामना पूरी की ।

आगे दीख जरति रिस भारी । मनहु रोप तरवारि उघारी ।
 मृठि^१ कुबुद्धि वार निठुराई^२ । धरी कूबरी मान बनाई^३
 लखी महीप कराल कठोरा । सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा
 वाले राउ कठिन कर छाती । वानी सविनय तासु सोहाती^४
 प्रियावचन कस कहमि कुभाती । भीरु प्रतीति^५ प्रीति करि हाँती^६
 मोरें भरतु रामु दुइ आँगी । सत्य कहउँ करि सकर साखी^७
 अचसि दूत में पठउय प्राता । ऐहहि वेगि सुनत दोउ भ्राता^८
 सुदिन सोधि सनु साजु मजाई । देउँ भरत कहँ राजु बजाई^९ ॥

दो०—लोभु न रामहि राजु कर, बहुत भरत पर प्रीति ।

मैं बड छोट विचारि जिय, करत रहेउँ नृपनीति^{१०} ॥३॥

राम-सपथ सत कहउँ सुभाऊ । राममातु कछु कहैउ न काहू ॥
 मै सबु कीन्ह तोहि विनु पूछे । तेहि ते परेउ मनोरथ छूछे^{११} ॥
 रिस परिहरु अब मगल साजू । कछु दिन गये भरत जुवराजू ॥
 एकहि बात मोहि दखु लागा । वर दूसर असमजस^{१२} माँगा ॥
 अजहूँ हृदय जरत तेहि आँचा । रिस परिहाम कि साँचहु साँचा ॥
 बहु तजि रोप राम अपराधू । सबु कोउ कहै रामु सुठि^{१३} साधू ॥
 तुहँ सराहमि करमि मनेहू । अब सुनि मोहि भयेउ सदेहू ॥
 जामु सुभाउ अरिहि-अनुकूला । सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला ॥

दो०—प्रिया हाम^{१४} रिस परिहरहूँ, माँगु विचारि त्रिनेकु ।

जेहि देखौ अब नयन भरि, भरत-राज-अभिपेकु ॥३॥

जिअइ मीन वरु वारि त्रिहीना । मनि विनु फनिकु जिअइ दुख दीना ॥

१ (मुष्टिक) २ कठोरता ३ पेनी की ४ भयकर ५ अच्छी लग
 वाली ६ विश्वास, ७ नष्ट करके ८ साक्षी, गवाही ९ धूम धाम के साथ
 १० राजनीति ११ गाली १२ चिन्ता में भरा हुआ १३ अ

कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं । जीवन मोर राम विनु नाहीं ॥
 समुक्ति देखु जिय प्रिया प्रवीना । जीवन राम दरम आ गीना ॥
 सुनिमृदुनचनकुमतिअसि जरई । मनहुँ अनल^१आहुति घृत परई ॥
 कहै करहु किन कोटि उपाया । इहाँ न लागिहि राउरि-माया ॥
 देहु कि लेहु अजसु करि नाहीं । मोहि न बहुत प्रपच^२सोहाहीं ॥
 रामु साधु तुम्ह साधु मन्याने । राममातु भलि^३सज पहिचाने ॥
 जस कौंसिला मोर भल ताका^४ । तस फलुउन्हहि देउँ करि साका ॥

दो०—होत प्रातु मुनिवेष धरि, जौ न रामु बन जाहि ।

मोर मरनु राउर अजसु, नृप समुक्तिअ मन माहिं ॥३४॥

अमि कहि कुटिल भई उठि ठाढी । मानहु रोप तरगिनि^१वाढी ॥
 पाप-पहार प्रगट भै सोई । भरी क्रोध जल जाइ न जोई^२॥
 दोउ वर कूल^३कठिन हठ धारा । भँवर क्रुरी वचन प्रचारा ॥
 ढाहति^४भूपरूप तरुमूला । चली विपति वारिधि अनुकूला ॥
 लरणी नरेस वात सब साँची । तियमिसु मीचु^५सीस परनाची ॥
 गहि पद विनय कीन्हि वैठारी । जनि दिनकर-कुलहोमि कुठारी^६ ॥
 माँगु माथ अरवही देउँ तोही । रामविरह जनि मारसि मोही ॥
 रायु राम कहँ जेहि तेहि भाँती । नाहित जरिहि^७जनमिभरिछाती ॥

दोहा—देखी व्यापि^१असावि नृपु, परेउ धरनि बुनि माथ ।

कहत परम आरत वचन राम राम रघुनाथ ॥३५॥

व्याकुल राउसिथिल सज गाता । करनि^१कल्प तरु मनहुँनिपाता^१

१ अग्नि २ होम की वस्तु जा मंत्र के साथ अग्नि में छोड़ी जाती है
 ३ माया* वञ्चोति अलंकार — (जहाँ निदा में स्तुति और स्तुति में निदा
 हो) ४ देगा है ५ वीरता का काम । ६ क्रोध की नदी ७ देखने से
 भय होना है ८ किनारा ९ गिराती है १० मृत्यु ११ कुल्हाड़ी १२ दुःख
 देती रहँगी १३ रोग (असाध्य) १४ हथिनी १५ नष्ट किया ।

। यहाँ कैकेयी का रोप नदी (की तीव्र धारा) है जो पाप रूप पयत

कटु सूख मुख आव न घानी । जनु पाठीनु^१ दीनु विनु पानी ॥
 पुनि कह कटु कठोर कैकेई । मनहु घाय महुँ माहुर^२ देई ॥
 जौ अन्तहु अस करतवु रहेऊ । माँगुमाँगु तुम्ह केहिवल करेऊ ॥
 दुइ कि होइ एक समय भुआला । हँसव ठाठाइ फुलाइव गाला ॥
 दानि कहाउव अरु कृपनाई । होइ कि छेम-कुसल रौताई^३ ॥
 छाँडहु वचन कि धीरज धरहू । जनि अत्रजा जिमि करुना करहू ॥
 तनु तिय तनय धामु धनु धरनी । सत्य-मध^४ कहँ वृनसमवरनी ॥
 दोहा—मरमवचन^५ सुनि राउ कह कहु कछु दोष न तोर ।

लागेउ तोहि पिसाच जिमि कालु कहावत मोर ॥२६॥
 चहत न भरत भूपपद भोरें । विधिवसकुमति^६ बसीजियतोरें ॥
 सो सबु मोर पाप परिनामू । भयेउकुडाहर^७ जेहि विधि बामू ॥
 सुवसवसिहि फिरि अवध सुहाई । सब गुनधाम राम प्रभुताई ॥
 करिहहिं भाइ सकल सेवकाई । होइहि तिहुँ पुर राम बडाई ॥
 तोर कलकु मोर पछिताऊ । मुयेहु न मिटिहि न जाइहि काऊ ॥
 अव तोहि नीक लाग करु सोई । लोचन-ओट वैठु मुँहु गोई ॥
 जय लागि जियउँ कहउँ कर जोरी । तब लागि जनि कछु रुहसिवहोरी
 फिर पछितैहसि अत अभागी । मारसि गाइ नाहरू^८ लागी ॥
 दोहा—परेउ राउ कहि कोटि विधि, काहे करसि निदानु^९ ।

कपटसयानि न कहति कछु, जागत मनहुँ मसानु^{१०} ॥३७॥
 राम राम रट विकल भुआलू । जनु विनु पखबिहग^{११} वेहालू^{१२}

से निकली है, क्रोधरूप जल मे भरी हुई है, वर दोनों किनारे हैं, हठ धारा है, कुवडी की शिक्षा भँवर है, राजा या जो रूप है वही किनारे का वृक्ष है जो धार से बाढ़ भाने पर गिरता है और जो विपत्ति रूप समुद्र की ओर यह रही है । रूपकालमार ।

१ मठली २ विप ३ शूरता ४ सत्य प्रतिज्ञा वाले ५ हृदय को बंधने वाले । ६ बुरी मति (कर्मधारय) ७ वृ समय ८ नाहर या तात ९ अन्त, सर्वनाम १० तांत्रिक प्रयोग है—मसान जगते समय मौन धारण किया जाता है ११ पत्नी १२ व्याकुल ।

हृदय मनाव भोरु जनि होई । रामहिं जाइ कहै जनि कोई ॥
 उदय करहु जनि रवि रघुकुलगुरु । अवध त्रिलोकि सूल होइहि उर ॥
 भूप्रीति कैकेई कठिनाई । उभय अवधि^१ विधि रची वनाई ॥
 विलपत नृपहि भयेउ भिनुसारा^२ । वीना-वेनु सरप धुनि द्वारा ॥
 पढहिं भाट गुन गावहिं गायक^३ । सुनत नृपहि जनु लागहिं सायक^४ ॥
 मगल सकल सुहाहिं न कैसैं । सहगामिनिहि^५ विभूपन जैसैं ॥
 तेहि निस नींद परी नहि काहू । राम दरस-लालसा उछाहू ॥
 दो०—द्वार भीर सेवक सचिव, कहहिं उदित रवि देव ।

जागे अजहुँ न अग्रधपति, कारनु कवनु निमेरि ॥ ३८ ॥
 पछिले पहर भूपु नित जागा । आजु हमहि बड अचरजु लागा ।
 जाहु सुमन जगावहु जाई । कीजिय काज रजायसु^६ पाई ॥
 गए सुमत्रु तव राउर पाहीं । देखि भयावन जात डराहीं ॥
 धाइ राजा जनु जाइ न हेरा । मानहुँ विपद विपाद बसेरा^७ ॥
 पूँछे कोउ न उतर देई । गए जेहि भवन भूप कैकेई ॥
 कहि जयजीव बैठ सिर नाई । देखि भूपगति गयेउ सुराई ॥
 मोच निकल त्रिरन^८ महि परेऊ । मानहुँ कमल मूल परिहरेऊ^९ ॥
 सचिव मभीत सकै नहिं पूँछी । बोली असुभ भरी सुभ-छूँछी^{१०} ॥
 दो०—परी न राजहि नींद निसि, हेतु जान जगदीसु ।

रामु रामु रटि भोरु किय, कहै न मरमु^{११} महीसु ॥ ३९ ॥
 आनहु रामहि वेगि बोलाई । समाचार तव पूँछेहु आई ॥
 चलेउ सुमत्रु रायरुम जानी । लसी कुचालि कीन्दि कछु रानी ॥
 सोच विकल मग परै न पाऊ । रामहिं बोलि कहहिं का राऊ ॥
 उर धरि धीरजु गयेउ दुआरें । पूँछहिं सकल देखि मनु-भारे ॥

१ सीमा २ सवेरा ३ गाने वाले ४ तार ५ सती को (सती स्त्री को पति के साथ जलने से पहले पख, भूषण पहिनने पद्धत थे) ६ भाशा ७ निवास ८ शरीर वाला पड़ा हुआ है । ९ जड़ उगट गई हो । १० भलाइ रहित ११ भेद ।

समाधान करि^१ सो सबही का । गयेउ जहाँ दिन-कर-कुल-दीका^२ ॥
 राम सुमत्रहि आगत देसा । आठरू कीन्ह पितासम लेसा^३ ॥
 निरखि वदनु कहि भूप रजाई । रघुकुल दीपहि^४ चलेउ लेसाई ॥
 राम कुभाँति^५ सचिय सँग जाहा । देखि लोग जहँ तहँ बिलसाहा ॥

दो०—जाइ देखि रघु-व्रम-मनि, नरपति निपट। कुसाजु ।

सहमि परेउ लखि मिनिनिहि मनहु वृद्ध गजगजु । ४०

सूयहिँ अपर जरै सब अगू । मनहुँ दीन मनिहीन सुअगू ॥
 मरुस^६ समीप देख कैकेई । मानहुँ मीचु घरी गनि लेई ॥
 कर्नामय मृद राम सुभाऊ । प्रथम दीख दुस सुना न काहू ॥
 तदपि धीर धरि समउ विचारी । पूँछी मधुरवचन महतारी ॥
 माहि ऋहु भातु तात-दुस-कारन । करिय जतन जेहि होइ निवारन^७ ॥
 सुनहु राम सब कारन एहू । राजहि तुम्ह पर बहुत मनेहू ॥
 देन कहेउ मोहि दुइ वरदाना । माँगेउँ जो कछु मोहिँ सुहाना ॥
 मो सुनि भयेउ भूप उर सोचू । छाँडि न सकहिँ तुम्हार सँकोचू ॥

दो०—सुत-मनेह इत वचनु उत, सकट परेउ नरेसु ।

सकटु तौ आयसु बरहु सिर, भेटहु कठिन कलेसु ॥ ४१ ॥

निधरक^८ बैठि कहै ऋदु बानी । सुनत कठिनता अति अकुलानी ॥
 जीभ कमान, वचन सर नाना । मनहुँ महिँ मृदु-लच्छ^९ समाना ॥
 जनु कठोरपनु धरें सरीरू । सिरै वनुपविद्या बर-वीरू^{१०} ॥
 सबु प्रसगु रघुपतिहि सुनाई । बैठि मनहुँ तनु धरि निदुराई ॥
 मन मुसकाइ भानु-कुल भानू^{११} । रामु सहज-प्राणद निधानू ॥

१ समझाकर २ सूर्यवंशियो में श्रेष्ठ (सप्त तत्पु०) ३ पिता के
 समान समझकर ४ रघुकुल के दीपक ५ दुरी तरह ६ प्रोचित ७ रोक
 ८ निशक ९ कोमल निशाना १० श्रेष्ठवली ११ भानुकुल के भानु,
 अर्थात् भानुकुल में भानु ।

❀ रूपकालकार गर्भित उक्तेषा ।

बोले वचन विगत सत्र दूपन^१ । मृदु मजुल जनु बाग-निभूपन^२ ॥
 सुनु जननी सोई सुत बड भागी । जो पितु-मातु-वचन अनुरागी ॥
 तनय मातु पितु-तोपनि हारा^३ । दुर्लभ जननि सकल ससारा ॥

दोहा—मुनिगन मिलनु विसेपि वन, सत्रहि भाँति हित मोर ।

तेहि महुँ पितु आयसु बहुरि, समत^४ जननी तोर ॥४२॥

भरत प्रानप्रिय पावहिं राजू । त्रिधिसब विधि मोहि सन्मुख आजू ॥
 जौ न जाउँ वन ऐसेहु काजा । प्रथम गनिअ मोहि मूढ समाजा ॥
 सेगहि अरहुँ^५ कल्पतरु त्यागी । परिहरि अमृतु लेहिं विपु माँगी ॥
 तेउ न पाइ अस समउ चुकाही । देखु विचारि मातु मन माही ॥
 अत्र एकु दुख मोहि जिसेपी । निपट बिकल नरनायकु देखी ॥
 योरिहि बात पितहि दुख भारी । होति प्रतीति न मोहिं महतारी ॥
 राउ धीरु गुन उदधि अगाधू । भा मोहि तें कछु बड अपराधू ॥
 जाते मोहि न कहत कछु राऊ । मोरि सपथ तोहि कह सतिभाऊ ॥

दोहा—सहज सरल रघुवर वचन, कुमति कुटिल करि जान ।

चलइ जौं क जल नरुगति, जद्यपि सलिल समान ॥४३॥

रहसी^६ रानि रामरुखपाई । बोली कपटसनेह जनाई ॥
 सपथ तुम्हार, भरत कै आना । हेतु न दूसर मै कछु जाना ॥
 तुम्ह अपराधु जोग नहिं ताता । जननी-जनक-वधु-सुर-दाता ॥
 राम सत्य सनु जो कछु कहहू । तुम्ह पितु मातु-वचन-रत अहहू ॥
 पितहिं बुझाइ कहहु, बलि सोई । चौथेपन जेहिं अजसु न होई ॥
 तुम्ह सम सुअन सुकृत^७ जेहि दीन्हे । उचित न तासु निरादरु कीन्हे ॥

१ 'सत्र दूपण-विगत, मृदु मजुल' यह सत्र वचन विशेष्य के विशेषण हैं ।

२ सारम्भर्ता के भूषणरूप ३ प्रसन्न करने वाला ४ समर्थन की हुई ५ सीधा

६ मूर्खों का समूह ७ भण्डी का पैठ ८ प्रसन्न हुई । ९ पुण्य (कर्ता कारक म)

जिहि सुकृत से उमका निरादर आदि २ ।

लागहि कुमुद वचन सुभ कैसे । मगह^१ गयादिक तोरथ जैसे ॥
रामहि मातुवचन सब भाए । जिमि सुरसरिगत सलिल सुहाए ॥

दोहा—गइ मुरछा, रामहि सुमिरि, नृप फिरि करवट लीन्ह ।

सचिप राम आगमन कहि, विनय समयसम कीन्ह ॥४४॥

अवनिप^२ अकनि^३ रामु पगु धारे । धरि धीरजु तव नयन उधारे ॥
सचिप सँभारि राउ वैठारे । चरनु परत नृप रामु निहारे ॥
लिये मनेहत्रिकल उर लाई । गै मनि मनहुँ फनिक^४ फिरि पाई ॥
रामहिं चितै रहंड नरनाहू । चला विलोचन वारि प्रबाहू ॥
सोकविषस कछु कहै न पाग^५ । हृदय लगावत वारहि बारा ॥
विधिहि मनाय राउ मन माहीं । जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं ॥
सुमिर महेसहि कहै निहोरी । विनती सुनहु सदासिव मोरी ॥
आसुतोप^६ तुम्ह अवढर^७ दानी । आरति हरहु दीन जनु जानी ॥

दोहा—तुम प्रेरक^८ सबके हृदय, सो मति रामहिं देहु ।

वचन मोर तजि रहहिं घर, परिहरि सील सनेहु ॥४५॥

अजसु होउ जग सुजसु नसाऊँ । नरक परउँ बरु सुरपुर जाऊँ ॥
सब दरु दुमह सहावउ मोहीं । लोचन ओट रामु जनि होहीं ॥
अस मन गुनै राउ नहि बोला । पीपर-पात-सरिम^९ मनु डोला ॥
रघुपति पितहि प्रेम-वस जानी । पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी ॥
देस काल अवसर अनुसारी । बोले वचन विनीत विचारी ॥
तात कहँ कछु करँ ढिठाई । अनुचित छमव जानि लरिकाई ॥
अति-लघु घात लागि दूर पावा । काहु न मोहिं कहि प्रथम जनाना ॥
देरि गोमाँइहि पूछेँ माता । सुनि प्रसगु^{१०} भण सीतल गाता ॥

१ मगध यह विहार प्रान्त में एक देश है, इसमें मगों से पुण्य क्षीण होकर नरवामी होता है । २ (अग्नि + प,) राजा ३ सुना ४ साँव की चोटी हुई मणि ५ सरुवा जिया के अर्थ में ६ शीघ्र मनुष्य होने वाले, ७ अहट ८ प्रेरण करने वाले ९ टाल ।

दो०—मगलममय सनेहव्रम, सोच परिहरिअ^१ तात ।

आयमु टेडअ हरपि हिय, कहि पुलके प्रमुगात ॥४६॥

धन्य जनमु जगतीनल^२ तासू । पिनहि प्रमोडु चरित सुनि जासू ॥
 चारि पदारथ करतल ताके । प्रिय पितुमातु प्रानसम जाके ॥
 आयुस पालि जनमफनु पाई । तेहौ वेगिहि होउ रजाई^३ ॥
 निदा मातुमन आनउँ माँगी । चलिहौ वनहिं बहुरि पग लागी ॥
 अस कहि रामु गगनु तन कीन्हा । भूप सोऊवस उतरु न दीन्हा ॥
 नगर व्यापि गई वात सुतीछी^४ । छुअत चढी जनु मन तन वीछी ॥
 सुनि भए निरुल सरुल नर नारी । बेलि निटप जिभि देयि दवारी^५ ॥
 जो जहँ सुनइ धुनइ सिर सोई । बड निपाद^६ नहिं धीरज होई ॥

दो०—मुख सुर्याहिं लोचन स्रगहि^७, सोकु न हृदय समाइ ।

मनहुँ^८ करुन रस-कटकई, उतरी अवध बजाइ ॥४७॥

मिलेहि माँक निधि वात विगारी । जहँ तहँ देहिं कैकइहि गारी ॥
 एहि पापिनिहि वृष्णि का परेऊ । छाइ भजन पर पापकु धरेऊ ॥
 निज कर नयन काढि चह दीया । डारि सुधा विपु चाहति चीया ॥
 कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । भइ रघुनस-वेनु-वन आगी ॥
 पालय बैठि पेड एहि काटा । मुख महुँ सोऊ ठाटुधरि ठाटा ॥
 मदा रामु एहि प्रानममाना । कारन कवन कुटिलपनु ठाना ॥
 सत्य कहिं कवि नारिसुभाउ । सन विधि अगम अगाध दराऊ ॥
 निज प्रतिनिनु वरुकु गहि जाई । जानि न जाइ नारिगति भाई ॥

दो०—काह न पापकु जाति सक, का न समुद्र समाइ ।

का न करै अगला प्रवल, केहि जग कालु न खाइ ॥४८॥

१ छोड दीजिये २ पृथ्वी पर ३ आज्ञा ४ (तीक्ष्ण) ५ जागि ६ दुःख
 ७ चुचाते हैं । ८ भागो करणा रस का कटक अयोध्या में गाने बाने के साथ
 उतरा (उत्प्रे नालमार) ।

का सुनाइ विधि काह सुनावा । का देखाइ चह काह देखावा ॥
 एक कहहिं भल भूप न कीन्हा । बरु विचारि नहिं कुमतिहि^१ दीन्हा ॥
 जो हठि भयेउ सकल दुख-भाजनु । अत्रला विवस ग्यानु गुनु गा जनु ।
 एक धरम-परमिति^२ पहिचानै । नृपहि दोसु नहिं देहिं सयानै ।
 सेवि-दयीचि-हरिचद^३ कहानी । एक एक सन कहहिं वरानी ।
 एक भरत कर समत^३ कहहीं । एक उदास-भाय सुनि रहहीं ।
 कान मूँदि कर रद^४ गहि जीहा । एक कहहि यह बात अलीहा^५ ॥
 पुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारे । राम भरत कहैं प्राना^६ पियारे ॥

दो०—चढ चुवड बरु अनलकन^१, सुधा होइ विप तूल^२ ।
 सपनेहुँ कबहुँ न करहिं कछु, भरतु रामप्रतिकूल ॥ ४९ ॥

१ (बहुव्रीहि में अर्थ) २ वरम की मर्यादा ३ सलाह से ४ दाँत
 ५ असत्य ६ अग्नि ऋण ७ तुल्य ।

ॐ रघु के बश में राजा हरिदचन्द्र बडा धर्मात्मा हुआ । एक बार वशिष्ठ
 जी ने त्रिश्रामित्र से इसके दान और सत्य को सराहा । उन्होंने परीक्षा करने को
 पूरा राज्य मागा । जत्र उमने दान दिया । तत्र दक्षिणा माँगी । परन्तु उसके
 पास कहीं थी जो देता । यह कहा कि मैं नौकरी करके दूंगा । उन्होंने कहा 'हम
 यहाँ उद्यम भी न करने देंगे । तत्र राजा काशा में त्रिकुने गये । जब त्रिश्रामित्र
 दक्षिणा लेने पहुँचे तत्र राजा ने पुत्र और स्त्री को बेचकर कुछ धन दिया और
 फिर शेष के लिये आने चाटाल की नौकरी की । स्मशान पर कर उगाहना
 स्वीकार कर ऋषि की दक्षिणा चुकाड । कुछ काल में जब इसका पुत्र मर गया
 और उमरी स्त्री लडके को स्मशान पर ले गई तो राजा ने इससे भी कर माँगा ।
 प्रिय करने पर भी न माना । जत्र स्त्री ने दुखी होकर आधा वस्त्र फाडने को
 हाथ किया उसी समय भगवान् ने आकर हाथ रोका और प्रसन्न हुए । पुत्र को
 जिला कर फिर अयोध्या के राज-सिंहासन पर बैठाया और अन्त में सबको मुक्ति दी ।

एक निघातहि दूपनु देहीं । सुधा देखाइ दीन्ह विपु जेही ॥
 सरभरु^१ नगर सोचु सब काह । दुसह गहु उर मिटा उछाहू ॥
 विप्रग्रध कुलमान्य जठेरी^२ । जे प्रिय परम कैरुई केरी ॥
 लगीं देन सिरज सीलु^३ सराही । वचन वानसम लागहि ताही ॥
 भरतु न मोहि प्रिय रामसमाना । मदा कहहु यहु सबु जगु जाना ॥
 करहु राम पर सहजसनेहू । केहि अपराग आजु वनु देहू ॥
 कनहुँ न कियेहु सवति आरेसू^४ । प्रीति प्रतीति जान मवु देसू ॥
 कौसल्या अत्र काह निगारा । तुम्ह जेहि लागि वञ्च पुर पारा ॥

दो०—सीय कि पिय सँगु परिहरिहिं लपनु कि गहिहहिं धाम ।

राजु कि भूँजत भरत पुर नृपु कि जिइहिं निनु राम ॥५०॥

अस निचारि उर छाडहु कोहू । सोरु कलक कोटि जनि होहू ॥
 भरतहिं अवसि देहु जुवराजू । कानन काह राम कर काजू ॥
 नाहिन रामु राज के भरे । धरमधुरान विषयरस रूरे ॥
 गुरुगृह वसहु रामु तजि गेहू । नृप सन अम वर दूसर लेहू ॥
 जौं नहिं लगिहहु कहे हमारे । नहिं लागहि कछु हाथ तुम्हारें ॥
 जौं परिहास^५ कीन्ह कछु होई । तौ कहि प्रगट जनाउहु सोई ॥
 राममरिस सुत कानन जोगू । काह कहहि सुनि तुम्ह कहँ लागू ॥
 उठहु वेगि सोइ करहु उपाई । जेहि निधि सोरु कलकु नमाई ॥

छन्द—जेहि भौति सोरु कलकु जाइ उपाय करि बुल पालही ॥
 हठि फेरु रामहिं जात वन जनि वात दूसरि चालही ॥
 जिमि भानु विनु दिन, प्राण विनु तनु, चदु विनु जिमि जामिनी^६ ॥
 — तिमि अवध तुलसीदामप्रभु विनु समुक्ति धौं जिय भामिनी ॥

१ सलबगी २ बड़ी बूड़ी ३ स्वभाव ४ परेगा ५ किता ६ हँसी
 ७ रात्रि ।

राखि न सकै न कहि मक जाहू । दहूँ भाँति उर दारुन दाहूँ ॥
 लिखत सुगणकर^२ गा लिखि गहूँ । विधिगति वाम^३ सदा सब काहूँ ॥
 परम सनेह उभय मति धेरी । भै गति साँप छुछूँ दरि केरी^४ ॥
 राम्यौ सुतहि करउँ अनुरोधूँ । धरम जाइ अरु वधुविरोधूँ^५ ॥
 कहौ जान वन तौ बडि हानी । संकट-सोच-विबस भै रानी ॥
 बहुरि नमुक्ति तियधरमु^६ सयानी । रामुभरतु दोउ सुत सम जानी ॥
 सरल सुभाउ राममहतारी । बोली वचन धीर धरि भारी ॥
 तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका । पितुआयसु सब धरम क टीका^७ ॥
 दो०—राजु देन कहि दीन्ह वनु, मोहि न सो दुख लेसु ।
 तुम्ह विनु भरतहि भूपतिहि, प्रजहि प्रचड कलेसु । ५६ ॥
 जौ केवल पितु-आयसु ताता । तौ जनि जाहु जानि बडि माता १ ॥
 जौ पितुमातु कहँउ वन जाना १ । तौ कानन सत-अवप्र समाना ॥
 पितु वनदेव मातु वनदेवी । सग मृग चरनसरोरुह-सेवी ॥
 अतहु उचित नृपहि वनवास^४ । वय^५ विलोकि हिय होइ हरासु ॥
 बडभागी वनु, अवध अभागी । जो रघु-वस-तिलक तुम्ह त्यागी ॥
 जौ सुत कहँउ सग मोहि लेहू । तुम्हरे हृदय होइ सदेहू ॥
 पूत परमप्रिय तुम्ह सबही के । प्रान प्रान के जीवन जी के ॥
 ते तुम्ह कहहु मातु वन जाउँ । मै सुनि वचन बैठि पछिताऊँ ॥
 दो०—यह विचारि नहिं करउँ हठ, भूठ सनेह बढाइ ।
 मानि मातु कर नात बलि^६, सुरति विसरि जनि जाइ ॥ ५७ ॥

१ कठिन दुःख २ चन्द्रमा ३ टेढ़ी ४ साँप छेदर को चूहा समझ पकड ले,
 यदि खाय तो मरै और उगले तो अन्धा होवे । ५ जिद्द ६ भाई भाईमें भेदभाव
 ७ श्रीधर्म (पतिव्रत धर्म) ८ तिलक ९ आयु १० आयु के अन्तिम भाग में सूर्य-
 वन्दी राजा वाणप्रस्थ लेकर वन जाते थे । १० बलिहारी जाऊँ ।

१पितुदशगुणा माता गौरवेणाति रिच्यते ।

१मातुर्दश गुणा मान्या विमाता धर्म भीरुणा ॥

पितर सत्र तुम्हहिं गोसाईं । रागहु पलक नयन नी नाईं ॥
 त्रिअनु प्रियपरिजन मीना । तुम्ह करुनाकर धरमधुरीना ॥
 निचार सोड करहु उपाईं । सबहि जिअत जेहि भेंटहु आईं ॥
 सुगेन वनहिं बल जाऊँ । करि अनाथ जन परिजन-गाऊँ ॥
 कर आजु सुकृतफल बीता । भयेउ करालुकालु विपरीता ॥
 विधि मिलिपि चरन लपटानी । परमअभागिनि आपुहि जानी ॥
 दुमह-दाहु उर व्यापा । वरनि न जाइ विलापकलापा ॥
 उठाइ मातु उर लाईं । कहि मृदुवचन बहुरि समुझाईं ॥

दो०—ममाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाइ ।

जाइ सासु-पद-कमल जुग, बढि बैठि सिर नाइ ॥५८॥

ह, असीस सासु मृदुवानी । अतिसुकुमारि देखि अकुलानी ॥

नमित मुख मोचति मीता । रूपरासि पति-प्रेम-पुनीता ॥

न चहत वन जीवननाथू । केहि सुकृती सन होइहि साथू ॥

तनु प्रान कि केवल प्राना । विधि करतव कलु जाइ न जाना ॥

चरननख लेखति धरनी । नपुर मुग्गर मधुर कवि बरनी ॥

प्रेममम विनती करहीं । हमहिं नीयपद जनि परिहरहीं ॥

निलोचन मोचति वारी । बोली देखि राममहतारी ॥

मुनहु मिय अतिसुकुमारी । सामु मसुर-परिजनहि पियारी ॥

दो०—पिता जनक भूपालमनि, ससुर भानु कुल भानु

पति रवि कुल-कैरव-विपिन त्रिधु गुन रूप निधानु ॥५९॥

१ भौति २-१४ वर्ष की सीमा जल है ३ सुख पूर्वक ४ नीचा मुँह करके
 ति प्रेम द्वारा पवित्र ६ दिवुओं की ध्वनि ७ भानुकुल के भानु पृष्ठी,
 वे का कुल रविकुल-पृष्ठी तत्पु० कैरवों का विपिन, कैरव-विपिन, ५० त०
 लरूपी कैरवों का विपिन, रविकुल-कैरव विपिन रूपन कर्मधारय,
 कुल-कैरव विपिन त्रिधु-रविकुलरूपी कैरवों के विपिन कोविधु-५० त०

मै पुनि पुत्रवधू प्रिय पाई । रूपरासि गुन सीलु सुहाई
 नयनपुतरि करि^१ प्रीति वढाई । राखेउँ प्रान जानकिहिं लार्
 कलपत्रेलि जिमि बहु विधि लाली^२ । सीचि सनेह सलिल^३ प्रतिपा
 फूलत फलत भयउ विधि वामा । जानि न जाय काह परिना
 पलंगपीठ तजि गोद हिंडोरा । सिय न दीन्ह पगु अवनि^४ कठे
 'जियनमूरि' जिमिजोगवत रहऊँ । वीपवाति नहिं टारन कह
 सोड सिय चलन चहति वन माथा । आयसु काह होइ रघुना
 चद-किरण-रस-रमिक चक्रोरी^५ । रविरस नयन सकै किमि जं

दो०—करि, केहरि, निसिचर चरहिं, दुष्ट जतु वन भूरि ।

१ विपवाटिका कि सोह सुत, मुभग सर्जीपन मूरि^६ ॥६॥

वनहित कोल किरात किसोरी । रची विरचि विषय सुर भोरी^७
 पाहन कृमि^८ जिमि कठिनमुभाऊ । तिन्हहि कलेसु न कानन वा
 कै तापसतिय काननजोगू । जिन तपहेतु तजा सब भोग
 सिय वन वसिहि तात वेहि भौंती । चित्रलिखित कपि^९ देरि डरान
 सुर-सर-सुभग वनज वन चारी । डावर-जोग कि हंमकुमार
 अस विचार जस आयसु होई । मै सिरा देउँ जानकिहिं साई
 जौ सिय भवन रहै कह अवा मोहि कहँ होइ बहुत अवलंग
 सुनि रघुवीर मातु-प्रिय वानी । सील सनेह सुवा^{१०} जनु सान

दो०—कहि प्रियवचन विप्रेक मय, कीन्ह मातु परितोप^{११} ।

लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रगटि निपिन गुन-दोष^{१२} ॥६॥

१ भौंति २ लाड किया ३ पाणी ४ पलंग, पीठ, (पीठा) गोद ओर हिंडोरा
 ५ धरता ६ सजावगी वृद्धी ७ श्रेयनी ८ चन्द्र किरण रस-रमिक—(चक्रोरी का वि
 पद्य) त पु० ९ वृद्धी १० विषय-सुख मे रहित पचमी तत्पु० ११ पहाड़ी
 १२ चित्र में लिखित-कपि १३ सहारा १४ अमृत १५ सन्तुष्ट १६ गुन और
 गुन-दोष, (द्वन्द्व) विपन-गुन दोष विपन के गुन और दोष (पद्यीतपु

समीप कहत सकुचार्हीं । बोले समउ समुक्ति मन माँही ॥
 १-कुमारि सिखावन सुनहू आन भाँति जिय जनि कछु गुनहू ॥
 पन मोर नीक जो चहहू । वचन हमार मानि गृह रहहू ॥
 यसु मोरि सासुसेवनाई । सब निधि भामिनी भवन भलाई ॥
 ते अधिक धरमु नहिं दूजा सादर सासु ससुर पइ पूजा ॥
 जब मातु करिहि सुधि मोरी । होइहि प्रेमविकल मति भोरी ॥
 तब तुम्ह कहि कथा पुरानी । सु दरि समुभायेहु मृदुवानी ॥
 सुभाय सपथ सत मोही । समुखि मातुहित राखौ तोही ॥
 दो०—गुरु-स्रुति समत धरमफलु, पाइअ विनहिं कलेम ।
 हठवस मत्र भकट सहै, गालव न नहुप नरेश x ॥६०॥

१ भारी है मति निस्सकी (बहुब्रहि, २ गुर जाँर श्रुत से (द्वार)
 त (वरण कारक) ३ (बलेश) दु ग ४ जापत्तियों ।

गालव—ये विद्वामित्र जी के शिष्य थे । इनकी सेवा के वशीभूत होकर
 ने इन्ह विद्या म दक्ष कर दिया । जब ये पूण विद्वान् होगये, तब इन्होंने गुरु
 रुद्रक्षिणा को गो का अनुरोध किया । गुरु ने कहा कि "हम तेरी सेवा मे
 हैं, हमें "क्षिणा नहीं चाहिये" परन्तु इन्होंने टिड न छोड़ी । तब तो गुरु
 विवत होकर ८०० द्रयाम घणं घोडे रॉंगे । गालव बडे कष्ट से केवल
 घोडे इकट्ठे कर सके ।

x नहुप—पुरुरवा का ज्येष्ठ पुत्र नहुप उडा प्रतापी और धमात्मा था ।
 गुर के मारने मे इन्द्र को धत्त हत्या लग गई इसमे वलटिप गया । इन्द्रास
 को के कारण नहुप को दस पर बिठला दिया गया । गद्दी पर धँटने से
 को अभिमान होगया और इन्द्राणा से विवाह करना चाहा । नहुप को
 पर इन्द्राणी ने कहा कि यदि राजा 'भ्रपूव' सवारी में रेटकर आधगे तो
 इच्छा पूरा हो सकती है । राजा यह जानकर सस्रपि मे पालकी उठवा
 या । पालकी म धँटकर अगमन क्रपि के मिर पर पर रव निया और सपं
 (जल्दी चलने) कहने लगा । इस पर अगमन क्रपि ने प्रोषित होकर कहा
 म सप हो जाओ । राजा उनके शाप म सप हो गया ।

मैं पुनि करि प्रमान^१ पितृवानी । वेगि फिरव सुनु सुमुखि सया
द्विस जात नहि लागिहि वारा । सुंदरि सिरप्रनु^२ सुनहु हमा
जौ हठ करहु प्रेमवस वामा^३ । तौ तुम्ह दुख पाउप परिना
काननु कठिन भयकर भारी । घोर घामु, हिम, धारि बयार
कुस कटक मग काँकर नाना । चलत पयादेहि विनु पदप्रान
चरनकमल मृदु मजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिपर^४ भ
कदर साँह नदी नद नारे । अगम अगाध^५ न जाहिं निहा
भालु वाघ वृक^६ केहरि नागा । करहिं नाद सुनि वीरजु भ...

दो०—भूमि सयन बलकलत्रसन^{१०}, अमनु^{११} कद फल-मूल ।
ते कि मद्रा सब दिन भिलहिं, सबइ समय अनुकूल ।

नर अहार रजनीचर करही । कपटवेप विधि कोटिक धरही
लागै अति पहार कर पानी । विपिन-विपति नहि जाइ बरानी
व्याल कराल विहँग वन पौरा । निसिचर-निकर^{१४} नागि-नर-चोर
डरपहि धीर गहन^{१५} सुवि आएँ । मृगलोचनि तुम्ह भीरु^{१६} सुभा
हस-गप्रनि तुम्ह नहि वन जोगू । सुनि अपजसु मोहि देखिं लो
मानस-सलिल-सुधा प्रतिपाली । जिअइ कि लवनपप्रोधि मराल
नर-रसाल-वन विहरनमीला । सोह कि कोकिल विपिन कराल
रहु भयन अस हृदय विचारी । चदवदनि दुख कानन भा

दो०—सहज सुहृद-गुरु रामि मिख, जो न करै सिर मानि ।

सो पछिताइ अघाइ उर, अबसि होइ हितहानि ॥६४॥

सुनि मृदुवचन मनोहर पिअके । लोचन ललित^१ भरे जल सिय

१ पूर्ण २ (शिक्षा) उपदेश, ३ स्त्री, (उदीसीनता की दशा का संश्लेष)
४ हवा ५ जूता ६ पर्वत ७ गहरे ८ देखने से भय मालूम होता है । ९ भे
१० छाल के बख ११ भोजन १२ राक्षसों का समूह १३ वन १४ डरपोक
‡ पाठान्तर 'नलिन' ।

सिरस दाहक भै कैसे । चकइहि सरद चद निसि जैसे ॥
 न आव विकल वैदेही । तजन चहत सुचि स्वामि सनेही ॥
 रोकि त्रिलोचनवारी । धरि धीरजु उर अवनिकुमारी ॥
 सासुपग कह कर जोरी । छमनि देवि बडि अभिनय मोरी ॥
 प्रानपति मोहि सिरस सोई । जेहि त्रिधि मोर परमहित होई ॥
 ते समुक्ति दीस मन माहीं । पिय त्रियोग सम दुसु जग नाहीं ॥
 प्राननाथ करुनायतन सुन्दर सुखद सुजान ।

तुम्ह विनु रघुकुल-कुमुद विधु सुरपुर नरकसमान ॥६५॥
 पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद-समुदाई ॥
 ससुर गुरु सजन सहाई । सुत सुन्दर सुसील सुखदाई ॥
 नाथ नेह अरु नाते । पिय विनु तियहि तरनिहुँ^३ ते ताते ॥
 धनु धामु धरनि सुरराज । पति विहीन सबु सोक ममाजू ॥
 रोगसम, भूपन भारु । जम-जातना मरिस^४ ससारु ॥
 गाय तुम्ह विनु जग माँहीं । मो कहँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ॥
 विनु देह नदी विनु वारी । तैसिअ नाथ पुम्प विनु नारी ॥
 सकल सुख साथ तुम्हारे । सरद विमल विधु-वदनु^५ निहारे ॥
 राग मृग परिजन नगर वनु बलकल विमल दुकूल^६ ।

नाथ साथ सुर-सदन सम परनसाल^७ सुखमूल ॥६६॥
 वनदेव उदारा । करिहहि सासु-ससुर-मम सारा^८ ॥
 केसलय साथरी सुहाई । प्रभु सँग मजु मनोज तुराई ॥
 मूल फल अमित्र^९ अहारु । अत्र-सौव सत सरिस पहारु^{१०} ॥
 धेनु प्रभु पद रुमल विलोकी । रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी ॥

१ सीताजी, २ डीठता ३ सूर्य ४ यम दण्ड के सदृश ५ शरद ऋतु का
 विधु (उसके समाग उजाल मुख) इस प्रकार विग्रह है ६ रेशमी वस्त्र
 ७ सा ८ सार मँभार ९ (अमृत) १० पगरु अत्रधमतसौध-(महल) सरिस, पहाड
 का के सौ भवना के तुल्य है । ११ विपमालकार—कारण के विरुद्ध कार्य ।

वन-दुग्ध नाथ कहे बहुतेरे । भय विपाद परिताप घने
 प्रभु वियोग लव-लेस ममाना । सब भिलि होहि न कृपानियाना
 अस जिय जानि मुजान सिरोमनि । लेइअ मग मोहि छॉडिअ जनि
 बिनती बहुत करउँ का स्वामी । करुनामय उर-अतर-जामि

दोहा—राखिअ अवग जो अवगिलगि रहत जानिअहि प्रान ।

दीनवधु सुन्दर सुखद, सील सनेह निगान ॥६७॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन सरोज निहारी
 सबहि भॉति पिय सेवा करिहौ । मारग नित सकल स्रम हरिहौ
 पाँय पर्यारि वैठि तरुछाहीं । करिहौ बाउ मुदित मनमारी
 स्रम-रुत-सहित^१ स्याम तनु देखें । कहँ दुख समउ प्रानपति पै
 सम महि वृत्तरु-पल्लव डासी^२ । पाँइ पलोदिहि सब निसि दासी
 वार वार मृद मूरति जोटी^३ । लागिहि ताति वयारि न मोही
 को प्रभु मग मोहि चितवनिहारा । सिंघवधुहिजिमि ससक^४ सिआ
 मैं सुकुमारि नाथ वनजोगू । तुम्हहि उचित तप मो कहँ भो

दोहा—ऐसेउ वचन कठोर सुनि, जो न हृदय बिलगानि ।

तो प्रभु-विपम-वियोग-दखु, सहिहहि पाँवर प्रान ॥६८॥

अस कहि सीय विफल भै भारी । वचन प्रियोग न सकी सँभारि
 देखि दसा रघुपति जिय जाना । हठ राखे नहि राखहि प्रान
 कहेउ कृपालु शानु कुल नाथा । परिहरि सोचु चलहु वन सार
 नहि विपाद कर अउसर आजू । वेगि करहु वन-गवन-समार
 कहि पियवचन प्रिया समुमार्ड । लगे मानुपद आसिप फार
 वेगि प्रजादरु भेटव आई । जननी निठुर^५ विस्तरि जनि जा

१ पसीना की गूँनें सहित २ प्रजाकर ३ देवसर ४ ग्राहा ५ तीव्र ६ (वि)
 १ बाहु उन्नोत्ति बलहार, जहाँ धरनि मे उट्टा अर्थ चिरने, जैसे क
 सुकुमारि और आप बा के योग्य है । जथात् नहीं ।

हे दसा निधि बहुरि कि मोरी । देखिहौं नयन मनोहर जोरी ॥
सुधरी तात क्य होइहि । जननी जिअत बदनविधु जोइहि ॥

श्लो०—बहुरि वन्द्य^१ कहि लालु कहि, रघुपति रघुवर तात ।

कवहि बोलाइ लगाइ हिय हरषि निरखिहौं गात ॥६९॥

सनेह कातरि^२ महतारी । वचनु न आय विरलु भै भारी ॥

प्रबोध कीन्ह विधि नाना । समउ सनेहु न जाठ बराना ॥

जानकी सासुपग लागी । मुनिअ माय में परम अभागी ॥

समय दैव बन दीन्हा । मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा ॥

धोभु^३ जनि छाँडिअ छाँहूँ । करमु कठिन कछु दोसु न मोहूँ ॥

मेअ वचन सासु अकुलानी । दसा करनि निधि कहौं बरानी ॥

वार लाइ उर लीन्ही । धरि वीरजु मिख आमिप दोन्ही ॥

होउ अहिवातु^४ तुम्हाग । जब लगि गग जमुन जल वारा ॥

श्लो०—सीतहि सासु असीम सिरस, दीन्हि अनेक प्रकार ।

चली नाइ पदपदुम सिरु, अति हित वारहिं वार ॥७०॥

जय लद्धिमन पाए । व्याकुल प्रिलस बदन उठि वाए ॥

कुलक तन नयन सनीरा । गहे चरन अतिप्रेम अधीरा ॥

सकत कष्टु चितवत ठाडे । मीनु वीनु जनु जल तें काडे ॥

दय निधि का होनिहारा । सअ सुसु सुकृत सिरान हमारा ॥

है काह कहव रघुनाथा । रखिहहि भवन कि लेहहि साथा ॥

त्रिलोकि वधु परजारे । देह गेह^५ सब सन तन तोरे ॥

वचनु राम नयनागर^६ । साल सनेह-सरल-मुख-सागर ॥

प्रेममस जनि कवराह । समुक्ति हृदय परिनाम उद्गाह ॥

(अन्त) ० सनेह में कातर वा सनेह में कातर, इस प्रश्न तृतीया

मी तत्पु० दाना हो चरते १ ३ दुःख ४ कृपा ५ सोभाग्य ६ समाप्त

(श्लो) ८ नीति म चतुर ।

दो०—मातु-पिता गुरु-स्वामि-सिर, सिर धरि करहि सुभाय ।
लहेउ लाभ तिन्ह जनम कर, नतरु^१ जनमु जग जाय ।

अस जिय जानि सुनहु सिर भाई । करहु मातु-पितु-पद सेवका
भवन भरत रिपुसूदन^२ नाहीं । राउ वृद्ध, मम दुख मन
मै बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथी । होइ सबहि विधि अवध
गुरु पितु मान प्रजा परिवारु । सब कहँ परै दुसह-दु-
रहहु करहु सब कर परितोपू । नतरु तात होइहि चड
जासु राज प्रिय प्रजा दरारी । सो नृप अवसि नरक अधिकार
रहहु तात अस नीति विचारी । सुनत लपनु भये व्याकुल भा
सिअरे^३ वदन सूरि गए कैसे । परसत^४ तुहिन^५ तामरस^६ जै

दो०—उतरु न आउत प्रेमवस, गहे चरन अकुलाय ।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह, तजहु त काह बसाइ ॥

दीन्हि मोहि सिख नीक^७ गोसाईं । लागि अगम^८ अपनी कदराई
नरवर धीर धरम धुर-धारी । निगम^९ नीति कहँ ने अधिकार
मैं मिसु प्रभु-सनेह-प्रतिपाला । मदरुमेरु^{१०} कि लेहि मराल
गुरु पितु मातु न जानउँ काहू । कहँ सुभाउ नाथ पतिआहू
जहँ लागि जगत सनेह सगाईं^{११} । प्रीतिप्रतीति निगम निजु^{१२} ग
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी । दीनव बु उर-अतरजा
वरम नीति उपदेसिअ ताही । कीरति-भूति सुगति प्रिय जा
मन-क्रम-वचन चरनरत होई । कृपासिंधु परिहरिअ कि स

१ नहीं तो २ शत्रु न ३ घोर दुःख का बोझ ४ कोमल, नम्र, ५ (स्पर्श) ६
७ पाला ८ कमल ९ अस्त्री १० कठिन ११ कातरता से १२ शब्द १३ मद्र
तथा सुमेरुपर्वत १४ विश्वास कीजिये १५ समग्रन्थ १६ अपने, स्थय १७ कथा १८
बच्चा मदराचल तथा सुमेरुपर्वत को उठा सक्ना है १९ अर्थात् नहीं, ऐसे ही मैं
प्रेम से पाया हुआ बालक राजनीति तथा वेद का अधिकारी नहीं हो सक

दो०—करुनासिंधु सुप्रधु के, सुनि मृदुप्रचन विनीत^१ ।

'समुष्ण उर लाइ प्रभु, जानि सनेह सभित' ॥ ७३ ॥

गिहु निदा मातु सन जाई । आग्रहु वेगि चलहु वन भाई ॥

पति भये सुनि रघुवर वानी । भयेउ लाभ वड गड^३ बडि हानी ॥

रपित हृदय मातु पहि आए । मनहुँ अध फिर लोचन पाए ॥

गई जननि-पग नायेउ माथा । मनु रघुनदन-जानकि साथा ॥

छे मातु मलिन मन देखी । लपन कहीं सत्र कथा विसेखी ॥

गई सहमि^२ सुनि वचन कठोरा । मृगी देखि दव^४ जनु चहुँ ओरा ॥

लपन लखेउ भा अनरथ आजू । गहि सनेह बस करव अकाजू ॥

गौगत विदा सभय सकुचाही । जाइ सग, त्रिधि, कहहि कि नाहीं ॥

दो०—समुष्णि मुष्मिन्ना राम सिय रूपु-सुसील सुभाड ।

नृप सनेह लखि धुनेउ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ^५ ॥ ७४ ॥

वीरजु बरेउ कुग्रवसर जानी । सहज सुहृद बोली मृदु वानी ॥

तात तुम्हारि मातु वैदेही । पिता रामु सत्र भाँति सनेही ॥

अग्रध तहाँ जहँ राम-निवासू । तहँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू ॥

जा पै सोय-रामु वन जाँही । अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं ॥

गुरु पितु मातु वधु सुर साई । सेइअहि सकल प्राण की नाई ॥

राम प्राणप्रिय जीवन जी के^६ । स्वारथरहित मर्या^७ सबही के ॥

पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें । सत्र मानिअहि राम के नातें ॥

अस जिय जानि सग वन जाहू । लेहु तात जग जीवनुलाहू ॥

दो०—भूरि भागभाजनु^{१०} भयेहु मोहि समेत, बलि जाउँ ।

जाँ तुम्हरे मन छौँडि छलु कीन्ह राम-पद ठाउँ ॥

१ नम्र २ भयभीत ३ दूर होगइ ४ मझाटे म भागई, दग रह गइ ५
भस्मि ६ कुघात ७ जीव के जीवन (प्राण) है ८ प्यारे (सखा ४ प्रभार के
होते हैं ९ सुहृद, २ प्रिय ३ न्यून ४ नम्र) ५ जीवन का लाभ । १०
बड़े भाग्य शाली ।

पुत्रपती जुवती^१ जग सोई । रघु-पति भगतु जासु सुत होई
 नतरुबाँभभलि, बादि^२ विआनी^३ । रामविमुख-सुत तें हितहाना
 तुम्हरेहि भाग रामु वन जाँहीं । दूमर हेतु तात केछु नाही
 सकल सुकृत कर बड फल एह । राम-सीय-पद महज मनेह
 रागु^४ रोषु इरिषा महु मोहू । जनि मपनेहुँ इन्ह के बस होहू
 सकल प्रकार विकार^५ विहाई । मन क्रम बचन करेहु सेवकाई
 तुम्ह कहूँ वन सब भाँति सुपासू । सँग पितु मातु राम सिय जासू
 जेहि न रामु वन लहहिं कलेसू । सुत सोइ करहु इहै उपदेसू
 छद्—उपदेसु एह जेहि जात तुम्हरे, रामसिय सुरा पावहीं ।

पितु-मातु-प्रिय-परिवार-पुर-सुरा-सुरति वन विसगवहीं ॥

तुलमी-सुतहि मिरा देइ आयसु दीन्ह पुनि आमिप^६दई ।

रति^७होउ अचिरल^८अमल^९सिय-रघुवार-पद नितनित नई ॥

सो०—मातुचरनु सिरु नाइ, चले तुरत सकित हृदय ॥

वागुर^{१०} विपम^{११} तोराट, मनुहुँ भागमृगु भागवस ॥७६

गए लपनु जहँ जानकिनाथू । भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू
 वदि राम-सिय चरत सुहाए । चले सग नृपमदिर आए
 कहहि परमपर पुर नर-नारी । भलि बनाइ विधि वात विगार
 तन कृस^{१२} मन दुग्गु, बदन भलीने । विकल मनहुँ मारपी मधु छीने
 कर मीजहि, ^{१३}सिरधुनि पछित्तहीं । जनु विनु परा विहग अकुलहीं
 भै तडि भीर भूप-दरवारा । बरनि न जाइ विपाटु अपारा
 सचिर उठाइ राउ बेठारे । कहि प्रिय बचन रामु पगु धारे
 सियसमेत दोउ तनय निहारी । व्याकुल भाउ भूमिपति भारी

१ स्त्री २ वयं ३ पुत्र पैदा क्रिया ४ प्रीति ५ ईर्ष्या, जलन ६ मा
 गति ७ प्रीति ८ अनुपम ९ पवित्र १० फग ११ कठिना १२ दुर्बल
 मरुत है ।

॥ यहा अयोध्या न रहता फन्ना, लक्ष्मण मृग (उद्येदालकार) ।

दो०—सीयसहित सुत सुभग^१ दोउ, देगि देरि अकुलाय ।
 चारहि चार सनेहवस, गड लेट उर लाइ ॥७७॥
 नकै न बोलि निकल नरनाहू । सोरुजनित उर दारुन दाहू ॥
 गइ सीसु पद अति अनुरागा । उठि रघुवीर मिठा तब माँगा ॥
 नेतु असीमु आयुसु मोहि दीजै । हरपसमय प्रिसमउ कत कोजै ॥
 गात फिण प्रिय प्रेमप्रमादू^२ । जसु जग जाइ, होइ अपनादू^३ ॥
 मुनि सनेहवस उठि नरनाहौं । वैठारे रघुपति गहि बाहौं ॥
 मुनहु तात तुम्ह कहँ मुनि कहँही । राम चराचरनायक अहँही ॥
 सुभ अरु असुभ करम अनुहारी । ईसु देउ फलु हृदय प्रिचारी ॥
 रै जो करम पाय फल सोई । निगम नीति असि कह सवु कोई ॥

दो०—औरु करै अपराय कोउ, और पाय फल भोगु ।

अति विचित्र भगवतगति को जग जानै जोगु ॥७८॥

य रामरागन हित लागी । बहुत उपाय किये छल त्यागी ॥
 सी रामरुख, रहत न जाने । धरम धुरधर वीर सयाने ॥
 न नृप मीय लाइ उर लीन्ही । अतिहित बहुत भाँतिसिर दीन्ही
 हि बन के दुग्य दुमह सुनाए । सामु ससुर पितु सुग्य समुभाए ॥
 नयमन रामचरन-अनुरागा । घरुन सुगमु, वनु विपमु न लागा ॥
 औरउ मचहि मीय समुभाई । कहिकहिबिपिन विपति अधिकाई ॥
 विपनारि गुरुनारि सयानी । सहित सनह कहहिं मृदु वानी ॥
 कहँ तौ न दीन्ह वनवासू । करहु जो कहहिं मसुर-गुर सासू ॥

दो०—मिरत मीतलि हित मधुर मृदु, सुनि मीतहि न सोहानि ॥

सरद चढ चढ़नि लगत, जनु चकई अकुलानि ॥७९॥

१ सुन्दर २ प्रेम से भूट ३ अपयश ४ चर और जचर सृष्टि क
 सामी है ।

* तृतीय विपम अवकार--जहा कारण क गुण स बाय का गुण या
 कारण की क्रिया स कार्य की क्रिया विन्द्य शो ।

सीय सकुच वस उत्तरु न देई । सो सुनि तमकि^१ उठी कैकेई ।
 मुनि-पट-भूपन-भाजन आनी । आगे धरि बोली मृदुवानी ॥
 नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुवीर । सील सनेह न छाँडिहि भीरा ॥
 सुकृत सुजसु परलोक नसाऊ । तुमहि जान वन कहिहि न काऊ ॥
 अस विचारि सोइ करहु जो भावा । राम जननि सिर सुनि सुगपावा ॥
 भूपहि रचन दान सम लागे । करहिं न प्रान पयान^२ अभागो ॥
 लोग विकल, मुरुछित नरनाहू । काह करिअ, कछु सूक न काहू ॥
 रामु तुरत मुनिवेषु वनाई । चले जनक जननी सिरु नाई ॥

दोहा—सजि वन साजु समाजु सब, वनिता^३-प्रभु समेत ।

वदि विप्र गुर-चरन प्रभु, चले करि सबहि अचेत ॥८०॥

निकसि वसिष्ठ द्वार भये ठाढे । देखे लोग विरह-द्व^४ दाढे^५ ।
 कहि प्रिय वचन सकल समझाए । विप्रवृन्द रघुवीर बोलाए ।
 गुर सन कहि वरपासन^६ दीन्हे । आदर दान विनयवस कीन्हे ।
 जाचक दान मान सतोपे । भीत पुनीत प्रेम परितोपे ।
 दासी दास बोलाइ वहोरी । गुरहिं सौंपि बोले कर जोरी ।
 सब कै सार-सँभार गोसाईं । करवि जनक-जननी की नाईं^७ ।
 वारहिं वार जोरि जुगपानी^८ । कहत रामु सब सन मृदुवानी ।
 सोइ सब भौंति मोर हितकारी । जेहि तें रहै भुआल सुखारी ।

✓ दोहा—मातु सकल मोरे विरह जेहि न होहिं दुख दीन ।

सोइ उपाय तुम्ह करेहु सब पुरजन^९ परम प्रवीन ॥८१॥

एहि विधि राम सबहि समुझावा । गुर-पद-पडुम^{१०} हरपि सिरुना ।
 गनपति^{११} गौरि गिरीसु^{१२} मनाई । चले असीस पाइ रघुराई ।

१ क्रोधित हो २ (प्रयाण) गवन ३ स्त्री ४ त्रियोग की आग ५ उ
 हुण ६ (वरस + अमन) एक वर्ष का भोजन ७ भौंति ८ (युग पारि
 ९ नगर-वासी १० पद्मरूपी पद, गुर के पद पद्म, ११ गणेशजी १२ महान

रामु चलत अति भयेउ विपादू । सुनि न जाइ पुर आरतनादू^१ ॥
 कुसगुन लक, अवध अति सोकू । हरप विपाद^२ त्रिवस सुरलोकू ॥
 गद मुरद्धा तब भूपति जागे । बोलि सुमत्रु कहन अस लागे ॥
 रामु चले वन प्रान न जाही^३ । केहि सुग्न लागि रहत तन माहीं ॥
 एहि तें कउन व्यथा बलवाना । जो दुखु पाइ तजिहि तनु प्राना ॥
 पुनि धरि धीर कहै नगनाहू । लै रथ सग सरया तुम्ह जाहू ॥

दो०— सुठि^४ सुकुमार कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारि ।
 रथ चढाइ देसराइ ननु फिरहुगए दिन चारि ॥८२॥

जौं नहिं फिरहि धीर दोउ भाई । सत्यसध^५ दृढव्रत रघुराई ॥
 तौ तुम्ह विनय करेहु कर जोरी । फेरिअ प्रमु मिथलेस-किसोरी ॥
 जन सिय कानन देवि डेराई । कहेहु मोर सिर अरवसरु पाई ॥
 मासु समुर अस कहेउ सँदेसू । पुत्रि फिरिअ वन बहुत कलेसू ॥
 पितुगृह कवहुँ, कनहुँ समुरारी । रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥
 एहि त्रिधि करेउ उपाय कदबा^६ । फिरइ त होइ प्रानअबलवा ॥
 नाहिं त मोर मरनु परिनामा । कयु न बसाइ भए विधि वामा ॥
 अस कहि मुरुछि परामहि राऊ । राम लपनु मिय आनि देयाऊ ॥

दो०— पाइ रजायसु नाइ सिरु, रथु अति प्रेम बनाइ ।
 गयेउ जहाँ बाहर नगर, सीयसहित दोउ भाइ ॥ ८३ ॥
 तत्र सुमत नृपवचन सुनाए । कर विनती रथ रामु चढाए ॥
 चढि रथ सीयसहित दोउ भाई । चले हृदय अवधहि सिरु नाई ॥
 चलत राम लरिअ अवध अनाथा । विकल लोग सत्र लागे साथी ॥
 कृपासिंधु बहु त्रिधि समुक्तावहिं । फिरहिं प्रेमवस पुनि फिरि आँवहिं ॥

१ करणा पूण शब्द २ विपाद, श्रयोध्या की दशादशमर और हर्ष अपने
 गद्य राक्षसों के नष्ट होने की आशा से । ३ गवल कारण होने पर भी कार्य न हो
 (निशेषोक्ति अलंकार) ४ सुष्ठु ५ सत्य प्रतिज्ञा वारें ६ समूह अनेक ।

धरमु न दूसर सत्यसमाना । आगम निगम पुरान बराना ॥
 में सोइ धरमु सुलभ^१ करि पावा । तजे तिहूँपुर अपजसु छावा ॥
 सभावित^२ कहँ अपजसलाहू । मरन-कोटि सम दारुनदाहू^३ ॥
 तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ । दिँ उतर फिरि पातकु लहऊँ ॥

दो०—पितुपद गहि कहि कोटि नति, विनय करव कर जोरि ।

चिता कवनिहूँ वात कै तात करिय जनि मोरि ॥१६॥
 तुम्ह पुनि पितुसम अतिहित मोरें । विनती करौं तात कर जोरें ॥
 सब त्रिधि सोइ करतव्य तुम्हारे । दुख न पाव पितु सोच हमारे ॥
 सुनि रघुनाथ-सचिव-सवादू । भयेउ मपरिजन^४ विकल निपादू ॥
 पुनि कछु लपन कही कटु वानी । प्रभु वरजे^५ बड अनुचित जानी ॥
 सकुचि राम निज सपथ देवाई । लपनसँदेसु कहिअ जनि जाई ॥
 कह सुमत्र पुनि भूप सँदेसू^६ । सहि न सकहि सिय विपिन^७ कलेसू ॥
 जेहि विधिअवध आन फिरिमीया । सोइ रघुवरहिं तुम्हहि करनीया ॥
 नतरु निपट अवलब-विहीना^८ । मै न जिअब जिमिजलविनु सीना ॥

दो०—मडकें^९ ससुरे सकल सुख, जवहिं जहाँ मनु मान ।

तहँ तव रहहि सुरेन सिय जब लगि विपति-विहान^{१०} ॥१७॥
 विनती भूप कीन्ह जेहि भाँती । आरति प्रीति न सो कहि जाती ।
 पितृ-सदेसु सुनि कृपानिधाना । सियहिदीन्हिसिरकोटिविधाना^{११} ॥
 सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू । फिरहु त सब कर मिटै रभारू^{१२} ॥
 सुनि पति वचन कहत वैदेही । सुनहु प्रानपति परम सनेही ॥
 प्रभु करुनामय परम विवेकी । तनु तजि रहत छाँह किमि छेकी^{१३} ॥
 प्रभा^{१४} जाइ कहँ भानु विहाई । कहँ चद्रिका^{१५} चढ तजि जाई ॥
 पतिहिं प्रेममय विनय सुनाई । कहति सचिव सन गिरा^{१६} सुहाई ॥

१ आसान २ प्रतिष्ठित पुरुष ३ कठिन दुःखदाई ४ कुटुम्ब सति
 ५ शोक दिये ६ समाचार ७ जगल ८ विना सहारे ९ पिता के घर १०
 होय ११ करोडा तरह की १२ दुःख १३ छोड़कर १४ भूप १५ चोँद
 १६ याणी ।

तुम्हपितु ससुर-सरिसहित-कारी । उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी ॥

दो०—आरति^१-वस सनमुख भइँ, विलगु^२ न मानव तात ।

आरज^३-सुत-पद-कमल त्रिनु, वादि जहाँ लगी नात ॥ ९७ ॥

पितु वैभज निलास^४ मैं दीठा । नृप-मनि मुकुट^५ मिलत पदपीठा^६ ॥

सुख निधान अस पितु-गृह मोरे । पिय विहीन^७ मन भाव न भोरे ॥

ससुर चक्कवड^८ कोसल-राऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥

आगे होइ जेहि सुरपति लेई । अरध सिंहामन आसन देई ॥

ससुर ण्ठाटस^९ अवव निवासू । प्रिय परिवारु मातु सम मासू ॥

बिनु रघुपति-पद पदुम परागा । मोहि कोउ नपनेहु सुखद न लागा ॥

अगम पथ वन भूमि पहारा । करि केहरि मर सरित अपारा ॥

कोल किरात कुरग^{१०} विहगा^{११} । मोहि सब सुखद प्रानपति सगा ॥

दोहा०—सासु ससुर सन मोरि हुति^{१२} विनय करवि परि पाय ।

मोरि सोचु जनि करिअ कछु मैं वन सुखी सुभाय ॥ ९९ ॥

प्रान-नाथ प्रिय देवर साथा । वीर धुरीन^{१३} धरे धनु भाथा ॥

नहि मग स्रम भ्रम-दुख मन मोरे । मोहि लगी सोच करिअ जनि भोरे^{१४} ॥

सुनि सुमत्र सिय सीतल-वानी । भयेउ विकल जनु फनि^{१५} मनिहानी^{१६} ॥

नयन सूझि नहि सुनइ न काना । कहि न सकइ कछु अति अकुलाना ॥

रामु प्रयोधु कीन्ह बहु भौंती । तदपि होत नहि मीतल छाती ॥

जतन^{१७} अनेक साथहित^{१८} कीन्हे । उचित उतर रघुनन्दन दीन्हे ॥

मेदि जाइ नहि रामरजाई^{१९} । कठिन करमगति कछु नवसाई ॥

राम-लग्न सिय पद सिरु नाई । फिरेउ वनिकु जिमि मूर^{२०} गँगाई ।

१ दुखी होकर २ घुरा ३ (आय्य) श्वसुर ४ जानद ५ देखा है ६

नगियो म यने हुण राजाओं के मुकुट ७ पैरों पर ८ रहित ९ (चक्रवर्ती)

१० पय ११ हरिण १२ पक्षी १३ मेरी ओर से १४ मुत्तिया १५ भूल

कर भा १६ सर्प १७ मणि रहित १८ यत्न १९ सग किये २० रोमाशा

११ मूल धन, पूँजी ।

दो०—रथ हॉकेउ, हय^१ रामतन, हेरि-हेरि^२ हिहिंनाहि ।

दरि निपाद विपादवस, धुनहि सीस पछिताहि ॥१००

जासु वियोग^३ विकल पसु ऐसे । प्रजा मातु पितु जीहहि कैसे
वरवस^४ रामु सुमत्रु पठाए । सुरसरि तीर आप तव आप
माँगी नाव, न केवट आना^५ । कहै तुम्हार भरमु में जाना
चरन-कमल-रज कहँ सवु कहई । मानुपकरनि मूरि^६ कछु अहई
त्रुअत सिला^७ भइ नारि सुहाई । पाहन तँ न काठ कठिनाई
तरनिउँ मुनिघग्नी होइ जाई । बाट^८ परै मोरि नाव उडाई
एहि प्रतिपालउँ सवु परिवारु । नहि जाना कछु अउर कवारु
जौ प्रभु पाग अचसि गा चहहू । मोहि पदपटुम पपागन^९ कहहू ॥

छंद—पदकमल योइ चढाइ नाव न नाव उतराई चहौ ।

मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब सौची कहौ ॥
वरु तीर मारहु लपन पै जव लागि न पायँ परारिहौ ।
तव लागि न तुलसीदास-नाथ कृपालु पारु उतारिहौ ॥

मो०—सुनि केवट के वचन, प्रेम लपेटे अटपटे^{१०} ।

विहँसे करुना अयन, चितै जानकी लपन-तन ॥१०१॥

कृपासिंधु बोले मुसुकाई । सोइ करु जेहि तव नाव न जाई
बेगि आनु जल पाय परारु । होत विलम्ब उतारहि पारु
जासु नाम मुमिरत एक वारा । उतरहि नर भवसिंधु अपारा
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा । जेहि जगु किएतिहुँ पगहुँते थोरा
पदनस निरखि देवसरि हरपी । सुनि प्रभुवचन मोह मति करपी
केवट रामरजयासु पावा । पानि कठवता^{११} भरि लेइ आव

१ घोडा २ देखकर ३ जुदाई ४ चलात्, जबरदस्ती ५ लाया ६ शीप
७ परथर ८ जीविका की राह ९ कारोबार १० कमलरपी चरण धोने व
आजा नीनिये ११ अस्पष्ट १२ हर लिया १३ पात्र विशेष ।

अति आनन्द उमगि अनुरागा । चरनसरोज परमारन लागा ॥
उरपि सुमन सुर मरुल सिहाही । गहि मम पुन्यपु ज'कोउ नाही ॥

श्लो०—पद परमारि जलु पान करि, आपु सहित परिवार ।
पितर^१पार करि प्रभुहि पुनि, मुदित गयेउ लेइ पाग ॥१०२॥

उतरि ठाढ भग सुरसरिरेता । सीय गमु गुह लपन समेता ॥
केरट उतरि दडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच गहि नहि कडु दीन्हा ॥
पियहिय की सिय जाननिहारी । मनिमु^२ठरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपालु लेह उतगई । केरट चरन गहे अकुलाई ॥
नाथ आजु में काहु न पावा । सिटे दोष-दुग्ग पारिद-पारा ॥
बहुत काल में कीन्हि मजूरी । आजुदीन्हि त्रिधि वनि भलि भूरी^३ ॥
अन कडु नाथ न चाहिय मोरें । दीनदयाल अनुग्रह तोरें ॥
फिरती वार मोहि जोइ देवा । सो प्रमादु में मिर धरि लेवा ॥

श्लो०—बहुत कीन्ह प्रभु लपन मिय नहि कडु केवट लेइ ।
त्रिदा कीन्ह करुनायतन भगति विमरा वरु देइ ॥१०३॥

तत्र मज्जनु करि रघुकुल नाथा । पूजि पारथिव^४ नायेउ माथा ॥
मिय सुरमगिहि कहेउ कर जोरी । मातु मनोगथ पुरउव मोरी ॥
पति-देवर मँग कुमल बहोरी । आइ करौ जेहि पूजा तोरी ॥
सुनि सियत्रिनय प्रेम-रस-सानी । भइ तत्र रिमल वारि उररानी ॥
सुनु रघु वीर-प्रिया वैदेही । तब प्रभाव जग विदित न देही ॥
लोकप होहि त्रिलोकत तोरें । तोहि भेनहि सय विधि कर जोरें ।
तुम्ह जोहमहि बडि त्रिनय मुनाई । कृपा कीन्हि, माहि दीन्हि वडाई ॥
तदपि, देवि में देवि अमीसा । सफल होन हित निज वागीसा ॥

श्लो०—प्राननाथ देवर सहित कुमल कोसला आइ ।
पूजहि मव मन कामना सुजसु रहिहि जग छाइ ॥१०४॥

१ पुण्य का समूह २ पूर्वत ३ पूरी पूरी ४ महादेव ५ पवित्रतर मे
वैष्णवाणी ।

गग वचन सुनि मगलमूला । मुद्रित सीय सुरमरि अनुकूला ॥
 तव प्रभु गुहहिं कहंउ घर जाहू । सुनत सूख मुखु भा उर दाहू ॥
 दीन वचन गुह कह कर जोरी । विनय सुनहु रघु-कुलमनि मोरी ॥
 नाथ साथ रहि पथु देखाई । करि दिन चारि चरन सेवकाई ॥
 जेहि वन जाइ रहव रघुराई । परनकुटी मै करवि सुहाई ॥
 तव मोहि कहँ जमि देव रजाई । सोइ करिहौं रघु वीर-दोहाई ॥
 सहज सनेह^३ राम लखि तासू । सग लीन्ह गुह हृदय हुलासू ॥
 पुनि गुह ग्याति बोलि मव लीन्हे । करि परितोष विदा तव कीन्हे ॥

दो०—तव गनपति मिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माव ।

सरसा अनुज-सिय सहित वन गवनु^५ कीन्ह रघुनाथ ॥१०४॥

तेहि दिन भयेउ विटप तर बासू । लपन सरसा सब कीन्ह सुपासू ॥
 प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराजु दीख प्रभु जाई ॥
 ४ सचिव^६ सत्य श्रद्धा^७ प्रिय नारी । माधव^८ सरिस मीतु^९ हितकारी^{१०} ॥
 चारि पदारथ भरा भँडारू^{११} । पुन्य प्रदेस देस अति चारू ॥
 छेत्रु अगम गढु^{१२} गाढ^{१३} सुहावा । सपनेहुँ नहिं प्रतिपच्छिन्ह^{१४} पावा ॥
 सेन मकल तीरथ बर वीरा । कलुप-अनीक-दलन^{१५} गनधीरा ॥
 सगमु-सिहासन सुठि सोहा । छत्रु अपयवट^{१६} मुनिमनु मोहा ॥
 चँपर जमुन अरु गग तरगा । देखि होहिं दुख दारिद भगा ॥

दो०—सेवहिं सुकृती साधु सुचि पात्रहिं सब मन काम ।

बदी वेद-पुरान-गान कहहिं विमल गुन ग्राम^{१७} ॥१०६॥

१ सूर्यकुल मे मणि मन्त्र द्युति वाले हे जो २ पत्तों की क्षोप
 ३ असाधारण प्रेम ४ चूँच ५ प्रात काल की शौच, सध्या वदन इत्या
 ६ स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोप, राज्य, दुर्ग और बल ये सात राज्य चि
 है । ६ मन्त्री ७ इन्द्रपर पर दृढ विश्वास ८ वेणी माधव ९ मित्र १० हित
 ११ कोप १२ किला १३ मजबूत १४ वैरी १५ पाप की सेना के
 करने वाले १६ अक्षयवट का पेड १७ गुणों का समूह ।

कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ । कलुप पुजकु जर-मृग राऊ ॥
 तीरथपति देखि सुहावा । सुखसागर रघुवर सुखु पावा ॥
 हेसियलपनहि सरसहि सुनाई । श्रीमुख तीरथ-राज-वडाई ॥
 रे प्रनाम, देखत वन बागा । कहत महातम अति अनुरागा ॥
 ई निधि आड मिलोकी बेनी । सुभिरत सकल सुमगल-देनी ॥
 दित नहाड कीन्हि सिवसेवा । पूजि जथाविधि तीरथदेजा ॥
 प्रभु भरद्वाज पहि आए । करत दडवत मुनि उर लाए ॥
 ने मन मोद न कछु कहि जाई । ब्रह्मानन्दरासि जनु पाई ॥

गी०—दीन्हि असीस, मुनीस उर, अति अनदु अस जानि ।

लोचनगोचर सुकृतफल, मनहुँ किए विधि आनि ॥१०७॥

सल प्रसन्न करि आमन दीन्हे । पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे ॥
 द मूल फल अकुर नीके । दिए आनि मुनि मनहुँ अमीके ॥
 य-लपन-जन-महित सुहाए । अति रुचिराम मूल फल ग्राए ॥
 निगतस्त्रम राम सुरारे । भरद्वाज मृदु वचन उचारे ।
 जु सुफल तपु तीरथ त्याग । आजु सुफल जपु जोग निराग ॥
 कलसकल सुभ साधन-साजू । राम तुम्हहि अवलोकत आजू ॥
 म अवधिसुभ अग्रधि नदूजी । तुम्हरेँ दरस आस सब पूजी ॥
 न करि कृपा देहु वर गहू । निज पद-सरसिज सहज मनेहू ॥

गी०—करम वचन मन छाँडि छल, जब लागि जनु न तुम्हार ।

तन लागि सुखु सपनेहुँ नही, किए कोटि उपचार ॥१०८॥

१ पापों के समूह रूप पापों के लिये तिह समान (रूपकालकार)
 २ विपादराज ३ अरने मुँह से ४ (महात्म्य) फल ५ त्रिप्रेणी ६ तीर्थराज
 ७ श्यामा ८ ब्रह्मानन्द का समूह ९ अर्पणों के सामने १० पुण्य वा फल
 ११ अमृत के १२ स्वस्थ १३ सम्पूर्ण शुभ साधनों वा सामान १४ सपूर्ण
 १५ मों की सीमा, परमानन्द की सीमा १६ तदधीर ।

सुनि मुनिवचन रामु सकुचाने । भाव भगति आनन्द अघाने ।
 तव रघुवर मुनि सुजस सुहावा । कोटि भौंति कहि सबहि सुनावा ।
 सो वड मो मव-गुन-गन-गोहू । जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू ।
 मुनि रघुवीर परसपर नवहीं । वचन-अगोचर सुख^१ अनुभवहीं ।
 एह सुधि पाइ प्रयागनिवासी । बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी ।
 भरद्वाज आस्रम सब आण । देखन दसरथ-सुअन सुहाण ।
 राम प्रनाम कीन्ह सब काहू । मुदित भए लहि लोचनलाहू ।
 देहि असीस परम सुखु पाई । फिरे सराहत सुन्दरताई ।

दो०—राम कीन्ह विस्राम निसि, प्रात प्रयाग नहाइ ।

चले सहित सिय लपन जनु, मुदित मुनिहिं सिरनाइ ॥१००॥

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं । नाप कहि कोहि मग जा ।
 मुनिमन विहँसि राम सन कहहीं । सुगम^३ सकल मग तुम्ह ।
 साथ लागि मुनि सिय बोलाए । सुनिमन मुदित प^५ ।
 सबन्हि राम पर प्रेम अपारा । सकल कहहिं 'मगु^४ दीखहमा ।
 मुनि बटु चारि सग तब दीन्हे । जिन्ह बहु जनम सुकृत सब के ।
 करि प्रनामु रिपि आयसु पाई । प्रमुदित^६ हृदय चल रघुवा ।
 ग्राम निकट जब निकसहिं जाई । देखहि दरसु नारिनर धाई ।
 होहिं सनाथ जनमफलु पाई । फिरहि दुखित मनु सग पठाई ।

दो०—बिदा किए बटु विनय करि, फिरे पाइ मनकाम^८ ।

उतरि नहाए जमुनजल, जो सरीरसम स्याम ॥११०॥

मुनत तीरवासी नरनारी । घाण निज निज काज बिसा ।
 लपन-राम-सिय-सुन्दरताई । देखि करहिं निज भाग्य बड ।
 अति लालसा^९ सबहि मनमाहीं । नाउँ गाउँ बूभूत सकुचा ।

१ भक्ति भाव और आनन्द में परिपूरित २ अकथनीय सुख
 ३ सान ४ रास्ता ५ प्रसन्न ६ दौडकर ७ मोहित होकर ८ अति
 ९ इच्छा ।

तिन्ह भहुँ वयनिरध सयाने । तिन्हकरि जुगुति रामु पहिचाने ॥
 कलकथा तिन्ह सर्वाहिँ सुनाई । वनहि चले पितुआयसु पाई ॥
 नि सनिपाद सकल पछिताही । रानी राय कीन्ह भल नाही ॥
 हि अबसर एकु तापस आवा । तेजपुज लघुवयस मुहावा ॥
 नि अलपित^१ गति वेपविरागी । मन क्रम वचन राम अनुरागी ॥

श्लो०—सजल नयन तन पुलकि, निज इष्टदेव पहिचानि ।

परेउदड जिमि धरनि तल^२, दसा न जाइ बरसानि ॥१११॥

स सप्रेम पुलकि उर लावा । परम रक जनु पारस पावा ॥
 नहुँ प्रेम परमारथ दोऊ । मिलत वरें तन कह सब कोऊ ॥
 हरि लपन पायन्ह सोड लागा । लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा ॥
 नि मिय-चरन धरि धरि सीसा । जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा ॥
 तिन्ह निपाद दडवत तेही । मिलेउमुदित लरि रामसनेही ॥
 अत नयनपुट^३ रूप पियूसा^४ । मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूसा ॥
 पितु मातु कहहु सरि कैसे । जिन्ह पठए वन वालक ऐसे ॥
 म-लपन सिय रूप निहारी । होहिँ सनेह विकल नरनारी ॥

श्लो०—तव रघुवीर अनेक विधि, सखहि सिखावन दीन्ह ।

रामरजायसु सीस धरि, भवन गवनु तेइ कीन्ह ॥११२॥

नि सिय राम लपन कर जोरी । जमुनहिँ कीन्ह प्रनामु बहोरी ॥
 जे मसीय मुदित दोड भाई । रवितनुजा कै करत बडाई ॥
 धेक अनेक मिलहिँ मगु जाता । कहहि सप्रेम देखि दोड भ्राता ॥
 लपन सब अग तुम्हारे । देखि सोचु अति हृदय हमारे ॥
 राग चलेहु पयादेहिँ पाएँ । ज्योतिपु भूठ हमारेहिँ भाएँ ॥
 गमु पय गिरि कानन भारी । तेहि महुँ साथ नारि सुकुमारी ॥
 रि केहरि^५ वन जाइ न जोई । हम सँग चलहिँ जो आथमुहोई ॥

१ जो दिग्याई न दे २ शृङ्गी पर ३ नेत्ररूप होना भरके ४ अमृत
 अनुनाची ५ सिंह ।

जाव जहाँ लगी तहँ पहुँचाई । फिरव बहोरि तुम्हहि सिरु नारी

दो०—एहि निधि पूँछहि प्रेम उस, पुलकगात जलु नैन ।

रूपासिन्धु फेरहि तिन्हहिं, कहि निनीत मृदु बैन ॥११॥

जे पुर गाँव बसहि मग माहीं । तिन्हहिं नाग-सुर-नगर सिहाहीं

केहि सुकृतो केहि घरी बसाए । धन्य पुन्यमम परम सुहाए

जहँ जहँ गमचगन चलि जाहीं । तिन्ह समात अमरावति नाहीं

पुन्यपुज मग निकट-निगामी । तिन्हहिं सराहहिं सुर-पुर-बासी

जे भरि नयन त्रिलोकहिं रामहिं । सीता-लपन-सहित घनस्यामाहिं

जे सर सरित गम अचगाहहिं । तिन्हहिं देव-सर-सरित सराहहिं

जेहि तरुतर प्रभु वैठहिं जाई । कराहि कलपतरु तासु उड़ाई

पगसि गम पद-पदुम परागा । माननि भूमि भूरि निज भागा

दो०—झाँह करहिं घन विबुधगन, बरपहिं सुमन सिहाहिं ।

रैसत गिरि वन विहंग मृग, रामु चले मग जाहिं ॥११॥

सीता-लपन-सहित रघुराई । गाँव निकट जब निकसहिं जाई

सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी । चलहि तुरत गृह-काज बिसारी

राम लपन सिय-रूप निहारी । पाइ नयनफलु होहि सुसारी

मजल त्रिलोचन पुलक सरीग । सब भए मगन देखि दोउ बाँधे

बरनि न जाइ दमा तिन्ह केरी । लहि जनु रकन्हि सुर-मनि-देरी

एकन्हि एक बोलि मित्र देही । लोचन-लाटु लेहु छन एही

रामहि देखि एक अनुरागे । चितवत चले जाहि सग लागे

एक नयनमग छवि उर आनी । होहि मिथिल तन मन बरबानी

दो०—एक देखि बटझाँह भलि, डसि मृदुल तन पात ।

कहहिं गवाँइअ छिनुक श्रम, गवनव अचहि कि प्रात ॥१॥

एक कलस भरि आनहिं पानी । अँचइअ^१नाथ कहहिं मृदुवाणी

१ स्नान करत हें २ कोस्तुभ-भणियों का डेर ३ दूर कीजिये ४ आ

मन कीजिये ।

ने प्रिय वचन प्रीति अति देखी । राम कृपालु सुसील विमेखी ॥
 शो नो क्षमित सीय मन माँहीं । धरि क विलबु कीन्ह बटछाँहीं ॥
 देत नारिनर देखहि सोभा । रूप अनूप नयन मन लोभा ॥
 कटक सब मोहहिं चहुँ श्रोरा । रामचन्द्र मुख-चद चकोरा ॥
 न-तमाल-चरन तनु सोहा । देखत कोटि मदन-मनु मोहा ॥
 मिनि-चरन लपनु सुठि नीके । नरगमिर सुभग भावते जी के ॥
 निपट कटिन्ह कसे तूनीरा^२ । मोहहिं कर कमलनिधनु तीरा ॥

श्लो०—जटा मुकुट मीमनि सुभग, उर भुज नयन त्रिमाल ।

सरद परव त्रिधु प्रदन^३ वर लमत स्पेद कन-जाल ॥११६॥

रनि न जाइ मनोहर जोरी । मोभा बहुत, थोरि मति मोरी ॥
 म-लपन-सिय-सुन्दरताई । सब चितवहि चित मन मति लाई ॥
 के नारि नर प्रेम पिआसे । मनहुँ मृगी मृग देखि दिआसे ।
 यममीप ग्राम तिय जाहीं । पूँछत अतिसनेह मकुचाहीं ॥
 रि नार सब लागहिं पाएँ । कहहि वचन मृदु सरल सुभाएँ ॥
 लकुमारि प्रिनय हम करहीं । तिय सुभाय कहु पूँछत डरहीं ॥
 गमिनि अविनय छमबिहमारी । निलगु न मानन जानि गवाँरी ॥
 लकुँ थर दोड सहज सलोने । इन्ह तें लहि दुति मरकत सोने ॥

श्लो०—स्यामल गौर किसोर वर, सुन्दर सुरमा अयन ।

मरु-सर्परी-नाथ-सुरज, सरु-मरोरुह नयन^४ ॥११७॥

दि मनोज लजावनिहारे^५ । सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे ॥
 नि मनेहमय मजुल वानी । मकुची सिय, मन गहँ मुसुकानी ॥
 नहिं विलोकि विलोकति धरनी । दुहुँ सकोच सकुचति धरपरनी^६ ॥

१ विजली का सा वर्ण २ तरकस ३ शरद पूर्णमा के चन्द्र मदन
 चरन ४ डीठता ५ सुन्दरता का घर ६ शरद ऋतु में पूरे हुए कमल
 समान सु दर नेत्र ७ करोड़ों कामदेवों को एगिजत करने वाले / सुंदर
 वाली ।

मकुचि सप्रेम बाल मृग-नयनी । बेली मधुर वचन पिऊयनी ।
सहज सुभाय सुभग तन गोरे । नामु लपनु लघुदेवर मोरे ।
बहुरि वदनविधु अचल^१ ढाँकी । पियतन चितै भौह करि नाँकी ।
रजजन^२ मजु तिरीछे नैननि । निजपतिकहेउतिन्हहिंसियसैननि ।
भई मुदित सनु ग्रामवधूटां । रँकन्ह रायरासि जनु लूटां ।

दो०—अतिसप्रेम सिय पाँय परि, बहु विधि देहि असीस ।

सदा सोहागिनि होहु तुम्ह, जवलगि महि अहिसीस ।

पारवतीसम पतिप्रिय होहू । देवि न हम पर छाँड्य छोहू ।
पुनि पुनि विनय करिअ कर जोरा । जौ एहि मारग फिरिअ वहाँरा ।
दरसनु देव जानि निज दासी । लखी सीय सब प्रेमपिआसी ।
मधुरवचन कहि कहि परतोपीं । जनु कुमुदिनी कौमुदी पोपीं ।
तवहिं लपन रघुवररूप जानी । पूँछेउ मगु लोगन्हि मृदुवाने ।
सुनत नारिनर भए दुखारी । पुलकित गात, विलोचन वारी ।
मिटा मोद, मन भए मलीने । विधि निधि दीन्हिलेत जनुत्री ।
समुझि करमगति वीरजु कीन्हा । सोधि सुगममगु तिन्ह कहि वी ।

दो०—लपन-जानकी-सहित तव, गवनु कीन्ह रघुनाथ ।

फेरे सब प्रिय वचन कहि, लिए लाइ मन माथ । ११

फिरत नारिनर अति पछितार्ही । दैवहि दोपु देहि मन मा ।
सहित विपाद परस्पर कहही । विधिकरतव उलटे सब अह ।
निपट निरकुस^१ निठुर^२ निसकू । जेहिंससिकीन्ह सरुज^३ सक ।
रूप कलपतरु, सागरु सारा । तेहि पठण वन राजकुम ।
जौ पै इन्हहिं दीन्ह वननासू । कीन्ह बादि विधि भोगविल ।
ए विचरहिं मगु विनु पटत्राना^४ । रचे बादि विधि वाहन ना ।

१ थायल की सी भाषा घोरने वाली २ बर ३ राजा पक्षीके
नेत्र ४ कृपा ५ प्रेम चाहने वाली ६ फोड़, सजाना ७ थिल्लु
८ (निष्ठुर) कठोर ९ निडर ११ रोगी १२ जूता ।

महि परहिं ड़ासि कुसपाता । सुभग सेज^१ कत सृजत विधाता ॥
 वर-वास इन्हहिं विधि दीन्हा । बलधाम रचि रचि स्रमु कीन्हा ॥
 दो०—जो ए मुनि पट-वरि^२ जटिल^३, सुन्दर सुठि सुकुमार ।
 विविध भाँति भूपन वसन, वाढि किए करतार ॥ १०० ॥
 कन्द मूल फल खाही । वादि सुधादि असन^४ जग माँहीं ॥
 कहहिं ए सहज सुहाए । आप प्रकट भए निधि न बनाए ॥
 लगी वेद कही विधि करनी । स्रजन नयन मन गोचर^५ वरनी ॥
 बहु खोजि भुवन वसचारी । कहँ अस पुरुष, कहाँ अमनारी ॥
 कहिं देखनिप्रि मनु अनुरागा । पटतर^६ जोग बनावड लाग़ा ॥
 इन्ह बहुत स्रम एक न आए । तेहि ड़रिपा^७ वन आनि दुराए ॥
 कहहिं हम बहुत न जानहिं । आपुहिं परम धन्य करि मानहिं ॥
 पुनि पुन्यपु ज हम लेग्ये । जे देखहिं, देखिहहिं^८ जिन्ह देखे ॥
 दो०—एहि विधि कहि कहि वचन प्रिय, लेहि नयन भरि नीर ॥
 किमि चलिहहिं मारग अगम, सुठि सुकुमार सरीर ॥ १०१ ॥
 रि सनेह निकल वस होही । चकई साँभ समय जनु सोही ॥
 पद कमल कठिन मगु जानी । गहवरि हृदय^९ कहँ वर वानी ॥
 सत मृदुल चरन अरनारे^{१०} । मकुचति महि जिमि हृदय हमारे ॥
 जगनीम इन्हहिं वनु दीन्हा । कस न सुमनमय मारगु कीन्हा ॥
 माँगा पाइअ विधि पाही । परसिअहि मरिअ आँसिन्ह माही ॥
 नरनारि न अवसर आए । तिन्ह सिय रामु न देखन पाए ॥
 ते सुरूप नूझहिं अकुलाई । अत्र लगी गए कहाँ लगी, भाई ॥
 नरप धाइ निलोकहिं जाई । प्रमुदित फिरहिं जनमफलु पाई ॥
 दो०—अनला बालक वृद्धजन कर मीजहिं पढ़िताहिं ।
 होहिं प्रेम वस लोग इमि, गम जहाँ जहँ जाहिं ॥ १२० ॥

^१ सुन्दर सीया ^२ मुनिया ^३ समान उखधारी ^४ जा जटा रगये हाँ
 भाजन ^५ प्रथम ^६ बराबर वा ^७ जग ^८ देखे ^९ गद्गद् हृदय
^{१०} ^{११} ।

गाँव गाँव अम होइ अनन्दू । देखि भानु-कुल-कैरव-चद्रू
 जे यह समाचार सुन पावहि । ते नृपरानिहिं दोषु लगावहि
 कहहिं एक अति भल नरनाहू । दीन्ह हमहि जेइ लोचनलाहू
 कहहि परसपर लोग लोगार्ड । बातें सरल सनेह सुहाई
 ते पितु मातु वन्य जिन्ह जाण । धन्य सो नगर जहाँ ते आए
 धन्य सो देसु सैलु^२ वन गाउँ । जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाउँ
 सुरा पायेउ विरचि रचि तेही । ए जेहि के मत्र भाँति सनेह
 राम-लग्न-पथि^३ कथा सुहाई । रही सकल मग-कानन छाई

दो०—एहि विधि रघु-कुल-कमल-रवि, मग लोगन्ह सुरा

जाहिं चले देखत विपिन, सिय सौमित्र-समेत ॥१२॥

आगेँ रामु लपन बने पाछे । तापसवेप विराजत काँचे
 उभय^४ बीच सिय मोहति कैसे । ब्रह्म-जीव-विच माया जैसे
 बहुरि कहौ छवि जसि मन बसई । जनु मधु-मदन-मध्य^५ रति ल
 उपमा बहुरि कहौं जिअ जोहा । जनु बुध विधु विच रोहिनिसे
 प्रभु-पद-रेख बीच विच सीता । बरति चरन मग चलत सभी
 सीय राम पद-अक बराँ । लपन चलहि मगु दाहिन व
 राम-लपन-मिय प्रीति सुहाई । बचन अगोचर, किमि कहि
 मग मगमगन देखि छवि होही । लिए चोरि चित राम-पदो

दो०—जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय, मियममेत दोउ भ

भय-मगु-अगमु अनदुतेइ, विनु समरहे सिराइ ॥

अजहुँ जासु उर सपनेहु काऊ । बसहि लपन-सिय-राम बटा
 राम-धाम-पथ^६ पाइहि सोई । जो पथ पाव कबहुँ मुनि

१ सूर्यकुल रूपा कुमोदिनी की चन्द्रमा के समान प्रसन्न कर
 २ (शैल) पर्वत ३ राहगीर बटोही ४ दोनों ५ बसन्त और का
 बीच में ६ रास्तागीर ७ पार होगये ८ बटोही ९ स्वर्ग का रास्ता

तत्र रघुवीर स्रमित सिय जानी । देखि निकट बटु सीतल पानी ॥
 तहँ वसि कद मूल फल खाई । प्रात नहाइ चले रघुराई ॥
 देखत वन सर सैल सुहाण । बालमीकि आत्मम प्रभु आण ॥
 राम दीस मुनिवास सुहावन । सुदर गिरिकाननु जलु पावन ॥
 परनि सरोज विटप वन फूले । गु जत मजु मधुप^१ रम-भूले ॥
 ग मृग विपुल कोलाहल करहीं । विरहित^२ त्रैर मुदित मन चरहीं ॥

श्लोक—सुचि सुदर आत्ममु निरग्नि^३, हरपे राजिवनै^४ ।

मुनि रघु पर आगमनु, मुनि, आगे आयेउत्तेन ॥ १२७ ॥

मुनि कहँ राम दडनत^५ कीन्ता । आमिरवाटु विप्रवर दीन्हा ॥
 देखि राम छत्रि नयन जुडाने^६ । करि मनमानु आत्ममहि आने ॥
 मुनिवर अतिथि प्रानप्रिय पाण । कद मूल फल मधुर मगाण ॥
 सिय मौमित्रि राम फल खाण । तव मुनि आसन णि सुहाण ॥
 बालमीकि मन आतँडु भारी । मगलमुरति नयन निहारी ॥
 तव कर कमल-जोरि रघुराई । बोले वचन स्रजन-सुर दाई^७ ॥
 तुम्ह त्रिकाल-दरसी मुनि नाथा । विश्व बदर^८ जिमि तुम्हरेँ हाथा ॥
 अस कहि प्रभु मच कथा वरानी । जेहि जेहि भौति दीन्ह वन रानी ॥

श्लोक—तात-वचन पुनि भातु हित भाइ भरत अस राउ ।

मां कहँ दरम तुम्हार प्रभु, मडु मम पुन्य प्रभाउ ॥ १०६ ॥

देखि पाँच मुनिराय तुम्हारे । भण सुकृत सब सुफल हमारे ॥
 अत्र कहँ राउर आयसु होई । मुनि उद्वेग^९ न पावै कोई ॥
 मुनितापस^{१०} जिन्हतेँ दुखलहहीं । ते नरेस विनु पापक दहहीं ॥
 मगल-भूल त्रिप्र परितोषू । दहै कोटि कुल भू-सुर-रोषू ॥
 अस जियजानि कहिअ सोडठाऊँ । सिय-सौमित्र-सहित जहँ जाऊँ ॥

१ भौरा २ बिना ३ अत्रकर ४ कमल के फूल के मद्दश नेत्र वाले

(बहु०) ५ प्रणाम ६ शीतलद्रुण ७ कानों को सुख देने वाल ८ त्रै

९ कष्ट १० तपस्वी ।

तहँ रचि रुचिरपरन-चून-साला^१ । वास करौं कछु काल कृपाला ॥
 महज सरल सुनि रघुचरबानी । साधु साधु बोले मुनि ग्यानी ॥
 कस न कहहु अस रघु-कुल-केतू । तुम्ह पालक सन्तत स्मृतिसेतू^२ ॥
 छ०—स्मृति-सेतु-पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी ।
 जो सृजति जगु पालति हरति रूप पाइ कृपानिधान की ॥
 जो सहसमीसु अहीसु^३ महि-वरु लपनु स-चराचर धनी ।
 सुरकाज बरि नरराज-तनु चले दलन^४ रल निसिचर-अनी^५ ॥

सो०—राम सरूप तुम्हार बचनअगोचर बुद्धि पर ।

अवगति^६ अकथ^७ अपार नेतिनेति नित निगम कह ॥ १२७ ॥

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे । विधि-हरि-संभु-नचावनिहारे ॥
 तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा । अउरु तुम्हहि को जाननि हारा ॥
 सोड जानइ जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहि तुम्हहि हांड जाई ॥
 तुम्हरिहि कृपा तुम्हहि रघुनंदन । जानहि भगत भगत उर चदन ॥
 चिदानन्दमय^८ देह तुम्हारी । विगतविकार जान अधिकारी ॥
 नरतनु बरहु सत-सुर-काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
 राम देखि मुनि चरित तुम्हारे । जड मोहहि, बुब होहि सुरारे ॥
 तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा । जस काछिअ तस चाहिअ नाँचा ॥

दो०—पूछेहु मोहि कि रहौं कहँ, मै पूछत सकुचाउ ।

जहँ न होहु तहँ देहु कहि, तुम्हहि दिग्यावौं ठाउँ ॥ १२८ ॥

मुनि मुनि बचन प्रेमरस-माने । सकुचि राम मनमहुँ मुसुकाने ॥
 बालमीकि हँमि कहहि बहोरी । वानी मधुर अमिअरस बोरी ॥
 सुनहु राम अब कहौं निकेता । जहाँ बसहु सिय-लपन-समेता ॥
 जिन्ह के लयन समुद्र समाना । कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥

१ पत्ते और तिनकों का घर २ हमेशा वेद की मर्यादा पालने वाले
 हो ३ मन्त्र है स्त्रि जिसके पेमा सपौं वा राजा ४ नष्ट करने को ५ दुष्ट
 निशाचरों की सेना ६ जो जाना न जाय ७ जो कहा न जाय ८ सर्वदा
 आनन्द म रहने वाला ।

भरहिं निरतर होहिं न पूरे । तिन्हके हिय तुम्ह कहँ गृह रुरे^१ ॥
लोचन चातक जिन्ह करि रापे । रहहि दरसजलधर अभिलाषे^२ ॥
निरदरहिं सरित सिन्धु मर भारी । रूपविंदु-जल होहिं सुरपारी ॥
तिन्ह के हृदयसदन सुरदायक । बसहु बधु सिय सह रघुनायक ॥

द०—जम तुम्हार मानम विमल हमिन जीहा^३ जासु ।
मुकुताहल गुनगन चुनै राम बसहु हिय तासु ॥१२९॥

प्रभु प्रसाद^४ सुचिसुभगसुप्रासा । मादर जासु लहै नित नामा^५ ॥
तुम्हहि निरोदित भोजन करही । प्रभुप्रसाद पट भूपन धरही ।
सीम नग्रहिं सुग-गुरु द्विज देखी । प्रीतिनहित करि विनय विसेली^६ ॥
कर नित करहि रामपद पूजा । रामभरोस हृदय नहि दूजा ॥
मंत्रराजु^७ नित जपहिं तुम्हारा । पूजहिं तुम्हहिं सहित परिपारा ॥
तरपन होम करहिं विधि नाना । विप्र जिवाँइ देहिं बहु दाना ॥
तुम्हते अधिक गुराहिं जियजानी । सकल भाव सेरहि मनमानी ॥

गोहा—मनु करि साँगहि एक फलु राम चरन रति होउ ।
तिन्हके मनमन्दिर बसहु, सिय रघुनन्दन नोउ ॥१३०॥

काम मोघ मद मान न मोहा । लोभ न द्योभ न राग न द्रोहा ॥
जिन्हके कपट दम्भ नहिं माया । तिन्हके हृदय बसहु रघुगया ॥
मन के प्रिय सनके हितकारी । दुरस सुग सरिम प्रसमा गारो ॥
कहहिं मलयप्रिय वचन विचारी । जागत सोरत सरन तुम्हारी ॥
तुम्हहिं छाँडि गति दूसर नाहीं । राम बसहु तिन्हके मन मारी ॥
जननीमम जानहिं परनारी । धनु परात्र निपते विप भारी ॥
जे हरपहि परसम्पति देखी । दुरित होहिं परनिपति निसेली ॥

१ उत्तम २ दानन रूप दादला की आज्ञा ३ सुन्दरता रूपी जल की
४ दे ५ जीम (जिह्वा) ५ आपकी वृषा ६ नार ७ महामय

जिन्हहि राम तुम प्रान पियारे । तिन्ह के मन सुभसदन तुम्हारे ॥
दोहा—स्वामि सरा पितु मातु गुरु, जिन्हके मव तुम्ह तात ।

मनमदिर तिन्हके वमहु, सीय सहित दोउ भ्रात ॥१३१॥
अवगुन तजि सबके गुन गहहीं । प्रिप्र-धेनु-हित सकट^१ सहहीं ॥
नीतिनिपुन जिन्हकइजग लीका^२ । घरतुम्हार तिन्ह कर मनु नीका ॥
गुन तुम्हार ममुमै निज दोसा । जेहि मवभाँति तुम्हार भरोसा ॥
राम भगत प्रिय लागहि जेही । तेहि उर वसहु सहित वैदेही ॥
जाति पाँति धनु वरमु बडाई । प्रिय परिवार सदन-सुरदाई^३ ॥
मव तजि तुम्हहि रहै लउ लाई । तेहि के हृदय रहहु रघुराई ॥
मरगु नरकु अपनरगु^४ समाना । जहँ तहँ देखे वरे धनुवाना ॥
करम-वचन मन राउर चेर। राम करहु तेहि के उर डेर ॥

दोहा—जाहि न चाहिय करहुँ कछु, तुम्ह मन सहज सनेहु ।

वमहु निरतर तासु मन मो राउर निज गेहु ॥१३२॥
णहि प्रियि मुनिपर भवन देग्याण । वचन सप्रेम राममन भाए ॥
कह मुनि सुनहु भानु-कुल-नायक । आन्रमुकहौ समय-सुरदायक ॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू । तहँ तुम्हार सबभाँति मुपासू ॥
मैलु-सुहावन^५ कानन चारू । करि-केहरि-मृगविहँग विहारू^६ ॥
नदी पुनीत^७ पुरान वर्यानी । अत्रिप्रियाञ्जनिज-तप प्रल-आन^८ ॥
सुरसरिधार नाउँ मन्दाकिनि । जो सब-पातक-पोतक-डाकिनि ॥
अत्रि आदि मुनि-वर बहु वमही । करहि जोग जप तप तन कसही ॥
चलहु सफल स्म^९ सब कर क/हू । राम देहु गौरव^{१०} गिरि वरहू ॥

१ कष्ट २ गणना ३ सुख देने वाला घर ४ मोक्ष ५ आराम, सुभीत
६ सुन्दर पर्वत, ७ विहार करते हैं, प्रचरने ह ८ पवित्र ९ मेहनत
१० बडाई ।

❀ महर्षि अत्रि की पतिव्रता स्त्री अनुसूआ (ऋक्ष की पुत्री) तप के प्रभाव से गंगाजी की धार मन्दाकिनी को वृद्ध पति के स्नानार्थ यहाँ लाई कि उनको कष्ट न हो ।

दो०—चित्रकूट-महिमा अमित कही महामुनि गाइ ।

आइ नहाए सरित वर सिय समेत दोउ भाइ ॥१३३॥

रघुवर कहेउ लपन भल घाट । करहु कतहु अब ठाहर ठाट ॥

लपनु दीस पय^१ उतर करारा । चहुँ दिसि फिरेउ धनुषजिमि नारा^२ ॥

४ननी पनच^३ सर सम दम^४ दाना । सकल कलुष कलिसाउज^५ नाना ॥

चित्रकूट जनु अचल^६ अहेरी^७ । चुकै न घात मार मुठभेरी^८ ॥

अस कहि लपन ठाँव देउरावा । थल विलोकि रघुवर मुग्र पावा ॥

रमेउ^९ राममनु देउन्ह जाना । चले सहित सुरपति परधाना ॥

कोल किरात-चेप सन आये । रचे परन-नृन-सदन-सुहाए ॥

रगनि न जाहिं मजु दुइ साला । एक ललित लघु एक विसाला ॥

दो०—लपन-जानकी-सहित प्रभु, राजत रुचिर निकेत^{११} ।

सोह मदन^{१२} मुनिवेप जनु, रति रितुराज-समेत^{१३} ॥१३४॥

अमर नाग किन्नर दिसि-पाला । चित्रकूट आए तेहि काला ।

राम प्रनामु कीन्ह भव काऊ । मुदित देव लहि लोचन लाहू ॥

हरपि सुमन कह देव-समाजू । नाथ मनाथ भए हम आजू ॥

करि निनती दुरा दुमह सुनाए । हरपित निज निज सदन मिधाए ।

चित्रकूट रघुनन्दनु छाए^{१४} । समाचार सुनि सुनि मुनि आए ॥

आवत देखि मुदित मुनिवृन्दा । कीन्ह दडगत रघु-कुल-चन्दा^{१५} ॥

मुनि रघुवरहिं लाइ उर लेहीं । मुफल^{१६} होन हित आमिपदेहीं ॥

१ टारने का प्रयत्न २ जल ३ पयस्विनी ४ प्रयचा ५ समता, इन्द्रियों का जीतना ६ कलियुग व पाप विनाश है ७ अटल ८ शिकारी ९ नम्ररीस १० मन एग नाना ११ सुन्दर घर १२ कामदेव १३ रति और वसत प्रलु सहित १४ बसे है १५ रघुकुल म अष्ट १६ अपना ध्यान सत्य होने को ।

* नदी, उस धनुषरूपी नाल (पयस्विनी नदी) की प्रयचा रूप है, सम, दम, नाग जाग है, भाँति भाँति के कलियुग के सम्पूर्ण पाप लक्ष्य है ।

सिय-मोमित्रि-राम ह्यवि देवहिं । मा'यन' सकल मफल कर लेवहिं
दो०—जयाजोग मनमानि प्रभु, निदा किए मुनिवृ द' ।

करहिं जोग जग जाग' तप, निज आत्ममति मुद्धद ॥१३५
यह सुधि कांल किरातिन्ह पाई । हरपे जनु नवनिधि घर आई
कद मूल फल भरि भरि दोना । चले रक जनु लटन सोना
तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउभाता । अपर तिन्हहिं पृछहिं मगु जाता
कहत सुनत रघुवीर-निकाई' । आइ सवन्हि देखे रघुगई
करहिं जोहार भेंट धरि आगे । प्रभुहिं विलोकहि अति अनुरागे
चित्र लिग्ये जनु जहँ तहँ ठाढे । पुलक सरीर, नयन जल वाडे
राम मनेह-मगन सब जाने । कहि प्रिय वचन सकल सनमाने
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी । वचन विनीत कहहिं कर जोरी

दो०—अव हम नाथ सनाथ मव, भए देखि प्रभुपाय ।

भाग हमारे आगमनु, राउर कोमलराय ॥ १३६

धन्य भूमि वन पथ पहारा । जहँ जहँ नाथ पाउ तुम धारा
वन्य विहंग' मृग काननचारी । मफल जनम भए तुम्हहिं निहार
हम सब धन्य सहित परिवारा । दीरु दरसु भरि नयन तुम्हार
कीन्ह वासु-भल ठाउँ विचारी । इहाँ सकल रितु रहव सुखारी
हम सब भौंति करवि सेवकाई । करि केहरि अहि वाघ वराई
वन वेहड गिरि कदर खोहा । मव हमार प्रभु पग पग जोहा
जहँ तहँ तुमहि अहेर' १ खेलाउव । सरनिरम्बर' २ भल ठाउँ देखाउ
हम सेवक परिवार समेता । नाथ न सकुचव आयसु देता

दो०—बेदवचन-मुनिमन-अगम, ते प्रभु करुनाअचन ।

वचन किरातन्ह के सुनत, जिमि पितु वालक-बचन ॥१३७

१ उपाय २ मुनियों का समूह ३ जज्ञ (यज्ञ) ४ निरकुश ५ द
६ सुन्दरता ७ पक्षी ८ वचाकर ९ देखा हुआ १० शिकार ११ क्षरणा

रामहिं केवल प्रेमु पियारा । जानिलेउ जो जाननिहारा ॥
 राम सकल वन चर^१ तब तोपे^२ । कहि मृदु वचन प्रेम परितोपे ॥
 विदा किए सिरु नाइ सिधाए । प्रभुगुन कहत सुनत घर आए ॥
 एहि मिधि सिय समेत दोउ भाई । वसहिं विपिन-सुर-मुनि सुखदाई ॥
 जब तें आइ रहे रघुनायकु । तबते भयउवनु मगल दायकु^३ ॥
 फूलहिं फलहिं विटप^४ विधि नाना । मजु-बलित-वर-वेलि प्रिताना ॥
 सुर-तरु-भरिस सुभाय सुहाए । मनहुं विबुध वन^५ परिहरि आए ॥
 गुज मजुतर मधुकर^६ खेनी^७ । त्रिबिध बयारि वहै सुगदेनी ॥

दो०—नीलकठ कलकठ^१ सुक, चातरु चक्र चकोर ।

भाँति भाँति बोलहि बिहँग, स्रवनसुखदचितचोर ॥१३८॥

करि केहरि करि कोल कुरगा । त्रिगत वैर^१ विचरहि सब सगा ।
 फिरत अहेर रामछवि देखी । होहिं मुदित मृगवृट विसेखी ॥
 विबुधनिपिन जहँ लगिजग माहीं । देखि रामवनु सकल सिहाहीं ॥
 सुरसरि सरसइ दिनकर-कन्या । मेकलसुता^१ गोदापरि वन्या ॥
 सन सर सिंधु नदी नद नाना । मदाफिनि कर करहि वराना ॥
 उदय अस्त गिरि अरु कैलासू । मदर मेरु सकल-सुर वासू ॥
 सैल हिमानाल आदिक जेते । चित्रकूट जसु गावहिं तेते ॥
 त्रिध^२ मुदित मन सुख नममाई । सम बिनु विपुल^३ बडाईपाई ॥

दो०—चित्रकूट के बिहँग मृग, वेलि विटप वृन जाति ।

पुन्यपुज सन धन्य अस, कहहि देव दिन राति ॥१३९॥

नयनवत रघुबरहिं बिलोकी । पाइजनम फल होहि विसोकी^४ ॥
 परसिचरनरज अचर^५ सुरारी । भए परमपद^६ के अधिकारी ॥

१ वनवासी २ मतुष्ट किया ३ मगल देने वाले ४ वृष ५ वेलों के
 खेनोवे ६ देवताओं के वन ७ भौरा ८ पांति ९ कोयल १० प्रेम से ११
 नर्बदा १२ विन्ध्याचल पर्वत १३ बहुत १४ शोक रहित १५ स्थावर
 १६ मोक्ष ।

सो वनु-सौल सुभाय सुहावन । मगलमय अति-पावन पानन^१ ।
 महिमा कहिअ कवनिविधि तासू । सुरसागर^२ जहँ कीन्हनिवासू ।
 ऋषयपयोधि तजि अबध विहाई । जहँ मिय-लपनु-राम रहे आई ।
 कहिन सकहिसुपमा^३ जसकानन । जौ सत सहस होहिसहसानन^४ ।
 सो मैं बरनि कहौ विधि केही । डाबरकमठ^५ कि मदर लेही ।
 मेवहि लपनु करम-मन-वानी । जाइ न सीलु सनेह बरानी ।

दो०—छिनु छिनु लरि सिय-राम- पद, जानि आपु पर नेह ।

करत न सपनेहुँ लपनु चितु, बधु-मातु-पितु-गेहु ॥१४०॥

रामसग सिय रहति सुरारी । पुर-परिजन-गृह-सुरति^६ विसारी ।
 छिनु छिनुपिय-बिधु-वदनुनिहारी । प्रमुदित मनहुँ चकोर कुमारी ।
 नाह-नेहु^७ नित बढत विलोकी । हरपित रहति दिवसजिमि कोकी ।
 सियमनु रामचरन अनुरागा । अबध सहस सम वन प्रियलागा ।
 परनकुटी प्रिय प्रियतम सगा । प्रिय परिवारु कुरग विहगा ।
 मासु-ससुरमम मुनितिय मुनिवर । असन अमिय सम कदमूल फर ।
 नाथ साथ साथरी सुहाई । मयन सयन-सत सम^८ सुरदाई ।
 लोकप^९ होहि बिलोकत जासू । तेहि कि मोहिंसक विषय-विलास ।

दो०—सुमिरत रामहि तजहिं जन, वृन सम विषय विलासु ।

रामप्रिया जग-जननिमिय, कछु न आचरजु तासु ॥१४१॥

मीय लपनु जेहिविधि सुखु लहहीं । सोइ रघुनाथ करहि मोइकहहीं ।
 कहहिं पुरातन कथा कहानी । सुनहिं लपनु सिय अतिसुखुमानी ।

१ अत्यन्त पवित्रसे भी पवित्र २ सुगंधके समुद्र ३ सुन्दरता ४ हजार
 हैं मुग्य जिनके (शेषनाग) ५ पोखर का कछुआ ६ स्मृति ७ छोड़
 पति प्रेम ९ सैकड़ों कामदेव के सदृश १० दिग्पाल ।

१० प्रलयकाल में भगवान् क्षीर सागर में शेष जी की शैया पर बैठ
 करते हैं, लक्ष्मी पैर दावा करती ह । अत्याचार वं समय क्षीर सागर
 छोड़ जन्म लेकर पृथ्वी का भार उतारते हैं ।

॥ मातु पितु परिजन भाई । भरत-सनेहु-सीलु-मेवकाई ॥
 सिंधु, प्रभु होहिं दुसारी । धीरजु धरहिं कुसमउ विचारी ॥
 ।सियलपनु विकल होइ जाहीं । जिमि पुरुपहिं अनुसर परिछाहीं ॥
 । रघु-गति लखि रघुनदनु । धीर कृपाल भृगत-उर-चदनु ॥
 कहन कहु कथा पुनीता ३ । सुनि सुरगुलहहिं लपनु अरु सीता ॥

दो०—राम-लपन-सीता-सहित सोहत परन निकेत ।

जिमि वासव ४ वस अमरपुर सची जयत समेत ॥१४२॥

गमहिं प्रभु सियलपनहिं कैसें । पलक विलोचन गोलक जैसें ॥
 गहिं लपन सीय रघुवीरहिं । जिमि अवित्रेकी पुरुष सरीरहि ॥
 दे विधि प्रभु वन बसहिं सुखारी । रग-भृग-सुर-तापस हितकारी ॥
 हेउ राम-वन-गमनु सुहावा । मुनहु सुमत्र अवध जिमि आवा ॥
 परेहु निपादु प्रभुहि पहुँचाई । सचित्र सहित रथ देखेसि आई ॥
 जो विकल विलोकि निपादू । कहिन जाइ जम भयेउ विपादू ॥
 राम राम सिय लपन ५ पुकारी । परेउ धरनितल व्याकुल भारी ॥
 गिन गिन दिसि ६ हय दिहिनाहीं । जनु विनु परब विहंग अकुलाहीं ॥

दो०—नहिं तन चरहिं न पिअहिं जलु मोचहि लोचनवारि ।

व्याकुल भयेउ निपाद मत्र रघु-उर-वाजि निहारि ॥१४३॥

रि धीरजु तन कहै निपादू । अत्र सुमत्र परिहरहु विपादू ॥
 सुद पडित परमारथ ज्ञाता ७ । धरहु धीर लखि विमुख निधाता ८ ॥
 विप्रकथा कहि कहि मृदु वानी । रथ बैठारेउ वरजस आनी ॥
 तोरुमिगिल रघु सकै न हाँधी । रघु वर-निरह-पीर उर बाँकी ९ ॥
 वरफराहि मग चलहि न गोरे । जनमृग १० मनहुँ आनि रथ जोरे ॥

१ अनुमण करती है, पाँटे पीछे चलती है २ भक्तों के हृदय को
 ३ अर्थात् ३ पवित्र ४ इन्द्र ५ अज्ञानी ६ दक्षिण दिशा ७ ज्ञानतत्व
 का ज्ञानने वाला ८ उल्टा देव ९ सही भारी १० जगली हिरन ।

अदुकि^१ परहिं फिरिहेरहिं पीछे । रामवियोग विकल दुःख तीक्ष्ण^२ ॥
जो कह रामु लपनु वैदेही । हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही ॥
वाजि विरह गति कहिकिमि जाती । विनुमनिफनिक^३ विकलजेहि भौंती ॥

दो०—भयेउ निपादु विपादवस, देखत सचिव-तुरग^४ ।

बोली सुसेवक चारि तव, दिए सारथी मग ॥१४४॥

गुह मारथिहि फिरे पहुँचाई । विरह विपाद वरनि नहि जाई ॥
चले अवध लेइ गथहि निपादा । होहि छनहिं छन मगन निपादा^५ ॥
सोच सुमत्र विकल दुःखदीना । धिग जीवन रघु-वीर त्रिहीना ॥
रहिहि न अतहु अवमु^६ सरीरु । जसु न लहेउ विछुरत रघुनीरु ॥
भए अजस-अघ-भाजन^७ प्राणा । कवन हेतु नहि करत पयाना^८ ॥
अहह मद मनु अजसर चूका । अजहुँ न हृदय होत दुइ दूका ॥
मौंजि हाथ सिरु धुनि पछिताई । मनहुँ कृपिन^९ वनगसिगवाँई^{१०} ॥
विरद वाँधि वर वीरु कहाई । चलेउ गमर जनु सुभट पराई ॥

दो०—विप्र विवेकी वेदविद^{११} समत साधु सुजाति ।

जिमि धोरै मदपान कर सचिव सोच तेहि भौंति ॥१४५॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पतिदेवता^{१२} करम मन बानी ॥
रहै करमवस परिहगि नाहू^{१३} । सचिव हृदय तिमि दाहन दाहू ॥
लोचन सजल, डीठि^{१४} भइ थोरी । सुनै न स्रवन विकल मति भोरी ॥
सूरहिं अधर लागि मुँह लाटी^{१५} । जिउ न जाइ उर अन्नधिकपाटी^{१६} ॥
विपरन भयेउ न जाय निहारी । मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥

१ गड जाते हैं २ तीक्ष्ण ३ साँप ४ मग्री और घांटे ५ शोक से टूटने का
६ नीच ७ बुराई और पापों से भरे हुए पात्र ८ कूच ९ लोभी १० खोकर
११ वेद का ज्ञाता १२ पति ही जिसका देवता हो १३ स्वामी १४ दृष्टि
१५ मुँह सूर्य जाना या चिपकना १६ सीमारूप त्रिवाड होने से अर्थात्
१४ घपं तक ।

हानि गलानि त्रिपुल मन व्यापी । जम-पुर-पथ सोच जिमि पापी ॥
रचन न थाप हृदय पछिताई । अग्रध काह मैं देखव जाई ॥
रामरहित रथ देखिहि जोई । सकुचिहि मोहि त्रिलोकत सोई ॥

गेहा—घाड पूँछिहहिं मोहि जव विकल नगर नरनारि ।

उतरु देव मैं सवहि तव, हृदय वञ्चु वैठारि ॥१४६॥

पुँछिहहिं दीन दुखित सत्र माता । कहव काह मैं तिन्हहिं विधाता ॥
पूँछिहि जगहिं लपन महतारी । कहिहहुँ कवन सँदेस सुखारी ॥
रामनननि जव आइहि धाई । सुमिरिबन्धु^१जिमि वेनुलगाई^२ ॥
पूँछत उतर देव मैं तेही । गे वनु राम लपनु वैदेही ॥
जोइ पूँछिहि तेहि उतरु देवा । जाइ अवध अव एहु सुखलेवा ॥
पुँछिहहि जगहिं राउ दुख दीना । जिवनु जासु रघुनाथ अधीना ॥
देहौं नतरु वननु मुँह लाई । आयेउँ कुसल कुअर पहुँचाई ॥
सुनत लपन मिय-राम सँदेसू । तन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ॥

गेहा—हृदय न विदरेउ पक^३ जिमि त्रिछुरत प्रीतम-नीर ।

जानत हौं मोहि दीन्ह विधि यह जातना मरीर^४ ॥१४७॥

एहि विधि करत पथ^५ पछिताया । तमसा-तीर तुरत रथु आवा ॥
निद्रा किए करि निनय निपादा । फिरे पाँय परि विकल-विषादा ॥
पैठत नगर सचित्र सकुचाई । जनु मारेसि गुरु-बाम्हन-गाई ॥
बैठि त्रिपुलतर दिगसु गवाँजा । साँझ समयतव अग्रसरु पावा ॥
अग्रप्रवेशु कोन्ह अँधियारे । पैठ भवन रथु राति दुआरे ॥
जिन्ह निन्ह समाचार सुनि पाए । भूपद्वार रथु देखन आए ॥
रनु पहिचानि त्रिकल लरि घोरे । गरहिं गात जिमि आतप^६ओरे^७ ॥
नगर-नारि नर व्याकुल कैसे । निघटत^८ नीर मीनगन जैसे ॥

१ (वाम) यत्र २ नई बिआई ३ गाय ४ वाचड ५ यह शरीर यम
दण्ड महने को ६ घुसते समय ७ गर्मा ८ जोले ९ गतम होने पर ।

अदुकि^१ परहि फिरि हेरहि पीछे । रामवियोग विकल दुख तीछे^२ ॥
जो कह रामु लपनु वैदेही । हिंकरि हिकरि हित हेरहि तेही ॥
वाजि बिरह गति कहिकिमि जाती । विनुमनिफनिक^३ विकलजेहि भौंती ॥

दो०—भयेउ निपादु विपादवस, देखत सचिव तुरग^४ ।

बोलि सुसेवक चारि तव, दिण सारथी सग ॥१४४॥

गुह सारथिहि फिरे पहुँचाई । बिरह विपाद घरनि नहि जाई ॥
चले अवध लेइ रथहि निपादा । होहि छनहि छन मगन निपादा ॥
सोच सुमत्र विकल दुखदीना । धिग जीवन रघु-वीर विहीना ॥
रहिहि न अतहु अधमु^५ सरीरु । जसु न लहेउ विछुरत रघुनीरु ॥
भए अजस-अध-भाजन^६ प्राणा । कवन हेतु नहिं करत पयाना^७ ॥
अहह मद मनु अवसर चूका । अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ॥
मौंजि हाथ सिरु धुनि पछिताई । मनहुँ कृपिन^८ धनरासि गवाँई^९ ॥
विरद वाँपि बर वीरु कहाई । चलेउ समर जनु सुभट पराई ॥

दो०—विप्र विवेकी वेदविद^{१०}, समत साधु सुजाति ।

जिमि धोखे मदपान कर सचिव सोच तेहि भौंति ॥१४५॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पतिवैवता^{११} करम मन बानी ॥
रहै करमवस परिहगि नाहू^{१२} । सचिव हृदय तिमि दाखन दाहू ॥
लोचन सजल, डीठि^{१३} भइ थोरी । सुनै न स्रवन विकल मति भोरी ॥
सूर्यहिं अधर लागि मुँह लाटी^{१४} । जिउ न जाइ उर अथधिकपाटी^{१५} ॥
विचरन भयेउ न जाय निहारी । मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥

१ गह जाते ह २ तीक्ष्ण ३ साँप ४ मत्री और घोडे ५ शोक से टूबहुण
६ नीच ७ उराई और पापों मे भरे हुए पात्र ८ कूच ९ लोभी १० खोकर
११ वेद का ज्ञाता १२ पनि ही जिसका देवता हो १३ स्वामी १४ दृष्टि
१५ मुँह सूर्य जाना या चिपकना १६ सीमारूप किनाह होने से अर्थात्
१४ वर्ष तक ।

हानि गलानि त्रिपुल मन व्यापी । जम-पुर-पथ सोच जिमि पापी ॥
वचन न थाप हृदय पछिताई । अवय काह मै देखव जाई ॥
रामरहित रथ देखिहि जोई । मकुचिहि मोहि त्रिलोकत मोई ॥

दोहा—वाइ पूँछिहहिं मोहि जव, विकल नगर नरनारि ।

उतर देव मै सजहि तज, हृदय वज्रु वैठारि ॥१५६॥

पूँछिहहिं दीन दुषित सज माता । कहवकाह मै तिन्हहि विधाता ॥
पूँछिहि जजहि लपन-महतारी । कहिहहुँ कवन सँदेस सुरपारी ॥
रामचननि जव आइहि धाई । सुमिरि वन्छु 'जिमि धेनुलवाई' ॥
पूँछत उतर देव मै तेही । गे वनु राम लपनु वैदेही ॥
जोइ पूँछिहि तेहि उतर देना । जाइ अवय अज एहु सुसलेवा ॥
पूँछिहहि जजहि राउ दुस दीना । जिवनु जासु रघुनाथ अधीना ॥
देहौ उतर कवनु मुँह लाई । आयेउँ कुमल कुअँर पहुँचाई ॥
सुनत लपन सिय राम सँदेसू । तन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ॥

दोहा—हृदउ न पिदरेउ पक' जिमि निजुरत प्रीतम नीर ।

जानत हौं मोहि दीन्ह विधि यह जातना सरीर' ॥१४७॥

एहि विधि करत पथ पछिताया । तमसा तीर तुरत रथु आवा ॥
निग किए करि निनय निपादा । फिरे पाँय परित्रिकल-विपाटा ॥
पैठत नगर मचित्र सजुचाई । जनु मारेमि गुरु-धान्हन गाई ॥
वैठि त्रिटपतर द्विसु गराँवा । माँक ममयतव अजमरु पावा ॥
अजप्रप्रेसु कीन्ह अँधियारे । पैठ भवन रथु राखि दुआरे ॥
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । भूपद्वार रथु देखन आए ॥
रथु पहिचानि त्रिकल लरि घोरे । गरहि गात जिमि आतप'ओरे' ॥
नगर नारि-नर व्याकुल कैसे । नि'टत' नीर मीनगन जैसे ॥

१ (घस्त) वज्रु २ नहँ विभाह हुई गाय ३ वीचड ४ यह शरीर यम
पण्ड मइने को ५ घुसते समय ६ गर्मी ७ भोले ८ रतम होने पर ।

दोहा—सचिव आगमनु सुनत सबु, विकल भयेउ रनिवासु ।
भवनु भयकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेतनिवासु ॥१४८॥

अति आरत सब पूछँहि रानी । उतरु न आव विकलभइ धानी ॥
सुनै न म्रवन नयन नहि सूझा । कहहु कहौ नृप जेहि तेहि दूझा ॥
दासिन्ह दीरस सचिव-विकलाई । कौसिल्या-गृह गई लेवाई ॥
जाइ सुमत्र दीरस कम राजा । अभियरहित जनु चहु विराना ॥
आसन-सयन-विभूपन-हीना । परेउ भूमि तल निपटमलीना ।
लेइ उसास सोच एहि भाँती । सुरपुरतें जनु सँसेउ जजाती ॥
लेत सोचभरि छिन छिन छाती । जनु जरि परेउ सपाती ।
राम राम कह रामसनेही । पुनि कह राम लपन वैदेही ।

दो०—देखि सचिव जयजीव कहि, कीन्हेउ दड प्रनामु ।

सुनत उठेउ व्याकुल नृपति कहु सुमत्र कहँ रामु ॥१४९॥

भूप सुमत्रु लीन्ह उर लाई । बूढत कछु अधार जनु पाई ।
महित मनेह निरुट बैठारी । पूछत राउ नयन भरि वारी ॥
रामकुमल कहु सरा सनेही । कह रघुनाथ लखनु वैदेही ॥
आने फेरु कि वनहिं सिधाण । सुनत सचिव लोचन जल छाए ॥
सोच विकल पुनि पूँछ नरेसू । कहु सिय-राम-लपन-सदेसू ॥

१ भूता का घर २ गिर गया ३ हाल ।

७ राजा नरुप का पुत्र राजा ययाति धर्म जल से स्वर्ग प्राप्त कर चुका था । इन्द्र ने इसका गद्दी पर बैठा कर सारे सत्कार्य इसी के मुँह से कहना लिये । अपनी प्रशम्भा स्वयं धरने से पुण्य कम हो गया, तब तो इन्द्र ने इनको स्वर्ग में गिरा दिया ।

। कश्यप के पुत्र अरुण के सम्पाती और जटायु का पुत्र थे इन्होंने बलाभिमान में सूर्य के निरुट जाने की प्रतिज्ञा की, जब सूर्य की किरणों से पर जलन लगे तब जटायु तो लौट आया परन्तु सम्पाती ७ लौटा, उसके पर जात गये और व्याकुल होकर महन्द्र पर्वत पर गिर गया ।

राम-रूप-गुन-सील-सुभाऊ । सुमिरिसुमिरि उर सोचत राऊ ॥
 राम सुनाइ दीन्ह बनवासू । सुनिमन भयेउ न हरपहरासू ॥
 सो सुत त्रिछुरत राण न प्राना । को पापी वड मोहि समाना ॥

दो०—सग्रा रामु सिय लपनु जहँ, तहाँ मोहि पहुँचाउ ।

नाहिं त चाहत चलन^१ अथ, प्रान कहौ सतिभाउ ॥१५०॥

पुनि पुनि पूँछत मत्रिहि राऊ । प्रियतम सुअन सँदेस सुनाऊ ॥
 करहि सग्या मोइ वेगि उपाऊ । रामु लपन सिय नयन देखाऊ ॥
 सचिप धीर धरि कह मृदुपानी । महाराज तुम पडित ग्यानी ॥
 वीर सुधीर धुरधर देवा । माधु-भमाज मदा तुम्ह मेवा ॥
 जनग मरनमत्र दुख-सुख भोगा । हानि लाभ, प्रियमिलन वियोगा ॥
 काल करम भव होहि गोसाई । वरजस^२ राति दिवस की नाई ॥
 सुख हरपहिं जड दुग प्रिलखाहीं । दोउ^३ सम धीर वरहि मन माहीं ॥
 धीरज धरहु त्रिनेक विचारी । छॉडिय मोचु सकल हितकारी ॥

दो०—प्रथम धाम तमसा भयेउ, दूमर सुग्गरि तीर ।

न्हाइ रहे जलपान करि, सिय समेत दोउ वीर ॥१५१॥

फेजट कीन्ह बहुत सेवकाई । सो जामिनि मिंगरोर गगौई ॥
 होत प्रात वृट्ठीरि^४ मँगवा । जटामुकुट निज मीम बनाया ॥
 रामसरसा तव नाव मँगाई । प्रिया चढाइ चढे रघुराई ॥
 लपन धानपनु धरे बनाई । आपु चढे प्रभु आयसु पाई ॥
 प्रियल विलोकि मोहि रघुवीरा । पाले मधुर उचन परि वीरा ॥
 तातु प्रनामु तात सन कहेहू । बार बार पउ पकज गहेहू ॥
 करनि पायँ परि विनय बहोरी । तात करिअ जनि चिंता मोरी ॥
 जनमग भगल^५ कुसल हमारें । कृपा अनुग्रह^६ पुन्य तुम्हारें ॥

^१ दु ख, शाक ^२ प्राण चटना चाहत हे अथात् मं मरने वाला हूँ,

^३ अनिचार्य ^४ सुग्य और दु ख ^५ वरगद का मूथ ^६ सुखदायक ^७ कृपा ।

छन्द—तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।
 प्रतिपालि आयसु कुमल देखन पायँ पुनि फिरि आइहौं ॥
 जननी सकल परितोष परि परि पायँ करि विनती घनी ।
 तुलसी करहु सोइ जतन जेहि कुसली^१ रहहिं कोसलघनी ॥

सां०—गुरु सन कहव सँदेस, वार वार पद-पदुम गहि ।
 करव सोइ उपदेस, जेहि न सोच मोहि अघधपति ॥१५३॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी । तात सुनायेउ विनती मोरी ॥
 सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जाते रह नर-नाह सुखारी ॥
 कहव सँदेसु भरत के आए । नीति न तजिअ राजपद पाए ॥
 पालेहु प्रजहि करम-मन वानी । सेयेहु मातु सकल सम जानी ॥
 अउर निवाहेहु भायप^२ भाई । करि पितु-मातु सुजन सेनकाई ॥
 तात भाँति तेहि राखव राज । सोच मोर जेहिं करइ न काज ॥
 लपन कहे कछु वचन कठोरा । बरजि राम पुनि गोहि निहोरा ॥
 वार वार निज सपथ दिवाई । कहवि न तात लपनलरिकाई ॥

दो०—कहि प्रनामु कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल सनेह ।
 थकित वचन लोचन सजल पुलक^३ पल्लवित देह ॥१५३॥

तेहि अवसर रघुवर रुख पाई । केवट पारहि नाव चलाई ॥
 रघु कुल तिलक चले एहि भाँती । देखेउँ ठाढ कुलिस वरि छाती^४ ॥
 मैं आपनु किमि कहौं कलेसू । जिअत फिरेउँ लेइ रामसँदेसू ॥
 अस कहि सचिप्र वचन रहि गयेऊ । हानि गलानि सोच वस भयेऊ ॥
 सूत-वचन सुनतहि नरनाहू । परेउ धरनि उर दारुनदाहू ॥
 तिलकत विषम मोह मन मापा^५ । माँजा मनहुँ मीन कहुँ व्यापा ॥
 करि विलाप सब रोवहिं रानी । महा विपति किमि, जाइ बरान ॥
 सुनि विलाप दुखहुँ दुखु लागा । धीरजहूँ कर धीरजु भागा ॥

दो०—भयेउ कोलाहल अवध अति, सुनि नृप राउर सोर ।

निपुल निहंग वन परेउ निसि, मानहुँ कुलिस कठोर ॥१५४॥

प्राण कठगत^२ भयेउ भुआलू । मनिनिहीन जनु व्याकुल व्यालू ॥
इन्त्री सकल विकल भई भारी । जनु सर सरसिज वनु विनुवारी ॥
कौसिल्या नृपु दीस मलाना । रनि कुल रवि अथएउ^३ जिअर जाना ॥
र धरि वीर राम महतारी । बौली वचन समय अनुसारी ॥
नाथ समुक्ति मन करिअ बिचारू । राम वियोग-पयोवि अपारू ॥
करनधार^४ तुम्ह अवध जहाजू । चढेउ सकल प्रिय पथिक समाजू ।
वीरजु वरिअ त पाइअ पारू । नाहिँ त वृडिहि सनु परिवारू ॥
जौ जिअ वरिअ प्रिनय पिय सोरी । रामु लखनु सिय मिलहिँ वहोरी ॥

नो०—प्रिया वचन मृदु सुनत नृप, चितयेउ आसि उचारि ।

तलफत मीन मलीन जनु, सीचेउ सीतल वारि ॥१५५॥

धरि वीरजु उठि वैठि भुआलू । कहू सुमत्र कहँ राम कृपालू ॥
कहाँ लखन कहँ रामु सनेही । कहँ प्रिय पुत्र वधू वँडेही ।
निलपत राउ विकल बहु भौती । भइ जुगसरिस सिराति न राती ॥
तापस अध साप सुधि आई । कौसल्यहि सत्र कथा सुनाई ॥
भयेउ निकल वरनत इतिहासा । रामरहित विग जीवनआसा ॥

१ पक्षिया से भर हुए था म ० प्राण ऊपठ म जागये हे ३ सूयकु
का नृत्य टिपने वाला है ४ मल्लाह ।

० रात ने कहा जब मैं धनुर्विद्या में प्रवीण हो चुका था, नागव
पर हाथियों के शिकार को गया । मैंने शत्रु सुनकर बाण चलाया वह
श्रवण के जो अपने अर्धे मा माप के लिये प नी भरन आया था, लया ।
मैंने जमे ही बाण नियाग वह नर गया । मैं पानी लेकर उसके मा थाप
के पास आया । उन्होंने यह जानकर कि उका पुत्र मेरे द्वारा मारा गया
है यह शाप दिया 'हमारी तरह तू भी पुत्र शोक में मरेगा' ।

सो तनु राशि करवि मै काहा । जेहि न प्रेम-पनु मोर निगहा ॥
 हा रघुनन्दन प्रानपिरीते । तुम्ह विनु जियत बहुत दिन घीते ॥
 हा जानकी लगन, हा रघुवर । हा पितु हित-चित-चातक-जलधर ॥

दो०—राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ।

तनु परिहरि^१ रघुवरबिरह, राउ गए सुरधाम ॥१५६॥

जिअन-मरन फलु दसरथ पावा । अड^२ अनेक अमल जसु छाना ॥
 जिअत राम विधु-वदनु निहारा । रामरिह करि मरनु सपारा ॥
 सोकविकल मत्र रोवहि रानी । रूपु सील बलु तेज बरानी ॥
 करहि विलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमि तल वारहि वारा ॥
 विलपहिं विकल दास अरु दासी । घर घर रुदन^३ करहिं पुरवासी ॥
 अथएउ आजु भानु कुल भानु । वरमअवधि गुन रूप निधानु ॥
 गारी सकल वैकडहि देही । नयनविहीन^४ कीन्ह जग जेही ॥
 एहि त्रिपि विलपत रैनि विहानी । आए सकल महामुनि ग्यानी ॥

दो०—तव वसिष्ठ मुनि समयसम, कहि अनेक इतिहास ।

सोक निवारेउ^५ सत्रहि कर, निज विग्यान-प्रकास ॥१५७॥

तेल नाव भरि नृपतन राखा । दूत बोलाइ बहुरि अस भाखा ॥
 धावहु वेगि भरत पहिं जाहू । नृप-सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू ॥
 एतनेइ कहेउ भरत रान जाई । गुर बोलाइ पठयेउ दोउ भाई ॥
 सुनि मुनि आयसु धावन धाए । चले वेगि वरवाज लजाए ॥
 अनरथु अवध अरभेउ जब तें । कुसगुन होहिं भरत कहूँ तव तें ॥
 देखहिं राति भयानक सपना । जागि करहि कटु^६ कोटि कल्पना^७ ॥
 विप्र^८ जेवाइ देहिं नित दाना । सिव-अभिपेक^९ करहि विधिनाना ॥

१ त्यागकर २ प्रह्लाण्ड ३ रोत ह ४ नेत्रों से रहित अंधा ५ रात्रि
 ६ दूर किया ७ दूत ८ अशुभ ९ वहम १० प्राण ११ महादेव की पूजा

† पिता के चित्तरूप परीक्षा के लिये राठ रूप (रूपकालकार)

माँगहि हृदय महेस मनाई । कुसल मातु पितु परिजन भाई ॥
 गे०—एहि विधि मोचत भरत मन, धावन पहुँचे आइ ।

गुरु अनुसामन^१ स्रवन सुनि, चले गनेसु मनाइ ॥१५८॥
 चले समीर रेग^२ हय हँके । नाँधत सरित सैल बन वाँके ॥
 हन्य सोचु बड कछु न मोहाई । अस जानहिं जिय जाउँ उडाई ॥
 एक निमेष वरपसम जाई । एहि विधि भरत नगर नियराई ॥

असगुन होहिं नगर पेठारा । रटहि कुभाँति कुपेत^३ करारा^४ ॥
 सर सियार बोलहिं प्रतिकृला । सुनि सुनि होई भरत मन सूला ॥
 श्रीहत मर सरिता बन वागा । नगर विसेपि भयावनु लागा ॥
 सग मृग ठय गय जाहि न जोए । राम वियोग कुरोग विगोए^५ ॥
 नगर-नारि नर निपट दुखारी । मनहुँ सबन्दि सब सपति हारी ।

दा०—पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवहिं जोहारहि जाहि ।
 भरत कुसल पूँछि न सकहि भय विपाद मन माहिं ॥१५९॥

हाट जाट^६ नहि जाहिं निहारा । जनु पुरदह^७ दिसि लागि दवारी^८ ॥
 आवत सुत सुनि कैकयनदिनि । हरपी रवि कुल जलरुह-चदिनि ॥
 मजि आरती मुदित उठि वाई । द्वारहिं भेंटि भजन लंइ आई ॥
 भरत दुषित परिजारु निहारा मानहुँ तुदिन^९ वनज जनु^{१०} मारा ॥
 कैकेई हरपित एहि भाँती । मनहुँ मुदित द्रव लाइ किराती ॥
 सुतहि समोच देखि मनु मारें । पूँछति नेहर कुसल हमारे ॥
 सरुल कुसल कहि भरत सुनाई । पूँछी निज-कुल-कुसल भलाई ॥
 कहु कहें तात कहों सब माता । कहें सिय रामु लपन प्रिय भ्राता ॥

गे०—सुनि सुतवचन सनेहमय कपटनीर भरि नयन ।
 भरत स्रवन मन सूल सम पापिनि बोली वचन ॥१६०॥

१ आज्ञा २ हय के सगन गीघ्र ३ तुरे क्षेत्र म ४ काग कौआ
 ५ पीडित ६ चुपचाप चले जाते ह ७ रास्ता ८ दसों दिशा ९ अग्नि
 १० पाला ११ क्रमों का यन ।

तात बात मैं सकल सवारी । भइ मथरा सहाय विचारी
 कछुक काज विधि बीच विगारेउ । भूपति सुर-पति-पुर-पगु धारेउ
 सुनत भरत भयविबम विपादा । जनु महमेउ^१ करि केहरिजादा
 तात तात हा तान पुकारी । परे भूमितल व्याकुल भारी
 चलत न देखन पायेउँ तोही । तात न रामहि सौपेहु मोही
 बहुरि वीर धरि उठे सँभागी । कहु पितुमरन-हेतु सहतारी
 सुनि सुतवचन कहति कैकेई । मरमु पाँछि जनु माहुर^२ देई
 आदिहु ते सत्र आपनि करनी । कुटिल कठोर मुदितमन बरनी

दो०—भरतहि त्रिमरेउ^३ पितुमरन, सुनत राम वन-गौनु ।

हेतु अपनपउ^४ जानि जिअ, थकित रहे धरि मौनु^५ । १६६

विकल विलोकि सुतहि समुष्कावत । मनहुँ जरे पर लोनु^६ लगावति
 तात राउ नहिँ सोचइ जोगू । बडइ सुकृत जसु कीन्हेउ भोग
 जीवत सकल जनम फल पाए । अत अमर-पति मदन^७ सिगा
 अस अनुमानि मोचु परिहरइ । महित समाज राज पुर कर
 सुनि सुठि सहमेउ रामकुमारु । पाकेँ छतु^८ जनु लाग अँगार
 धीरजु धरि भरि लेहिँ उसासा । पापिन सत्रहिँ भौंति कुल नास
 जौँ पै कुरुचि रही अति तोही । जनमत काहे न मारेसि मोही
 पेड काटि तै पालउ साँचा । मीनजिअन हित बारि उलीच

दो०—हसत्रसु^९ दसरथु जनकु राम लखन से भाइ ।

जननी तू जननी भई विधि सन कछु न बगाइ । १६७

जत्र तैं कुमति कुमत जिअ ठयेऊ । रड रड होइ हृदय न गयेउ
 वर माँगत मन भइ नहि पीरा । गरि न जीह, मुँह परेउन की
 भूप प्रतीति^{१०} तोरि किमि कीन्ही । मरनकाल त्रिप्रि मति हरि लीन्ही

१ डर गया २ त्रिप ३ भूल गये ४ अपने आप हो ५ शान्त ६ न
 ७ मरने पर स्वर्ग में गये ८ घाव ९ सूर्य वश १० त्रिश्वास ।

निधिहु न नारि हृदय-गति जानी । नरुल रूपट अत्र अवगुन खानी ॥
 मरुल सुसील धरम रत गऊ । सो किमि जानै तीयसुभाउ ॥
 अस को जीव जतु जग माहीं । जेहि रघुनाथ प्रान-प्रिय नाहीं ॥
 भे अति अहित^१ राम तेउ तोही । को नृ अहसि^२ सत्य बहु मोही ॥
 जो हसि सो ह्मि मुँह मसि लाई । आँखि ओट उठि पैठहि जाई ॥

श्लो०—राम निरोपी-हृदय^३ तें प्रगट कीन्त निधि मोहि ।
 मो समान को पातकी^४ वादि कहीं कहु तोहि ॥ १६३ ॥
 मुनि सनुपन^५ मातु कुटिलाई । जरहिं गात रिस, कहु न बमाई ॥
 निहि अयसर कुनरी तहँ आई । वसन निभूपन नित्रिप वनाई ।
 तखिरिस भरेउ लपन-लघु भाई । वरत अनल^६ घृत आहुति पाई ॥
 मगि लात तकि कूनर माग । परि मुँह भरि मति करत पुकारा ॥
 हनर दूटेउ, फूट कपारू । दलित उमन^७ मुरगधिर प्रचारू^८ ॥
 आह दइय मैं काह नमात्रा । करत नीक फलु अनुइस^९ पात्रा ।
 मुनि रिपुहन लग्निरस सिगरखोटी । लगे घसीटन धरि धरि भोटी ॥
 मगत दयानिधि दीन्ह खुडाई । होसिल्या पहिं गे दोउ भाई ॥

श्लो०—मलिन वसन विवरन निरुल, कस सरीर दुखभाऊ ।
 कनक कलप अर-त्रेलि उन^१, मानहुँ हनी तुपारू^२ ॥ १६४ ॥
 नरतहिं नेरि मातु उठि धाई । मुरछित अत्रनिपरो महुँ आई^३ ॥
 रजन भरनु निकल भण भारी । परे चरन तनदसा तिसारी ॥
 मातु तात कहँ देहि देखाई । कहँ सिय रामुलपनु दोउ भाई ॥
 कट कत जननी जग माँझा । जा जनमत भइ काहे न बाँझा ॥
 कुलकलकु जेहि जनमेउ मोही । अपजस-भाजन प्रिय-जन-डोही ॥

१ अनहित २ है ३ राम का है जो निरीधी हृदय (बहु०) ४ पापी
 ५ शत्रुघ्न ६ भग्नि ७ जोरत म आकर या उछल कर ८ दूटे हुए दाँतों से
 ९ मुँह से खून रहने लगा १० बुरा ११ सुवर्ण की सुन्दर कल्पलताओं
 को १२ पाला १३ मृत्तों ।

को त्रिभुवन मोहि सरिस अभागी । गति असि तोरि मातु जेहि लागी ॥
पितु सुरपुर बन रघुकुल-केतू । मैं केवल सब अनरथ हेतू ॥
धिग मोहि भयेउँ ब्रेनु-गन-ध्यागी । दुसह-दाह-दुख-दूपन-भागी ॥

दो०—मातु भरत के वचन मृदु, सुनि पुनि उठी सँभारि ।
लिये उठाइ लगाइ उर, लोचन मोचति वारि ॥ १६५ ॥

सरल सुभाइ माय हिय लाग । अतिहित मनहुँ राम फिरि आए ॥
भेंटेउ बहुरि लखन-लघु-भाई । सोकु सनेहु न हृदय समाई ॥
देरि सुभाउ कहव सब कोई । राममातु अस काहे न होई ॥
माता भरतु गोद वैठारे । आँसु पौँछि मृदु वचन उचारे ॥
अजहुँ बन्छु, बलि, वीरज धरहू । कुसमउ समुक्ति सोक परिहरहू ॥
जनि मानहु हिय हानि गलानी । काल-करम गति अघटित 'जानी ॥
काहुहि दोस देहु जनि ताता । भा मोहि सब विधि वामप्रिधाता ॥
जो एतेहु दुरग मोहि जिआवा । अजहुँ को जाने का तेहि भाया ॥

दो०—पितु आयसु भूपन वसन, तात तजे रघुवीर ।
विसमउ हरय न हृदय कन्धु, पहिरे बलकल चीर ॥ १६६ ॥

मुखप्रसन्न मन राग न रोपू । सब कर सब विधिकरि परितोपू ॥
चले विपिन सुनि सिय सग लागी । रहइ न राम-चरन-अनुरागी ॥
सुनतहि लपनु चले उठि भाया । रहहि न जतन किए रघुनाथा ॥
तव रघुपति सबही सिरु नाई । चले सग सिय अरु लघु भाई ॥
राम लपनु सिय बनहि सिवाए । गइउँ न सग न प्राण पठाए ॥
एहु सवु भा इन्ह आँरिन्ह आगे । तउ न तजा तनु जीव अभागे ॥
मोहि न लाज निज नेहु निहारी । राम सरिस सुत मैं महतारी ॥
जियइ मरइ भल भूपति जाना । मोर हृदय मत कुलिस-समाना ॥

दो०—कौसल्या के वचन मुनि, भरत सहित रतिवासु ।
 व्याकुल विलपत राजगृह मानहुँ सोकनिवासु ॥१६७॥
 मिलपहिं निकल भरत दोउ भाई । कौमल्या लिये हृदय लगाई ॥
 भौंति अनेक भरत समुझाए । कहि त्रिवेकमय वचन सुनाए ॥
 भरतहु मातु सकल समुझाई । कहि पुगन स्तुति कथी सुहाई ॥
 दलनिहीन सुचि सरल सुवानी । बोले भरत जोरि जुग पानी ॥
 जे अघ मातु पता सुत मारें । गाइगोठ^१ महि सुर-पुर जारे ॥
 जे अघ तिय-बालक-पथ^२ कीन्हे । मीत महीपति माहु^३ दीन्हे ॥
 जे पातक उपपातक अहर्ही । करम-वचन मन-भव^४ कनि कहहीं ॥
 पातक मोहि होहु विधाता । जौ एहु होइ मोर मत^५ माता ॥

ने०—जे परिहरि हरि-हर चरन, भजहि भूतगन घोर ।
 तेहि कै गति मोहि देउ विधि, जौ जननी मत मोर ॥१६८॥
 चहिं नेहु धरम दुहि लेहीं ॥ पिसुन पराय पाप कहि तेहीं ॥
 पटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी । वेदविदूषक विम्वत्रिरोधी ॥
 गोभी लपट^६ लोलुपचारा^७ । जे ताकहिं परधनु परदारा ॥
 जौ म तिन्ह कै गति घोरा । जौ जननी यहु समत मोग ॥
 नहिं साधु सग अनुरागे । परमारथ पथ विमुख अभागे ॥
 न भजहिं हरि नरतनु पाई । जिन्हहि नहरि-हर-सुजसु सुहाई ॥
 जि स्तुतिपथ वामपथ चलहीं । वचक विरचि वेपु जगु दलहीं ॥
 जिन्ह कै गति मोहि सकर देऊ । जननी जौ एहु जानों भेऊ ॥

१ गो शाला २ स्त्री और बालकों का पथ ३ त्रिप ४ काम, धार्मी
 मन से पैदा हुए ५ उलिया, ६ कपटी ७ कर्म, मन धार्मी से झूठे भाव
 वाले ८ कपट का भय बनाकर ।

० 'धन के लिये कुपात्र को बेच पढ़ाना' यह वचन और गाय
 धन पुत्र का बेचना' यह धन का दुहा है । पातक महापाप — दण्ड
 पा, सुरापान, गुस्सखी प्रेम, झूठ बोलना आदि धार तियम भग, धारी
 गराही आदि उपपार है ।

दो०—मातु भरत के वचन सुनि, साँचै सरल सुभाय ।

कहत रामप्रिय तात तुम्ह सदा वचन मनकाय ॥१६९॥

राम प्राण ते प्राण तुम्हारे । तुम्ह रघुपतिहि प्राण तें प्यारे ॥

विधु विपचवे स्रवै हिमु आगी । होइ वारिचर वारि निरागी ॥

भये ज्ञान वरु मिटै न मोहू । तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू ॥

मत तुम्हार एहु जो जग कहहीं । सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं ॥

अस कहि मातु भरत हिय लाये । थन पय स्रवहि नयन जल धारे ॥

करत विलाप बहुत एहि भाँती । बैठेहि वीति गई मव राती ॥

वामदेउ वमिष्ठ तव आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥

मुनि बहु भाँति भरत उपदेमे । कहि परमारथ वचन सुनेसे ॥

दो०—तात हृदय धीरजु धरहु, करहु जो अबसर आजु ।

उठे भरत गुरुवचन सुनि, करन कहेउ सब काजु ॥१७०॥

नृपतनु वेद-विहित अन्हवावा । परम विचित्र निमान बनाना ॥

गहि पग भरत मातु सब रासी । रही राम दरसन अभिलापी ॥

चदज-अगर-भार बहु आए । अमित अनेक सुगध सुहाए ॥

सरजुतीर रचि चिता बनाई । जनु मुर-पुर-सोपान सुहाई ॥

एहि विधि दाह क्रिया सब कीन्ही । विधिवत न्हाइ तिलाजलि दीन्ही ॥

सोधि सुमृति सब वेद पुराना । कीन्ह भरत दसगात-विधाना ॥

जहँ जम मुनिपर आयसु दीन्हा । तहँ तस सहस भाँति सन कीन्हा ॥

भए विमुद्ध दिए सब दाना । बेनु वाजि गज वाहन नाना ॥

दो०—सिंहासन भूपन वमन अन्न धरनि धन वाम ।

दिए भरत लहि भूमिसुर, भे परिपूरन काम ॥१७१॥

पितुहित भरत कीन्हि जस करनी । सो मुख लाय जाहि नहिं बरनी ॥

१ शरीर २ टपके ३ बसावे ४ पाला ५ पानी को छोड़के ६ (भार) तोल का प्रमाण ७ स्वर्ग की सीढी ८ मृतात्मा को तिल आदि दालकर तर्पण ९ स्मृति १० दशकर्म ।

सुनिवृत्तौ सोधि मुनिपर तव श्राण । सचिव महाजन सकल प्रोलाण ॥
 बैठे राज सभा सब जाई । पठण वोलि भरत दोउ भाई ।
 भरतु प्रसिष्ठ निकट बैठारे । नीति धरम भय वचन उचारे ॥
 प्रथम कथा सन मुनिपर बरनी । केकड़ कुटिल कीन्हि जस करनी ॥
 भूप धरमव्रतु सत्य सराहा । जेहि तनु परिहरि प्रेमु निराहा ॥
 कहत राम-गुन-सील-सुभाऊ । सजल नयन पुलकैउ मुनिराऊ ॥
 बहुरि लपन सिय-प्रीति बरानी । सोक-सनेह मगन मुनि ग्यानी ॥

दो०—मुनहु भरत भावी प्रबल विलसि कहेउ मुनिनाथ ।

हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु, विधि हाथ ॥ १७० ॥

ब्रह्म विचारि केहि देइअ दोषू । व्यरथ काहि पर कीजिअ रोषू ॥
 पात विचारु करहु मन माहीं । सोचु जोगु दमरथु नृप नाहीं ॥
 सोचिअ निप्र जो वेद विहीना^१ । तजि निज वरम त्रिपय लयलीना^२ ॥
 सोचिअ नपति जो नीति न जाना । जेहि न प्रजा प्रिय प्राण समाना ॥
 सोचिअ वयसु^३ कृपन^४ धनवान् । जो न अतिथि सिय भगति सुजानू ॥
 सोचिअ सूद्र निप्र अपमानी^५ । मुख^६ मानप्रिय ग्यानगुमानी^७ ॥
 सोचिअ पुनि पतिवचक^८ नागी । कुटिल कलहप्रिय^९ इन्द्राचारी ॥
 सोचिअ ब्रह्म निज व्रतु परिहरई । जो नहिं गुर आयसु अनुसरई ॥

दो०—सोचिअ गृही^{११} जो मोहवम, करै करमपथ त्याग ।

सोचिअ जती प्रपचरत^{१२}, विगत^{१३} विवेक प्रिराग ॥ १७३ ॥

पानम^{१४} मोइ सोचन जोगू । तपु त्रिहाइ जेहि भावै भोगू ॥
 सोचिअ पिसुन^{१५} अकारन क्रोधी । जननि जनक-गुरु-बधु निरोधी ॥

१ वेद से जो रहित हो २ लता हुआ ३ वैश्य ४ लोभी ५ ब्राह्मण
 ६ जो अपमान कर (बहु०) ७ बरुवात्री ८ घमण्डी ९ ज्ञान का अभिमान
 १० जिसको (बहु०) ११ पति को धांका देने वाली १२ लडाइ ही जिसको
 गरी है १३ गृहस्थी १४ जालसाज १५ रहित १६ धानप्रस्थ १७ छलिया

सब विधि सोचिअ पर-अपकारी । निज तनु-पोपक^१ निरदय भारी ॥
 सोचनीय सब ही विधि सोई । जो न छौंछि छलु हरिजन होई ॥
 सोचनीय नहि कोसलराऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥
 भयेउ, न अहै, न अब होनिहारा । भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥
 विधि हरि हरसुरपति विमिनाथा । वरनहिं सब दसरथ गुन-गाथा ॥
 दो०—कहहु तात केहि भौंति कोउ, करहि बडाई तासु ।

राम लपन तुम सत्रुहन, सरिस सुअन^२ सुचि जासु ॥१७४॥
 सब प्रकार भूपति बडभागी । वादि विपादु करिअ तेहि लागी ॥
 एहु सुनि समुक्ति सोचु परिहरहू । सिर धरि राज-रजायसु^३ करहू ॥
 राय राजपदु तुम्ह कहँ दीन्हा । पिता-वचन फुर चाहिअ कीन्हा ॥
 तजे रामु जेहि वचनहि लागी । तनु परिहरेउ रामनिरहागी^४ ॥
 नृपहि वचन प्रिय, नहिं प्रिय प्राना । करहु तात पितुवचन प्रमाना ।
 करहु मीस धरि भूपरजाई । है तुम्ह कहँ सब भौंति भलाई ॥
 परसुराम पितुआग्याँ राखी । मारी मातु, लोग सत्र सारी ॥
 तनय जजातिहि जौवनु दयेऊ । पितुआग्या अघ अजसु न भयेऊ ॥

१ अपने शरार को पुष्ट करने वाला २ पुत्र ३ राजा की आत्मा ४ श्री रामचन्द्र जी के विरह की अग्नि ।

एक दिन परशुराम जी की माता रेणुका जमुना स्नान को गई । वहाँ मछलियों को केलि करते देख उसे भी क्रीडा की दृष्टा हुई । घर आकर पति से कहा । यह मुनिर यमदग्नि ऋषि ने अपने पुत्रों को उसक शिर काटने की आज्ञा दी । तीन पुत्रों ने आज्ञा न मानी । तब छोटे पुत्र परशुराम ने तीनों भाई व माता का शिर पिता के कहने से काट डाला । तब मुनि बोले कि 'घर भौंगो' उन्होंने कहा 'ये चारों जी उठें ।'

१ चन्द्रवशी राजा तद्रूप के पुत्र राजा ययाति के दो रानियाँ थीं । एक शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी दूसरी वृषपर्वी की शर्मिष्ठा । शुक्राचार्य ने त्रिवाह के समय राजा से यह प्रतिज्ञा करा ली थी कि राजा शर्मिष्ठा से प्रेम न करे । परन्तु जब शर्मिष्ठा के पुत्र पैदा हुआ तो पता लगा कि

दो०—अनुचित उचित विचार तजि, जे पालिहिं पितु बैन ।
ते भाजन सुग सुजस के, नमहिं अमरपति-गेन ॥१७५॥

वसि नरेस प्रचन फुर करहु । पालहु प्रजा सोक परिहरहु ॥
रपुर नप पाइहिं परितोषू । तुम्ह कहँ सुकृत सुजसु, नहिं दोषू ॥
प्रिणित समत सप्रहीका । जेहि पितु देइ सो पावँ टीका ॥
रहु राजु परिहरहु गलानी । मानहु मोर प्रचन हित जानी ॥
नि सुखु लहव रामवैदेही । अनुचित कह्य न पडित केही ॥
सिल्यादि सकल महतारी । तेउ प्रजासुख होहिं सुखारी ॥
रम तुम्हार राम कर जानिहि । सो सप्रिधि तुम्ह सन भल मानिहि ॥
पिहु राजु राम के आँ । मेवा करहु मनेह सुहाँ ॥

ने०—कीजिअ गुर-आयसु अवसि कहहि सचिप्र कर जोरि ।
रघुपति आँ उचिन जस तस तव करव बहोरि ॥१७६॥

मिल्या धरि धीरजु कहई । पूत^१ पथ्य^२ गुरु आयसु अहई ॥
आदरिअ करिअ हित मानी । तजिअ त्रिपादु कालगति जानी ॥
न रघुपति सुरपुर नरनाहू । तुम्ह णहि भौंति तात कटराहू^३ ॥
रिजन प्रजा मचिप्र सब अजा । तुम्हही सुत सब कहँ अबलया ॥
रिनिधि ताम कालु-कठिनार्इ । धीरजु धरहु मातु बलि जाई ॥
र धरि गुरआयसु अनुसरहु । प्रजा पालि परि-जन दुख हरहु ॥

व शर्मिष्ठा क पुत्र पैदा हुआ तो पता लगा कि राजा ने नियम भंग किया है ।
राचार्य जा ने उस द्राप दे कर जुद्धा घना दिया । राजा ने जब बहुत
थना की तो शुक्राचार्य ने युवा अस्थि बदलने का नियम बना दिया ।
जा ने अपने सत्र पुत्रों से जवानी बदलने के लिये एक एक करके कहा ।
रघुकोई रानी न हुआ, केवल छोटे बड़े के ने अपनी जवानी देकर जुद्धापा ले
या । और १००० वर्ष पीछे चापिस लेखर पुर नामक राज्याधिकाारी हुआ ।
१ पूत नाम नरक मे जा घचारे यह पुत्र २ हितकारक ३ कायर बनत हो ।

सब विधि सोचिअ पर-अपकारी । निज तनु-पोपक^१ निरद्वय भारी
 सोचनीय सब ही विधि सोई । जो न छाँडि छलु हरिजन होई
 सोचनीय नहिं कोसलराऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ
 भयेउ, न अहै, न अब होनिहारा । भूप भरत जस पिता तुम्हारा
 विधि हरि हरिसुरपतिदिमिनाथा । बरनहिं सब दसरथ गुन-गाथा
 दो०—रुहहु तात केहि भौंति कोउ, करहि बडाई तासु ।

राम लपन तुम सत्रुहन, सरिस सुअन^२ सुचि जासु ॥ १७४ ॥
 सब प्रकार भूपति बडभागी । वादि विपादु करिअ तेहि लागी
 एहु सुनि समुक्ति सोचु परिहरू । सिर धरि राज-रजायसु^३ करहू
 राय राजपदु तुम्ह कहँ दीन्हा । पिता-वचन फुर चाहिअ कीन्हा
 तजे रामु जेहि वचनहिं लागी । तनु परिहरेउ रामविरहागी^४
 नृपहि वचनप्रिय, नहि प्रियप्राना । करहु तात पितुवचन प्रमाना
 करहु सीस धरि भूपरजाई । है तुम्ह कहँ सब भौंति भलाई
 परसुराम पितुआग्याँ राखी । मारी मातु, लोग सब सागी
 तनय जजातिहि जौवनु दयेऊ । पितुआग्या अघ अजसु न भयेऊ

१ अपने शरीर को पुष्ट करने वाला २ पुत्र ३ राजा की आत्मा ४ शत्रु
 रामचन्द्र जी के निरह की अग्नि ।

ॐ एक दिन परशुराम जी की माता रेणुका जमुना स्नान को गई
 वहाँ मछलियों को कैलि करते देख उसे भी क्रीडा की इच्छा हुई । प
 आरुण पति से रहा । यह सुनकर यमदग्नि ऋषि ने अपने पुत्रों को उस
 शिर काटने की आज्ञा दी । तीन पुत्रों ने आज्ञा न मानी । तब छोटे पु
 परशुराम ने तीनों भाई व माता का शिर पिता के कहने से काट डाला
 तब मुनि बोले कि 'वर माँगो' उन्होंने कहा 'ये चारों जी उठें ।'

१ चन्द्रवती राजा नभुप के पुत्र राजा ययाति के दो रानियाँ थीं
 एक शुक्राचार्य की पुत्री देव्यायी दूसरी वृषपरा की शर्मिष्ठा । शुक्राचार्य
 ने विवाह के समय राजा से यह प्रतिज्ञा करा ली थी कि राजा शर्मिष्ठा से
 प्रेम न करे । परन्तु जब शर्मिष्ठा के पति मेल नभा तो पता लगा कि

१०—अनुचित उचित विचारु तजि, जे पालिहिं पितु बैन ।
ते भाजन सुर सुजस के, बसहिं अमरपति-ऐन ॥१७५॥

अवसि नरैस वचन फुर करहु । पालहु प्रजा सोक परिहरहु ॥
सुरपुर नप पाइहिं परितोपू । तुम्ह कहँ सुकृत सुजसु, नहि दोषू ॥
बंदविन्ति ममत सबहीका । जेहि पितु देइ सो पावै टीका ॥
करहु राजु परिहरहु गलानी । मालहु मोर वचन हित जानी ॥
सुनि सुखु लहव रामवैदेही । अनुचित कहव न पडित केही ॥
कौसल्यादि सकल महतारी । तेउ प्रजासुख होहिं सुगारी ॥
मरम तुम्हार राम कर जानिहि । सो सब विधि तुम्ह सन भल मानिहि ॥
सौपेहु राजु राम के आँ । सेवा करेहु सनेह सुहाँ ॥

१०—कौजिअ गुर-आयसु अवमि कहहि सचिव कर जोरि ।
रघुपति आँ उचित जम तस तव करव प्रहोरि ॥१७६॥

मैलया वरि धीरजु कहई । पूत^१ पथ्य^२ गुरु आयसु अहई ॥
आदरिअ करिअ हित मानी । तजिअ त्रिपाटु कालगति जानी ॥
न रघुपति सुरपुर नरनाह । तुम्ह णहि भौंति तात कदराहू^३ ॥
रिजन प्रजा सचिव सब अचा । तुम्हही सुत सब कहँ अवलवा ॥
विनिधि वाम कालु-कठिनाई । धीरजु वरहु मातु वलि जाई ॥
र धरि गुरआयसु अनुसरह । प्रजा पालि परि-जन-दुरस हरह ॥

शर्मिष्ठा क पुत्र पैदा हुआ तो पता गया कि राजा न नियम भंग किया है ।
शुभाचार्य जी ने उसे शाप दे कर बुढ़ा बना दिया । राजा ने जब बहुत
बुढ़ा की ता शुभाचार्य ने युवा अवस्था बदलने का नियम बना दिया ।
राजा ने अपने सब पुत्रों से जगानी बदलने के लिये एक एक बरक कहा
युकोट रानी त हुआ बैरा छोटे लडके ने अपनी जगानी देकर बुढ़ापा ले
। और १००० वर्ष पीछे पापिम ने इस पुत्र नामक राजपाधिगारी हुआ ।
१ पुत्र नाम परक मे जो घगाने यह पुत्र २ हितकारक ३ कायर बनत गो ।

गुरु के वचन सचिव अभिनुदनु । सुने भरत हिय हित जनु चदनु ।
सुनी वहोरि मातु मृदुवानी । सील-सनेह-सरल-रस सानी ।

छद०—सानी मगल रम मातुवानी सुनि भरत व्याकुल भए ।

लोचन सरोरह स्रवत सींचत विरह उर अकुर नए ।

सो दसा देसत समय तेहि विसरी सबहि सुधि देह की ।

तुलसी सराहत सकल सादर साँव सहज सनेह की ॥

सो०—भरत कमलकर जोरि, धीर-धुरवर धीर धरि ।

वचनु अभिअ जनु वोरि देत उचित उत्तर मजहि ॥१७७॥

मोहि उपदेशु दीन्ह गुरु नीका । प्रजा सचिव^२ समत सनहीका

मातु उचित धरि आयसु दीन्हा । अघसि सीस वरि चाहौं कीन्हा

गुरु-पितु-मातु-स्वामि हित-वानी । सुनिमन मुदित करिअ भलिजान

उचित कि अनुचित किए विचारु । धरमु जाइ सिर पातक भारु

तुम्ह तौ देउ सरल सिर मोई । जो आचरत^३ मोर भल होई

जद्यपि एहि समुझत हौ नीके । तदपि होत परितोपु न जी के

अव तुम्ह विनय मोरि सुनि लेहू । मोहि अनुहरत सिखावनु देहू

उत्तर देउ छमव अपराधू । दुखित-दोष-गुनगनहिं न साधू

दो०—पितु सुरपुर, सिय राम वन, करनु कहहु मोहि राजु ।

एहि ते जानहु मोर हित, कै आपन बड काजु ॥१७८॥

हित हमार सिय पति-सेवकाई । सो हरि लीन्हि मातु बुटिलाई

मै अनुमानि दीर्य मन माँहाँ । आन^४ उपाय मोर हित नाहीं

सोकसमाजु राजु केहि लेसे । लपन-राम-सिय पद विनु देसे

वादि^५ वसन विनु भूषन-भारु । वादि विरति विनुब्रह्म विचारु

सरुज सेरीर वादि बहु भोगा । विनु हरिभगति जाय जप जोगा

जाय जीव विनु देह सुहाई । वादि मोर सबु विनु रघुराई

१ स्वाभाविक प्रेम की सीमा २ मन्त्री ३ करने से ४ दूसरा ५ व्यर्थ ।

जाउँ राम पहिँ आयसु देहू । एकहि आँक मोर हित एहू ॥
मोहि नपकरि भल आपन चहहू । सोउ सतेह जडता बस^१ कहहू ॥

दो०—कैकइसुअन बुटिल मति, रामनिमुख गतलाजर ।

तुम्ह चाहत सुखु मोहवस मोहि से अधमु के राज ॥७९॥

कहउँ साँच सब मुनि पतियाहू । चाहिअ धरमसील नरनाहू ॥
मोहि राजु हठि देखहु जवहीं । रसा^२ रसातल^३ जाइहि तवहीं ॥
मोहि समान को पापनिवासू । जेहि लागि सीयराम बनवासू ॥
राय राम कहूँ कानन दीन्हा । विछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा ॥
मैं सठ सन अनरथ कर हेतू । बैठ वात सन सुनउँ सजेतू ॥
बिनु रघुवीर त्रिलोकि अचासू । रहे प्राण सहि जग उपहासू^४ ॥
राम पुनीत विषयरम रूते । लोलुप भूमिभोग के भरे ॥
कहूँ लागि कहउँ हृदय-कठिनाई । निदरि कुलिसु जेहि लही बडाई ।

दो०—कारन तैं कारजु कठिन, होइ दोस नहि मोर ।

कुलिस अस्थि^५ तैं उपल ते लोह कराल कठोर ॥८०॥

कैकईभव तनु अनुरागे । पाँर^६ प्राण अघाइ अभागे ॥
जो प्रियनिरह^७ प्राण प्रिय लागे । देखव सुनव बहुत अव आगे ॥
लपन-राम सिय कहूँ वतु दीन्हा । पठै अमरपुर पतिहित कीन्हा ॥
दीन्हा विधवपन अपजसु आपू । दीन्हेउ प्रजहिँ सोकु सतापू^८ ॥
मोहि दीन्हा सुखु सुजसु सुराजू । कीन्हा पैकई सन कर काजू ॥
एहि ते मोर काह अव नीका । तेहि परदेन कहहु तुम्ह टीका^९ ॥
कैकइजठर^{१०} जनमि जगमाहीं । एहू मोहि कहूँ कछु अनुचित नाहीं ।
मोरी वात सन निधिहि जनाई । प्रजा पाँच कत करहु सहाई ॥

१ मूर्धता से २ पृथ्वी ३ पाताल ४ अमरावती ५ हंसो ६ हड्डी

७ प्यारे की सुदाई ८ तुल ९ रात्र १० कैमथी क पेट मे ।

११ पल्ल. राम विष्णु । मरु है राम विष्णु । निर्लभ ।

गुरु के वचन सञ्चिव अभिनन्दनु । सुने भरत हिय हित जनु चन्दु ॥
सुनी बहोरि मातु मृदुवानी । मील-सनेह-सरल-रस सानी ॥

छट०—सानी सरल रस मातुवानी सुनि भरत व्याकुल भए ।
लोचन सरोरुह स्रवत सींचत विरह उर अकुर नए ॥
सो दसा देखत समय तेहि विसरी सवहि सुधि देह की ।
तुलसी सराहत सकल सादर सींच सहज सनेह की ॥

सो०—भरत कमलकर जोरि, धीर-धुरधर धीर धरि ।
वचनु अमिअ जनु बोरि देत उचित उत्तर सवहि ॥१७७॥

मोहि उपदेसु दीन्ह गुरु नीका । प्रजा सचिव^२ समत सबहीका ॥
मातु उचित बरि आयसु दीन्हा । अवसि सीस धरि चाहौ कीन्हा ॥
गुरु-पितु-मातु-स्वामि-हित-वानी । सुनिमन मुदित करिअ भलिजानी ॥
उचित कि अनुचित किए विचारू । धरसु जाइ सिर पातक भारू ॥
तुन्ह तौ देउ सरल सिख सोई । जो आचरत^३ मोर भल होई ॥
जद्यपि एहि समुझत हौ नीके । तदपि होत परितोप न जी के ॥
अब तुन्ह विनय मोरि सुनि लेहू । मोहि अनुहरत सिखावनु देहू ॥
उत्तर देउ छमव अपराधू । दुखित-दोष-गुन गनहिं न साधू ॥

दो०—पितु सुरपुर, सिय राम बन, करनु कहहु मोहि राजु ।

एहि ते जानहु मोर हित, कै आपन बड काजु ॥१७८॥

हित हमार सिय-पति-सेवकाई । सो हरि लीन्हि मातु कुटिलाई ॥
मै अनुमानि दीख मन मोर्ही । आन^४ उपाय मोर हित नार्ही ॥
सोकसमाजु राजु केहि लेखे । लपन-राम-सिय पद विनु देखे ॥
वादि^५ वसन विनु भूपन-भारू । वादि विरति विनुब्रह्म निचारू ॥
सरुज सेरीर वादि बहु भोगा । विनु हरिभगति जाय जप जोगा ॥
जाय जीव विनु देह सुहाई । वादि मोर सबु विनु रघुराई ॥

जाउँ राम पहि आयमु देहू । एकहि आँक मोर हित णहू ॥
मोहि नपकरि भल आपन चहहू । मोउ सनेह जडता वस^१ कहहू ॥

दो०—कैइसुअन कुटिल मति, रामप्रिमुख गतलाज ३ ।

तुम्ह चाहत सुखु मोहवस मोहि से अधमु के राज ॥ १७९ ॥

कहउँ साँच सप सुनि पतियाहू । चाहिअ धरमसील नरनाहू ॥
मोहि राजु हठि देइहहु जगहीं । रमा रमातल^३ जाइहि तवहीं ॥
मोहि समान को पापनिवासू । जेहि लागि सीरराम बनवासू ॥
राय राम कहूँ कानन दीन्हा । विलुरत गमनु अमरपुर^४ कीन्हा ॥
मे मठ मन अतरथ कर हेतू । बैठ वात सब सुनउँ सचेतू ॥
निनु गधुनीर विलोकि अजासू । रहे प्रान सहि जग उपहासू^५ ॥
राम पुनीत निपयरस रूपे । लोलुप भूमिभोग के भूपे ॥
कहूँ लागि कहउँ हृदय-कठिनाई । निदरि कुलिसु जेहि लही बडाई ।

दो०—कागन तैं कारजु कठिन, होइ दोस नहिं मोर ।

कुलिम अस्थि^६ तैं उपल तैं लोह कराल कठोर ॥ १८० ॥

सिनेईभन तनु अनुरागे । पाँवर^७ प्रान अघाइ अभागे ॥
जो प्रियनिरह^८ प्रान प्रिय लागे । देखव सुनव नहुत अब आगे ॥
लपन राम सिय कहूँ तनु दीन्हा । पठे अमरपुर पतिहित कीन्हा ॥
लीन्ह मिधवपन अपजसु आपू । दीन्हेउ प्रजहिं सोकु मतापू^९ ॥
मोहि दीन्ह सुखु सुजसु सुराजू । कीन्ह कैकई सव कर फाजू ॥
एहि ते मोर काह अब नीका । तेहि परदेन कहहु तुम्ह टीका^{१०} ॥
कैकट नठर^{११} जनमि जगमाहीं । एह मोहि कहूँ कहुअनुचित नाहीं ॥
मोरि जात सप विधिहि बनाई । प्रजा पाँच कत करहु राहाई ॥

१ मूर्यता से २ पृथ्वी ३ पाताल ४ अमररागरी ५ वीर ६ अस्थि

७ मीच ८ प्यारे की सुदाई ९ दुख १० राज्य ११ कैकयी की लीक १२

१३ राम से विमुख, राम प्रिमुख । गत ही गज विगयी (ममू ११)

दो०—ग्रहग्रहीत^१ पुनि वातवस^२, तेहि पुनि वीछी मार^३ ।

तेहि पिआइअ वारुनी^४, कहहु कवन उपचार ॥१८१॥

कैकइसुअन-जोग जग जोई । चतुर विरचि^५ दीन्ह मोहि सोई ॥
 दसरथतनय राम-लघु-भाई । दीन्ह मोहि विधि वादि बडाई ॥
 तुम्ह मव कहहु कटावन टीका^६ । रायरजायसु सब कहँ नीका ॥
 उतरु देउँ केहि विधि केहि केही । कहहु सुरेन^७ जथारुचि जेही ॥
 मोहि कुमातु-समेत विहाई । कहहु कहिहि को कीन्ह भलाई ॥
 मो विनु को सचराचर माहीं । जेहि सियरामु प्रानप्रिय नाहीं ॥
 परम हानि मनु कहँ बड लाहू । अदिन मोर नहिँ दूपन काहू ॥
 ससय^८ मील प्रेमवस अहहू । सबुइ उचित मबु जो कछु कहहू ॥

दो०—राममातु सुठि सरलचित, मो पर प्रेमु बिसेरि ।

कहँ सुभाय सनेहवस, मोरि दीनता देखि ॥१८२॥

गुरु विवेक सागर जग जाना । जिन्हहि विस्वर-वदर-समाना^९ ।
 मोकहुँ तिलकसाज सज सोऊ । भण विधि-विमुर^{१०} विमुरसबकोऊ ॥
 परिहरि^{११} रामुसीय जग माहीं । कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं ॥
 सो मैं सुनन सहव सुर मानी । अतहु कीच-तहाँ जहँ पानी ॥
 डर न मोहि जग कहहि कि पोचू । परलोकहु कर नाहिन सोचू ॥
 एकै उर बस दुसह दवारी^{१३} । मोहि लागि भे सियराम दुखारी ॥
 जीवनलाहु लपन भल पावा । सबु तजि रामचरनु मन लावा ॥
 मोर जनम रघुवर वन लागी । भूठ काह पछिताउँ अभागी ॥

दो०—आपन वारुन दीनता^{१४}, कहँ सबहि मिर नाट ।

देखे विनु रघु नाथ पद, जिय कै जरनि न जाड ॥१८३॥

१ ग्रहों में ग्रहित २ सन्निपात में ३ डक ४ शराय ५ ब्रह्मा ६ राज्य
 दाता ७ सुगम में ८ धुरे तिन ९ सन्दह १० हथेली पर रखे हुए बेर क
 समा ११ उल्टे १२ छोड़ कर १३ असह्य दु प्याग्नि १४ बड़ी गरीबी ।

आन उपाय मोहि नहिं सूझा । को जिय कै रघुनर बिनु वूझा ॥
 एकहि आँक' इहै मन मारि' । प्रातकाल चलिहउँ प्रभु पाही ॥
 जद्यपि मैं अनभल अपराधी' । भइ मोहि कारन सकल उपाधी' ॥
 तदपि सरन सनमुख मोहि देखी । छमि मत्र करिहहि कृपा बिसेखी ॥
 सीनु सकुचि सुठि सरल सुभाऊ । कृपा-सनेह-मदन रघुराऊ ॥
 अरिहु क अनभल कीन्ह न रामा । मैं मिसु' मेवकु जद्यपि वामा' ॥
 तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी । आयसु आसिप देहु सुगानी ॥
 जेहि सुनि प्रिनय मोहि जनु जानी । आवहिं बहुरि' राम रजधानी ॥

दो०—जद्यपि जनमु कुमातु ते, मैं मठ सदा मढोस' ।

आपन जानिन त्यागिहहि, मोहि रघु बीर भरोस ॥१८४॥
 भरत वचन सत्र कह प्रिय लागे । राम मनेह सुधा' जनु पागे' ॥
 लोग प्रियोग विपम विष दागे । मत्र सर्जन सुनत जनु जागे ॥
 मातु सचिय गुर पुर-नर-नारी । सकल सनेह विकल भये भारी ॥
 भरतहिं कहहिं मराहि सराही । राम प्रेम मूरति-तनु आही' ॥
 तात भरत अम काहे न कहहू । प्राण समान राम प्रिय अहहू ॥
 जो पाँवरु' १५ अपनी जडताई । तुम्हहिं सुगाइ' १६ मातुकुटिलाई ॥
 सो सठु कोटिक-पुरुष-समेता । वसहि कल्पमत' १७ नरकनिपेता' १८ ॥
 अहि अघ अवगुन नहिं मनिगहई । हरै गरल' १९ दुग्ग दारिद दहई' २० ॥

दो०—अवसि चलिअ वन राम जहँ, भरत मत्र भल कीन्ह ।

सोकसिंधु वूढत सबहि, तुम्ह अबलवनु नीन्ह ॥१८५॥

भा मत्रके मन मोटु न थोरा । जनु घनधुनि सुनि चातक मोरा ॥
 चलत प्रात लखि निरनउ' २१ नीके । भरतु प्राणप्रिय भे सजही के ॥

१ धनि-‘जाऊँ’ २ कमूरवार ३ शगडे ४ मन्त्रा ५ प्रतिकूल ६ लौट
 आवे ७ अपराधी ८ राम के स्नेह रूपी ९ मृत १० सने हुए ११ राम क
 प्रेम की शरीरधारी मूर्ति हे १२ नीच १३ कहे १४ सो कल्प तक १५
 नरक + निक्ता यमपुर १६ विष १७ नाश होता है १८ निर्णय ।

मुनिहिं वदि भरतहिं सिरु नाई । जले सकल^१ घर विदा कराई ॥
 धन्य-भरतु जीवतु जग माहीं । सीलु^२ सनेह सराहत^३ जाहीं ॥
 कहहि परसपर भा बड काजू । सकल चलै कर^४ साजहिं साजू ॥
 जेहिं रागहि रह घर रखवारी । सो जाने जनु गरदन मारी^५ ॥
 कोउ कह रहन कहिअ नहिं काहू । को न चहै जग जीवन लाहू ॥

दो०—जरउ सो सपति-सदन-सुखु, सुहृद मातु पितु भाइ ।
 सनमुखहोत जो रामपद, करै न सहज सहाइ ॥१८६॥

घर घर साजहिं वाहन नाना । हरपु हृदय परभात^६ पयाना ॥
 भरत जाइ कर कीन विचारू । नगर बाजि गज भवन भँडारू ॥
 सपति सब रघुपति कै आही । जौ^७ विनु जतन चलउ तजि ताही ॥
 तो परिनाम^८ न मोरि भलाई । पाप-सिरोमनि^९ साई दुहाई ॥
 करे स्वामिहित सेवक सोई । दूरन^{१०} कोटि डेड किन कोई ॥
 अस विचारि सुचि सेवक बोले । जे सपनेहुं निज धरमु न डोले^{११} ॥
 कहि सब मरमु मरमु सब भारया । जो जेहि लायक सो तहँ राखा ॥
 करि सबु जतनु राखि रखवारे । राममातुपहिं भरत सिधारे ॥

दो०—आरति जननी जानि सब, भरत सनेह सुजान ।

कहेउ वनावन पालकी सजन^{१२} सुरासन^{१३} जान ॥१८७॥

चक्रचक्रि^{१४} जिमि पुर नर-नारी । चहत प्रात उर आरत भारी ॥
 जागत भवनिसि भयेउ विहाना^{१५} । भरत बोलाए सचिव सुजाना ॥
 कहेउ लेहु सब तिलक समाजू । बनहि देव मुनि रामहि राजू ॥
 वेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे । तुरत तुरग रथ नाग^{१६} सँवारे ॥

१ मत्र टोग २ प्रशंसा करते हुए ३ चलने का ४ प्राण लिये ५ सहा
 यता ६ प्रात काल ७ अत म ८ पापियों में सरदार ९ स्वामीकी सौगंध
 १० (दूषण) दोष ११ पक्के ईमानदार १२ तयार करने को १३ सुख-
 भासन १४ चक्रवाज १५ प्रात काल १६ हाथी ।

अरुधती^१ अरु^२ अग्निममाजू^३ । रथ चढि चले प्रथम मुनिराजू ॥
निप्रवृन्द^४ चढि गहन^५ नाना । चले सकल तप-तेज निगना ॥
नगर लोग सत्र मजि मजि जाना । चित्रकटफहँ कीन्ह पयाना ॥
सिन्धिका मुभग^६ न जाहि बरानी । चढि चढि चलत भई सत्र रानी ॥

दो०—सौंषि नगर मुचि सेत्रकनि, सादर सत्रहिं चलाड ॥

सुमिरि राम मिय चरत तत्र चले भरतु दोउ भाड ॥१८८॥

राम-दरस प्रस सत्र नरनारी । जनु करि करिनि^७ चले तकि वारी^८
वन सिय रामु समुक्ति मन माहीं । मानुज^९ भरत पयाहेहि जाहा ॥
देखि मनेह लोग अनुरागे । उतरि चले हय गय रथ त्यागे ॥
जाड ममीप रावि निज डोली । राम मातु मृडुनानी बोली ॥
तात चढहु रथ बलि महतारी । होइहि प्रिय परिवारु दुखारी ॥
तुम्हरे चलत चलिहि सत्र लोगू । सफल सोक कृम^{१०} नहि मग जोगू ॥
सिर धरि बचन चरन सिरनाई । रथ चढि चलत भए दोउ भाई ॥
तमसा प्रथम दिवस कर जासू । दूसर गोमतितीर निवासू ॥

दो०—पय अहार^{११} फल असन^{१२} एक तिमि भोजन मनलोग ।

करत राम हित नेम व्रत, परिहरि भूपन भोग ॥१८९॥

सई तीर बसि चले गिहाने । मङ्गनेरपुर सब नियराने ॥
समाचार सत्र सुने निपादा । हृदय विचार करै सत्रिपादा ॥
कारन करनु भरतु वन जाहीं । है कछु कपट भाउ मनमाहीं ॥
जौं पै जिय न होत कुटिलाई । तौ कत लीन्हि सग कटकाई^{१३} ॥
जानहिं सानुज रामहिं मारी । करउँ अकटक राजु सुखारी^{१४} ॥

१ बशिष्ठ पत्नी २ हवन सामग्री, श्रुता, साख्य, ममिवा अग्नि
कुण्ड इत्यादि ३ ब्राह्मण लोग ४ सखी ५ सुन्दर पालकी ६ दार्थिनी
७ पाना दक्षतर ८ स + अनुत्र भाई सहित ९ शोक से दुर्बल १० दूध
पीकर ११ फल खाकर १२ मेना १३ निर्दिष्ट सुत्र से ।

भगत न राजनीति उर आनी । तव कलकु^१ अत्र जीवनुहानी^२ ॥
सकल सुरासुर^३ जुरहिं जुझारा । रामहिं ममर न जीतनिहारा ॥
का आचरजु भरत अस करहीं । नहिं विषवेलि अमियफलफरहीं ॥

दोहा—अस विचारि गुह ग्याति सन, कहेउ सजग सत्र होहु ।

हथवाँसहु^४ चोरहु तरनि^५, कीजिय घाटारोहु^६ ॥११॥

होहु सँजोइल रोकहु गटा । ठाटहु सकल मरै के ठाट^७ ॥
सनमुख लोह भरतमन लेउँ । जिअत न सुरसरि उतरन देउँ ॥
समरु मरन पुनि-सुर-सरि-तीरा । रामकाजु छनभगु^८ सरीरा ॥
भरत भाइ नृप मै जन नीचू । बड़े भागअस पाइय मीचू^९ ॥
म्वामिकाज करिहूँ रन रारी^{१०} । जस बवलिहउँ^{११} मुअनदसचारी ॥
तजउँ प्रान रथुनाथ-निहोरें । दुहँ हाथ मुद मोदक^{१२} मोरें ॥
साधु मंमाज न जाकर लेग्या । गम भगत महुँ जासु न रेखा ॥
जाय जिअत जगसो महि भारू । जननी-जोवन विटप-कुठारू^{१३} ॥

दोहा—विगतविपाद निपादपति, सबहि बढाइ उछाहु ।

सुमिरि राम माँगेउ तुरत, तरकस धनुष सनाहु ॥१२॥

वेगहु भाइहु सजहु सँजोऊ । सुनि रजाइ कदुराइ न फोऊ ॥
भलेहि नाथ सब कहहिं सहरपा । एकहिं एक बढावै करपा ॥
चले निपाद जोहारि जोहारी । सूर सकल रन रूचै^{१४} रारी ॥
सुमिरि राम पद पकज-पनही । भाथा वाँधि चढाइहिं धनही ॥
अँगरी^{१५} पहिरि कूडि^{१६} सिर बरहीं । फरसा वाँससेल सम^{१७} करहीं ॥
एक कुसल अति अ्रोडन खाँडे । कूदहिं गगन मनहुँ छिति छाँडे ॥

१ उराई २ मृत्यु ३ सुर + असुर ४ पतवार ५ नाव ६ घाट रोक
देना ७ साधन ८ तैयारी ९ अण में जो नष्ट हो जाय (बहु) १०
मृत्यु ११ युद्ध १२ प्रशंसित कर दें १३ दोनों तरह भलाई १४
माता के योवन रूप वृक्ष को कुड़ाडी होकर १५ अच्छी लगे १६ कच
१७ लोहे की टोपी १८ सुधारते हैं ।

निज निज साजु समाजु बनाई । गुह राउतहि^१ जोहारे जाई ॥
 देखि सुभट सब लायक जाने । लै लै नाम सकल सनमाने ॥

दो०—भाइहु लावहु धोख जनि, आजु काजु उड मोहि ।

सुनि मरोप बोले सुभट, वीर अधीरु^२ न होहि ॥१९०॥

रामप्रताप नाथ बल तोरे । करहिं कटक विनु भट विनु घोरे ॥

नीरत पाउ न पाछे धरहीं । रु ड-मु ड मय मेनिनि^३ करहीं ॥

नीर निपादनाथ भल टोळू^४ । कहेउ वजाउ जुभाऊ ढोळू^५ ॥

उतना कहत छींक भई वाणें । कहेउ सगुनिअन्ह खन मुहाणें ॥

बूढ एक कह सगुन विचारी । भरतहिं मिलिअ न होइहि रारी ॥

गामहिं भरत मनाउन जाहीं । सगुन कहे अम त्रिमहु^६ नाहीं ॥

सुनि गुह कहै नीक कह बूढा । सहसा^७ करि पछिताहि विमूढा^८ ॥

भरत सुभाव मील विनु बूके । वडि हितहानि जानि विन बूके ॥

दो०—गहह घाट भट सिमित सब, लेउं मरम मिलि जाइ ।

यूक्ति मित्र अरि मध्यगति तव तस करिहउं आइ ॥१९३॥

तपस सनेहु सुभाय सुहाए । वैर प्रीति नहिं दुरै^९ दुराए ॥

प्रस कहि भेंट सँजोवन लागे । कट मूल फल खग मृग माँगे ॥

मीन पीन^{१०} पाठीन^{११} पुराने । भरि भरि भार कहारन्ह आने ॥

मेलन साजु सजि मिलन मिधाए । मगलमूल सगुन सुभ पाए ॥

रि दृगि ते कहि निज नामू । कीन्ह मुनीमहिं दडप्रनामू ॥

गानि रायप्रिय दीन्हि असीसा । भरतहिं कहेउ बुभाइ मुनीसा ॥

गमसरा^{१२} सुनि स्यदनु^{१३} त्यागा । चले उतरि उमंगत^{१४} अनुरागा ॥

गाउं जाति गुह नाउं सुनाई । कीन्ह जोहारु माय^{१५} महिलाई ॥

१ अपने स्वामी को २ व्यवहारों नहीं ३ धरती ४ जमाय ५ लड़ाई
 ६ जाने ७ लड़ाई ८ क्षीणता ९ मूर्य १० छिपत ११ मोटी
 १२ मछरी १३ राम का सम्बा गुह १४ रथ १५ (उमंग) लहर म आकर
 १६ धरती पर माथा टेक कर ।

दो०—करत दडवत डेरि तेहि, भरत लीन्ह उर लाइ । ।

मनहुँ लखनसन भेट भइ, प्रेमु न हृदय समाइ ॥१९४॥
भेटत भरत ताहि अति प्रीती । लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती
वन्य धन्य धुनि मगलमूला । सुर सगहिं तेहि वरसहिं फूला
लोक बंद सब भाँतिहि नीचा । जासु छाँह छुइ लेइअ सीचा
तेहि भरि अरु राम-लघु-भ्राता । मिलत पुलकपरिपूरित गाता
राम राम कहि जे जमुद्गाही । तिन्हहि न पाप पुज समुहाही
एहि तौ राम लाइ उर लीन्हा । कुल समेत जगु पावन कीन्हा
कुरमतास-जल । सुरसरि परइ । तेहि को कहहु सीस नहिं धरई
उलटा नाम जपत जग जाना । बालमीकि भए ब्रह्म समाना

दो०—स्वपच सवर रस जवन जइ, पाँवर कोल किरात ।

राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात ॥१९५॥
नहिं अचरज जुग जुग चलि आई । केहि न दीन्हि रघुवीर बडाई
रामनाम महिमा सुर कहहीं । सुनि सुनि अवध लोग सुरस लहई
रामसखि मिलि भरत सप्रेमा । पूँछी कुसल सुमगल छेमा
देखि भरत कर सीलु सनेहू । भा निपाद तेहि समय विदेह
सकुच मनेहु मोदु मन बाढा । भरतहिं चितवत एकटक ठाढा
धरि धीरजु पद बढि बहोरी । विनय सप्रेम करत कर जोरी
कुसलमूल पदपकज पेसी । मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी

† कर्मनाशा का जल मय पुण्यों को नष्ट कर देता है ।

* बालमीकि ने साधारण ब्राह्मण कुश में जन्म लिया था । बचप
म बहेलियों के साथ रहे । इससे घडे होने पर रूट मारकर अपने या
बच्चों का पालन करने लगे । एक बार ये सप्तऋषियों के पीछे दीव
सप्तऋषियों ने पूछा कि तुम्हारे घर वाले कैवल खाने वाले हैं या तुम
पाप के भी भागी ह । इन्होंने घर वाला से जाकर पूछा ता कोरा जय
मिया । तब ऋषियों के उपदेश मे राम नाम का यहाँ तक जप कि
कि शरीर पर डीम जम गई । तब से इनका बालमीकि नाम हुआ ।

प्रभु परम अनुग्रह तोरें । महित कोटि कुल-मगल मोरे ।

श्लो०—समुक्ति मोरि करतूत कुलु, प्रभु महिमा जिअ जोड ।

जोन भजइ रघुनीर-पद जग विधि वचित मोड ॥१९६॥

पदी कायरु कुमति कुजाती । लोक वेद वाहिर सन भौती ॥

म कीन्ह आपन जगही तें । भयेउँ भुवन भूपन तजही ते ॥

ये प्रीति सुनि विनय सुहाई । मिलेउ बहोरि भरत-लघु भाई ॥

हि निपाट निज नाम सुवानी । सादर सकल जोहारी रानी ॥

नि लपनसम देहि असीसा । जिअहु सुखी सत लाख बरीसा ॥

रखि निपाटु नगर नर नारी । भण सुखी जनु लपनु निहारी ॥

हहि लहेउ एहि जीवन लाहू । भेटेउ रामचन्द्र भरि चाहू ॥

नि निपाटु निज भाग बडाई । प्रमुदिन मन लै चलेउ लेवाई ॥

श्लो०—सनकारे^४ सेवक मकल, चले रामि रस पाड ।

घर तरु तर सर वागवन, वास वनागन्धि जाइ ॥१९७॥

गयेरपुर भरत दीग्य जव । भे मनेह सब अग मिथिल तव ॥

हित दिप-निपादहि लाग^५ । जनु तनु धरे विनय अनुरागू ॥

हे निधि भरत मेन सब सगा । दीख जाइ जगपात्रनि गगा ॥

मघाट कहैं कीन्ह प्रनामू । भा मनु मगनु मिले जनु रामू ॥

रहि प्रनाम नगर नर नारी । मुदित ब्रह्ममय चारि निहारी ॥

नि मज्जनु माँगहि कर जोरी । रामचन्द्र-पद-प्रीति न थोरी ॥

रत कहेउ सुरसरि तव रेनु । सकल-सुरपद-सेवक-सुर धेनु ॥

गिरि पानि वर माँगहुँ एहू । सीय-राम-पद-सहज-मनेहू ॥

श्लो०—गहिनिधि मज्जनु भरतु करि गुर अनुसासन^६ पाइ ।

मातु नहानी जानि सब, डेरा चले लेनाइ ॥१९८॥

१ न तो लोक ही म हमारी कुठ गणना हे न वेद म ही हमारी कुठ
हुँच है २ प्रतिष्ठित ३ वर्ष ४ सनकारे, इशारा किया ५ सर म वास
नाया इसके दो अर्थ हे—(लक्षणा से) सर के किनारे पर वास,
वाच्य म) सर म पडी हुई नावों पर वास बनाया ६ साथ लिये हुए
भाषा ।

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा । भरत सोध^१ सवहीं कर लीन्हा ।
 सुरसेवा करि आयसु पाई । राममातु पहि गे दोउ भाई ।
 चरन चाँपि कहि कहि मृदुवानी । जननी सकल भरत सनमानी ।
 भाइहिँ सौँपि मातु भेवकाई । आपु निपादहिँ लीन्ह बोलाई ।
 चले मर्या करसो कर जोरे । सिथिल सरीरु मनेहु न थोरै ।
 पृष्ठत सवहिँ सो ठाउँ देखाऊ । नेकु नयन-मन-जरनि जुडाऊ ।
 जहँ सिय रामु लपनु निसि सोये । कहत भरे जल लोचन-क्रोये ।
 भरतवचन सुनि भयउ विपादू । तुरत तहाँ लै गयेउ निपादू ।
 दो०—जहँ सिसुपा^३ पुनीत तरु, रघुवर किय बिसामु ।

अति सनेह सादर भरत, कीन्हेउ दड प्रनामु ॥१९९॥
 कुम माथरी निहारि सुहाई । कीन्ह प्रनामप्रदच्छिन^४ जाई ।
 चरन-रेख-रज आरिन्ह लाई । बन्ड न कहत प्रीति अधिकारी ।
 कनकविट्टु दुइ चारिक देखे । राखे सीस मीप्रसम लेखे ।
 मजल विलोचन हृदय गलानी । कहत सखासन वचन सुगानी ।
 श्रीहत सीयत्रिगह दुतिहीना^६ । जथा अबध नरनारि मलीना ।
 पिता जनक टेउँ पटतर केही । करतल^७ भोगु जोगु जग जेही ।
 ससुर भानु-कुल-भानु भुआलू । जेहि सिहात अमरावति पालू ।
 प्राननाथु रघुनाथ गोसाई । जे जड होत सो रामपडाई ।
 दो०—पतिदेवता^९ सुतीय-मनि, मीय साथरी देखि ।

विहृत^{१०} हृदयन हहरि हर, पवि^{११} तैं कठिन विसेरि ॥२०॥
 लालनजोगु^{१२} लपन लघु लोने । भे न भाइ अस अहहिँ न होने ।
 पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे । मिय-रघुवीरहिँ प्रानपिआरे ।

१ डूँडा, सुध ली २ पल्लवों पर भाँसू डण्डया भाये ३ श्री
 ४ प्रदक्षिणा ५ साठी के सुनहरी (सितारे) रौना ६ मीताजी के त्रिगह
 कान्ति हीन है (श्री=तेज, दुति=शोभा) ७ इधेली पर ८ इन्द्र ९
 ही है देवता जिसके (पटुमोहि०) पतिव्रता १० पटना है ११ ब्रह्म
 १२ प्यार करने योग्य ।

दुमूरति^१ सुकुमार सुभाऊ । ताति बाउ^२ तन लाग न काऊ^३ ॥
 वन सहहिं विपति सब भाँती । निदरे^४ कोटि कुलिस एहि छाती ॥
 म जनमि जगु कीन्ह उजागर । रूप सीन सुर सब गुनसागर ॥
 जन परिजन गुरु पितु माता । रामसुभाउ सबहिं सुरदाता ॥
 गिउ रामनडाई करहीं । चोलनि मिलनिः प्रिनय मन हरहीं ॥
 र कोटि कोटि सत सेपा^५ । करिन सकहिं प्रभु गुनगन लेखा ॥

१०—सुरसरूप रघु-चस-भनि, मगल-भोट निधानु ।
 ते सोवत कुम डासि महि, विधिगति अति बलवानु ॥२०१॥
 म सुना दुखु कानन काऊ । जीवनतरु जिमि जुगवै राऊ ॥
 क नयन फनि मनि जेहि भाँती । जुगग्रहिं जननि सकल दिन राती ॥
 धव फिरत विपिन पटचारी । कद-मूल फल-फूल अहारी ॥
 ग कैरई अमगल मूला । भइसि प्राण प्रियतम प्रतिफूला ॥
 गिधिग अग्र-उदधि अभागी । सबु उतपातु भयेउ जेहि लागी ।
 न-कलकु करि सृजेउ विधाता । साइँ द्रोह मोहि कीन्ह कुमाता ॥
 ने मप्रेम समुभाउ निपाट । नाथ करिअ कत बादि निपाट ॥
 तुम्हहिं प्रिय तुम्ह प्रिय रामहिं । एह निरदोसु दोसु विधि वामहिं^६ ॥
 विधि राम की करनी कठिन जेहि मातु कीन्ही वावरी ।
 तिहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सराहन^७ रावरी ॥
 तुलसी न तुम्ह सौँ राम प्रीतमु कहत हौँ सौँहिं क्षिण^८ ।
 परिनाम मगलु जानि अपने आनिण धीरज क्षिण ॥

१०—अतरजामी राम, सकुच मप्रेम कृपायतन ।
 चलिअ करिअ विस्वाम, एह विचार दृढ आनि^{१०} मन ॥२०२॥

१ शृङ्गु है मूरति जिसकी सो शृङ्गु मूरति (बहुमूर्ति) २ घायु ३ कभी
 नीचा दिगाती है ४ शोषनाग ५ उत्पन्न किया ६ बुद्धि ७ प्रामा
 भाग्य स्वरूप १० लोकर ११ योना मिलना (भाय वा ६ स०)

सखा वचन सुनि उर वरि वीरा । वास^१ चले सुमिरत रघुनीरा
 यह सुधि पाइ नगर-नर-नारी । चले विलोकन आरत भारी
 परदक्षिणा^२ करि करहिं प्रनामा । देहिं कैकडहि गुरोरि^३ निकासा
 भरि भरि वारि विलोचन लेही । वाम विधातहि दूपन देही
 एक सराहहिं भरनसनेहू । कोउ कह नृपति निवाहेउनेहू
 निदहि आपु सराहि निपादहि । को कहि सकै विमोहविपादहि
 एहि विधि राति लोगु मवु जागा । भा भिनुसार^४ गुदारा^५ लाग
 गुरहि सुनाव चढाइ सुहाई । नई नाव सब मातु चढाई
 दड^६ चारि महँ भा सबु पारा । उत्तरि भरत तत्र सबहिं सँभार
 दो०—प्रातक्रिया करि मातुपद, बदि गुरहि सिर नाड ।

आगें किए निपादगन, दीन्हेउ कटक^७ चलाड ॥२०॥
 कियेउ निपादनाथ अगुआर्ड^८ । मातु पालकी सकल चलाई
 साथ बोलाड भाड लघु दीन्हा । विप्रन सहित गमनु गुरु कीन्हा
 आप मुरसरिहि कीन्हा प्रनामू । सुमिरे लपनसहित सियराम
 गवने भरत पयादेहि पाए । कोतल सग जाहिं डुरिआए^९
 कहहिं सुसेवक बाराहि वारा । होइअ नाथ अस्व असवारा
 राम पयादेहि पाय सिधाए । हमकहँ रथ गज वाजि बनाए
 सिरभर जाउँ उचित अस मोरा । सब ते मेवकधरसु कठोरा
 देखि भरतगति, सुनि मृदुवानी । सब सेवकगन गरहिं गलानी
 दो०—भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्हा प्रवेसु प्रयाग ।

५७. कहत राम सिय राम सिय, उमगि उमगि अनुराग ॥२०॥
 मल्लका^{१०} मल्लकत पायन्ह कैसैं । पकजक्रोस^{११} थोसकन जैसैं

१ (निवास) डेरा २ (प्रदक्षिणा) परिक्रमा ३ दोप ४ (निक्रम
 या इच्छा भर के ५ सबेरा ६ पार उतरने लगे ७ घड़ी ८ सेना ९ प
 प्रशान १० रस्सी पकडे हुए ११ छाले १२ कमल के फूल
 भीतरी भाग ।

एत पयादेहि आण आजू । भयेउ दुखित सुनि सकल समाजू ॥
 हरि लोन्हि सन लोग नहाण । कीन्ह प्रनामु त्रिवेनिहि आण ॥
 त्रिविधि सितासित^१ नीर नहाने । दिए दान महिसुर^२ मनमाने ॥
 स्यामल धवल हिलोरे । पुलकि सरौर भरत कर जोरे ॥
 प्रद तीरथराऊ । वेदप्रदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥
 भीस्र त्यागिनिज वग्मू । आरत काह न करै कुरुग्मू ॥
 जिय जानि सुजान सुदानी । मफल करहि जग जाचकानी^३ ॥

१०—अरथ न धरम न कामरुचि गति न चहउँ निरखान^४ ।
 जनम जनम रति रामपद यह वरदानु न आन ॥२०५॥
 राम कुटिल करि मोही । लोग कहेउ गुर साहिव द्रोही ॥
 राम-चरन रति मोरें । अनुदिन^५ वढै अनुग्रह^६ तोरें ॥
 जनम भरि सुरति विसारेउ । जौचत जलु पवि प्राहन^७ डारेउ ॥
 रटनि घटे घटि जाई । वढे प्रेम सन भाँति भलाई ॥
 कहि^८ वान^९ चढै जिमि दाहे । तिमि प्रियतम पद नेह निगाहे ॥
 वचन सुनि माँझ त्रिवेनी । भइ मृदुवानि सु-मगल-देनी ॥
 भरत तुम्ह सब विधि साधू । राम चरन अनुराग-अगाधू ॥
 गलानि करहु मन माहीं । तुम्ह सम रामहिं कोउ प्रिय नाहीं ॥

दो०—तनु पुलकेउ हिय हरपु सुनि, वेनिवचन अनुकूल ।
 भरत धन्य कहि धन्य सुर हरपित वरपहिं फूल ॥२०६॥
 तीरथ राज-निवासी । वैपानम वदु गृही उदासी ॥
 परसपर मिलि दस पाँचा । भरत सनेहु सीलु सुचि साँचा ॥
 राम-गुन ग्राम मुहाण । भरद्वाज मुनिवर पहिं आए ॥

१ माँगना २ क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध है ३ वानप्रस्थ, ब्रह्मचारी गृहस्था
 और उदासीन ।

४ सपेद ५ इयाम ६ ब्राह्मण ७ भिक्षुक का प्रश्न ८ मोक्ष ९ दूसरा
 १० दिन प्रतिदिन ११ कृपा १२ बज्र और पत्थर १३ सोनेमें १४ वर्ण, भाव १५ प्रसन्न ।

सखा वचन सुनि उर धरि धीरा । वास^१ चले सुमिरत रघुगौरा
 यह सुधि पाइ नगर-नर-नारी । चले विलोकन आरत भारी
 परदक्षिणा^२ करि करहि प्रनामा । देहि कैकडहि सोरि^३ निवामा^४
 भरि भरि वागि विलोचन लेही । वाम विधातहि वृषन देही
 एक सराहहि भरतसनेहू । कोउ कह नृपति निवाहे^५ नेहू
 निदहिं आपु सराहि निपादहि । को कहि सकै विमोहनिपादहि
 एहि विधि राति लोगु सबु जागा । भा भिनुसार^६ गुदारा^७ लागु
 गुरहिं सुनाव चढाइ सुहाई । नई नाव सन मातु चढाई
 दड^८ चारि महँ भा सबु पारा । उतरि भरत तब सगहिं सँभार
 दो०—प्रातक्रिया करि मातुपद, वदि गुरहिं सिर नाइ ।

आगें किए निपादगन, दीन्हेउ कटक^९ चलाइ ॥२०ः
 कियेउ निपादनाथ अगुआइ^{१०} । मातु पालकी सकल चलाई
 साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा । विप्रन सहित गमनु गुरु कीन्हा
 आप मुरसरिहि कीन्हा प्रनामू । सुमिरे लपनसहित सियराम
 गवने भरत पयादेहि पाए । कोतल सग जाहिं डुरिआए^{११}
 कहहिं सुसेवक वारहिं वारा । होइअ नाथ अस्व असवारा
 राम पयादेहि पाय सिधाए । हमकहँ रथ गज वाजि बनाए
 सिरभर जाउँ उचित अस मोरा । सब ते सेवकधरमु कठोर
 देखि भरतगति, सुनि मृदुवानी । सब सेवकगन गरहिं गलानी
 दो०—भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्हा प्रवेशु प्रयाग ।

५८- कहत राम सिय राम सिय, उमगि उमगि अनुराग ॥२१
 भलका^{१२} भलकत पायन्ह कैसे । पकजकोस^{१३} ओसकन जैसे

१ (निवास) डेरा २ (प्रदक्षिणा) परिक्रमा ३ दोष ४ (निकर
 या इच्छा भर के ५ सवेरा ६ पार उतरने लगे ७ घड़ी ८ सेना ९ १
 प्रदशन १० रम्सी पकडे हुए ११ छाले १२ कमल के फूल,
 भीतरी भाग ।

मातु-कुमत^१ बढई अपमूला तेहि हमार हित कीन्ह वसूला ॥
 कलि-कुकाठ^२ कर कीन्ह कुजत्रू^३ । गाढि अपधि पढि कठिन कुमत्रू^४ ॥
 मोहि लगि यह कुठाट 'तेहि ठाटा' घालेस सत्र जग बाहर पाटा ॥
 मिटइ कुजोग^५ राम फिरि आए । तसहि अपधनहिं आन उपाए ॥
 भरतनचन सुनि मुनि सुख पाई । सत्रहि कीन्हि तहु भाति बड़ाई ।
 तात करहु जनि मोचु त्रिसेयी । मत्र दुख मिटिहिं गमपग देखी ॥
 दो०—करि प्रबोध मुनिवर कहेउ अतिथि^६ प्रेमप्रिय होहु ।

कद मूल फल फूल हम देखि लेहु करि छोहु २१३ ।

सुनि मुनिनचन भरत हिय सोचू । भयेउ कुअपसर कठिन मैंकोचू ॥
 जानि गरुड^७ गुरु गिरा बहोरी । चरन बदि बोले कर जोरी ॥
 सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । परमधरम यहु नाथ हमारा ॥
 भरतनचन मुनिवर मन भाये सुचिसेवकसिष^८ निकटतुलाए ॥
 चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । कद मूल फल आनहु जाई ॥
 भलेहि नाथ कहि तिन्ह सिर नाए प्रमुदित निज निन काज सिपाए ॥
 मुनिहि सोचु पाहुन बड नेरता । तसि पूजा चाहिअ जस देवता ॥
 सुनिरिधिसिधिसिनिमादिक आई । आयसु होइ सो करहि गोसाई ॥

कीरति विधु तुम्ह कीन्हि अनूपा । जहँ वस राम प्रेम-मृग-रूपा ॥
 तात गलानि करहु जिय जाँ । डरहु दरिद्रहि पारस पाँ
 सुनहु भरत हम भूठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं
 सब साधन^१ कर सुलभ सुहावा । लपन-राम-सिय-दरसन पावा
 तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा । सहित प्रयाग सुभाग हमारा
 भरत धन्य तुम्ह जग जसु जयेउ । कहि अस प्रेम-भगन मुनिभयेऊ
 सुनि मुनिवचन मभासद हरपे । साधु सराहि सुमन सुर वरपे
 धन्य धन्य धुनि गगन प्रयागा । सुनि सुनि भरत भगन अनुरागा

दो०—पुलकगात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नयन ।

करि प्रनाम मुनिमडिलिहि, बोलै गदगद वयन ॥२११॥

मुनिसमाजु अरु तीरथराजु । साँचिहु सपथ अघाइ अकाजु
 एहि थल जौं कहु कहिअ बनाई । एहि सम अधिक न अघ अधमाई
 तुम्ह सरवग्य^२ कहँ सतिभाऊ । उर-अतर-जामी रघुराऊ
 मोहि न मातु करतव कर सोचू । नहिँ डरु जिय जग जानहि पोचू
 नाहिँन डरु विगरहिँ परलोक् । पितुहु भरन कर मोहि न सोक्
 सुकृत सुजस भरि भुवन सुहाए । लद्धिमन राम सरिस सुत पाए
 रामधिरह तजि तन छनभगू । भूप सोच कर कवन प्रसगू^३
 राम लपन सिय विनु पग पनहीं । करि मुनिवेष फिरहिँ वन वनहीं ।

दो०—अजिन^४ वसन, फल असन, महि सयन डसि कुस पात

असि तस्तर नित सहत हिम, आतप वरपा वात । ११२॥

एहि दुरसदाह दहड दिन छाती । भूख न वासर नीद न राती ॥
 एहि कुरोग करि औपधि नाहीं । सोधेउ^५ सकल विश्व मनमाहीं ॥

१ यहाँ

रामप्रेम रूप उपमेय और विधु एव
 क कारण रूपकाए धार है ।

आदि २ नीचता ३ सब जानने वाले

७ मृगचर्म ८ घाम ९ मोजा ।

मातु कुमत^१ वढई अघमूला । तेहि हमार हित कीन्ह बसूला ॥
 कलि कुकाठ^२ कर कीन्ह कुज नू^३ । गाडि अग्रधि पढि कठिन कुमनू^४ ॥
 मोहि लागि यह कुठाट^५ तेहि ठाटा घालेसि मन जग बाहर-चाटा ॥
 मिटइ कुजोग^६ राम फिरि आए । बसहि अवध नहि आन उपाए ॥
 भरतचन सुनि मुनि सुख पाई । सग्रहि कीन्हि नहु भाति बडाई ।
 तात करहु, जनि सोचु विसेखी । सग्र दुख मिटिहिं रामपग देखी ॥

दो०—करि प्रबोध मुनिग्र कहेउ, अतिथि^७ प्रेमप्रिय होहु ।

कद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु २१३ ।

मुनि मुनिचन भरत हिय सोचू । भयेउ कुअवसर कठिन सँकोचू ॥
 जानि गुरुइ^८ गुरु गिरा नहोरी । चरन बदि बोले कर जोरी ॥
 सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । परमपरम यहु नाथ हमारा ॥
 भरतचन मुनिवर मन भाये सुचि मेरकसिप^९ निकटतुलाए ॥
 चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । कद मूल फल आनहु जाई ॥
 भलेहिनाथ कहि तिन्ह सिर नाए प्रमुदित निज निज काज सिधाए ॥
 मुनिहि सोचु पाहुन बड नेवता । तमि पूजा चाहिअ जस देवता ॥
 मुनिरिधिसिधिसिनिमादिक आई । आयसु होइ सो करहि गोसाई ॥

दो०—राम विरह व्याकुल भरतु, सानुज सहित समाज ।

पहुनाई करि हरहु स्रम, कहा मुदित मुनि राज ॥२१४

रिधिसिधिरि धरि मुनिग्र जानी । बड भागिन आपुहि अनुमानी ॥
 कहहिं परसपर सिधि समुदाई, अतुलित^{१०} अतिथिरामलघुभाई ॥
 मुनिवद बढ करिअ सोइ आजू । होइ सुखी सग्र राजसमाजू ॥
 अम कहि रचेउ रुचिर गृहनाना । जेहि त्रिलोकि मिलखाहिं प्रिमाना ॥

१ माता की तुरी सम्मति २ पाप रूपी तुरे काट (बसूल) का ३ तत्र
 शास्त्र का प्रयोग या कोरहू ४ कुयोग ५ सजाया ६ गष्ट किया ७ तितर
 बितर ८ युग सयोग ९ महमान १० भारी (मानन योग्य) ११ दिव्य
 १२ अतोल ।

कीरति विधु तुम्ह कीन्हि अनूपा । जहँ वस राम प्रेम-मृग-रूपा ॥
 तात गलानि करहु जिय जाँए । डरहु दरिद्रहि पारस पाँए ॥
 सुनहु भरत हम भूठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ॥
 सब सावन^१ कर सुलभ सुहावा । लपन-राम-सिय दरसन पावा ॥
 तेहि फल कर फलु दरम तुम्हारा । सहित प्रयाग सुभाग हमारा ॥
 भरत धन्य तुम्ह जग जसु जयेउ । कहि अस प्रेम-मगन मुनिभयेऊ ॥
 सुनि मुनिवचन सभासद हरपे । साधु सराहि सुमन सुर वरपे ॥
 धन्य धन्य धुनि गगन प्रयागा । सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा ॥

दो०—पुलकगात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नयन ।

करि प्रनाम मुनिमंडिलिहि, बोले गदगद वयन ॥२११॥

मुनिसमाजु अरु तीरथराजु । साँचिहु सपथ अघाइ अकाजू ॥
 एहि थल जौं कछु कहिअ वनाई । एहि सम अधिक न अघ अधमाई^६ ॥
 तुम्ह सरवग्य^५ कहउँ सतिभाऊ । उर-अतर-जामी रघुराऊ ॥
 मोहि न मातु करतव कर सोचू । नहि दुख जिय जग जानहि पोचू^४ ॥
 नाहिन डरु विगरहिं परलोक् । पितुहु मरन कर मोहि न सोकू ॥
 सुकृत सुजस भरि भुवन सुहाए । लछिमन-राम सरिस सुत पाए ॥
 रामविरह तजि तन छनभगू । भूप सोच कर कवन प्रसगू ॥
 राम-लपन-सिय विनु पग पनहीं । करि मुनिवेष फिरहिं बन बनहीं ॥

दो०—अजिन^२ बसन, फल असन, महि सयन डासि कुस पात ।

वसि तरन्तर नित सहत हिम, आतप^३ वरपा वात । ११२ ॥

एहि दुरादाह दहड दिन छाती । भूख न वासर नींद न राती ॥
 एहि कुरोग करि औपधि नाहीं । सोधेउ^३ सकल विश्व मनमाहीं ॥

१ यहाँ भरत कर्ति रामप्रेम रूप उपमेय और अजु ष्व मृगरूप
 उपमानों म अभेद दिग्गते के कारण रूपकालकार है ।

१ व्रत नियम सयम भाटि २ नीचता ३ सत्र जानने वाले ४ उरा
 ५ नाशवान ६ श्रचा ७ मृगचर्म ८ घाम ९ ग्योता ।

मातु कुमत^१ बढई अघमूला । तेहि हमार हित कीन्ह बसूला ॥
 कलि-बुकाठ^२ कर कीन्ह कुजत्रू^३ । गाडि अवधि पडि कठिन कुमत्रू ।
 मोहि लागि यह कुठाट^४ तेहि ठाटा^५ घालोस^६ मन जग बाहर-बाटा ।
 मिटइ कुजोग^७ राम फिरि आए । बमहि अवध नहिं आन उपाए ॥
 भरतबचन सुनि मुनि सुख पाई । सबहि कीन्हि बहु भाति उडाई ।
 तात करहु जनि सोचु विसेयी । सत्र दुख मिटिहिं रामपग देयी ॥
 दो०—करि प्रबोध मुनिवर कहेउ, अतिथि^८ प्रेमप्रिय होहु ।

कद मूल फल फूल हम देहि लेहु करि छोहु २१३ ।

सुनि मुनिबचन भरत हिय सोचू । भयेउ कुअवसर कठिन सँकोचू ॥
 जानि गुरूइ^९ गुरु गिरा बहोरी । चरन बढि बोले कर जोरी ॥
 सिर धरिआयसु करिअ तुम्हारा । परमरम यहु नाथ हमारा ॥
 भरतबचन मुनिवर मन भाये सुचिमेवकसिप^{१०} निकटबुलाए ॥
 चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । कद मूल फल आनहु जाई ॥
 भलेहिनाथ कहि तिन्ह सिर नाए प्रमुदित निज निज काज सिधाए ॥
 मुनिहि सोचु पाहुन बड़ नेरता । तसि पूजा चाहिअ जस देवता ॥
 सुनिरिधिसिधियनिमादिक आई । आयसु होइ सो करहि गोसाई ॥

दो०—राम विरह व्याकुल भरतु, मातुज सहित समाज ।

पहुनाई करि हरहु स्रम, कहा मुदित मुनि राज ॥२१४॥

रिधिसिधिसिर वरि मुनिवर बानी । बड भागिन आपुहि अनुमानी ॥
 कहहि परसपर सिधि समुदाई, अतुलित^{११} अतिथिरामलघुभाई ।
 मुनिबद बद करिअ सोइ आजू । होइ सुखी सत्र राजसमाजू ॥
 अस कहि रचेउ रुचिर गृहनाता । जेहि बिलोकि मिलखाहिं निमाना ॥

१ माता की दुरी सम्मति २ पाप रूपी तुरे काठ (बबूल) का ३ तत्र
 शान्त्र का प्रयोग या कोव्हू ४ कुयोग ५ सजाया ६ नष्ट किया ७ तितर
 बितर ८ बुग सयोग ९ महमान १० भारी (मानन योग्य) ११ सिध्य
 १२ अतोत् ।

भरतसरिस को राम सनेही । जगु जप राम, राम जप जेही
दो०—मनहुँ न आनिअ अमरपति, रघुवर-भगत-अवाजु ।

अजसु लोक, परलोक दुख, दिन दिन सोकसमाजु २१
सुनु सुरेस । उपदेसु हमारा । रामहि सेवक परम पियारा
मानत सुख सेवक-सेवकाई ॥ सेवकबैर वैर अधिकारै
जद्यपि सम, नहि राग न रोपू । गहहि न पापपूनु गुन दोपू
करम प्रधान विस्व करि राखा । जो जस करइ सो तस फलु चार
तदपि करहि सम-विपम विहारा । भगत अभगत हृदय अनुसार
अगुन^१ अलेख^२ अमान^३ एकरस^४ । रामु सगुन^५ भए भगत प्रेम बस
राम सदा सेवक रुचि राखी । वेद-पुरान साधु सुर साखी
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई । करहु भरत पद प्रीति सुहाई
दो०—राम-भगत पर हित निरत^१, परदुरग दुखी दयाल ।

भगतसिरोमनि भरत ते, जनि डरपहु सुरपाल ॥२०॥
सत्यसध प्रभु सुर-हित-कारी । भरत राम-आयसु अनुसारी
स्वारथविवस विकल तुम्ह होहू । भरतु दोपु नहि राउर मोहू^१
सुनि सुरवर सुर-गुर-वर-त्रानी । भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ।

स्नानादि मे डेर मे भाये, इधर राजा ने द्वादशी धीतो जान ब्रह्मणों के
सलाह से पारण कर लिया । ऋषि ने यह जान कर क्रोध कर जटा मे
राक्षसी पेटा की । वह जैसे ही राजा को गाने दीदी वैसे ही चक्रमुदर्शन
ने उसे मार डाला और ऋषि का पीछा किया । उनको किसी दत्ता
शरण न दी । अन्त म राजा ने ही चक्रमुदर्शन को निशरण कर ऋषि
को बचाया और भोजन कराके आप खाया । इस क्षणके मे एक वर्ष का
समय लगा ।

१ भक्ता का इच्छा के अनुसार सम विपम विहार अर्थात् उपर के
नियमों का उल्लंघन कर देत ह ।

१ तानों गुणों से रहित २ देखने में न भावे ३ मान रहित ४ एक
से ५ साकार ६ परांपकार में लगे हुए ७ अज्ञान ।

बरपि प्रसून हरपि सुरराऊ । लगे सराहन भरत सुभाऊ ॥
 एहि निधि भरत चले मग जाहीं । दसा देखि मुनि भिद्ध भिहाहीं ॥
 जवहिं रामु फहि लेहिं उमात्मा । उमगत^१ प्रेम मनहुँ चहुँ पासा ॥
 इवहिं^२ वचन मुनि कुलिस पपाना^३ पुरजन प्रेम न जाइ बराना ॥
 शीघ्र वास करि जमुनहिं आए । निगमि नीरु लोचन जल द्याए ॥
 दो०—रघु-वर-वरन^४ त्रिलोकि पर, वारि समेत समाज ।

होत भगन वारिधि निरह^५, चढे त्रिनेत्र-जहाज ॥२०१॥
 जमुनतीर तेहि दिन करि ग्रासू । भयेउ समयसम मत्रहि सुपासू^६ ॥
 रातिहि घाट घाट की तरनी । आई अगनित जाहि न बरनी ॥
 प्राण पार भये एकहि गेवा । तोपे राम सरा की सेवा ॥
 चले नहाइ नदिहि सिरु नाई । माथ निपात्नाथ दोउ भाई ॥
 आगे मुनि वर ग्राहन आछे । राज समाज जाइ मव पाछे ॥
 तहि पाछे दोउ बधु पयादे । भूपन प्रसन वेष सुठि सादे ॥
 मैत्रक सुहृ^७ सचिवसुत साथी । मुमिरत लपनु सीय रघुनाथा ॥
 जहँ जहँ राम-वास विस्रामा । तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा ॥
 दो०—मगनामी नरनारि सुनि, धाम काम तजि धाइ ।

देखि मरुप मनेह बस मुठित जनमफलु पाइ ॥२०२॥
 कहहिं सप्रेम एक एक पाही । राम लपनु सरि होहिं कि नाही ॥
 वय रघु^८ वरन रूपु सोइ आली । सीलु सनेहु सरिस सम चाली ॥
 वेपु न सो, सरि । सीय न सगा । आगे अनी^९ चली चतुरगा ॥
 नहिं प्रसन्नमुख मानस^{१०} खेदा । सरि मदेह होइ एहि भेदा ॥
 तासु तरक तियगन मनमानी । कहहिं मकल तोहि समन सयानी ॥
 तेहि मराहि वानी पुर पूजी । बोली मधुर वचन तिय दूजी ॥
 फहि सप्रेम सब कथा प्रसग^{११}, जेहि निधि राम राजु-रस भगू^{१२} ॥

१ उमडता है २ पिबलत है ३ (पापान) पत्थर ४ राम के रग का (नीग) ५ त्रियोग रूपी समुद्र म ६ सुविधा ७ शरीर ८ सेवा ९ मानसिक १० राम के राज्य तिलक के आनन्द का विगाड ।

भरतसरिस को राम सनेही । जगु जप राम, राम जप जेही ॥
दो०—मनहूँ न आनिअ अमरपति, रघुवर-भगत-अकाजु ।

अजसु लोक, परलोक दुख, दिन दिन सोकसमाजु २१९।
सुनु सुरेस ! उपदेसु हमारा । रामहिं सेवक परम पियारा ॥
मानत मुख सेवक-सेवकाई । सेवकवैर वैरु अधिकारि ॥
जद्यपि सम, नहिं राग न रोपू । गहहिं न पापपूनु गुन दोपू ॥
करम प्रधान विख करि राखा । जो जम करइ सो तस फलु चारखा ॥
तदपि करहिं सम विपम विहारा । भगत अभगत हृदय अनुसार ॥
अगुन^१ अलेख^२ अमान^३ अकरस^४ । रामु सगुन^५ भग भगत प्रेम बस ॥
राम मदा सेवक रुचि राखी । वेद पुरान साधु सुर साखी ॥
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई । करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥
दो०—राम भगत पर हित-निरत^६, परदुख दुरी दयाल ।

भगतसिरोमनि भरत ते, जनि डरपहु सुरपाल ॥२२०॥
सत्यसध प्रभु सुर-हित-कारी । भरत राम-आयसु-अनुसारी ॥
स्वारथविवस विकल तुम्ह होहू । भरतु दोपु नहि राउर 'मोहू' ॥
सुनि सुरवर सुर-गुर-वर-बानी । भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ॥

स्नातादि से देर में आये, इधर राजा ने द्वाण्शी धीती जान ब्रह्मणों की सलाह से पारण कर लिया । ऋषि ने यह जान कर क्रोध कर जटा से राक्षसी पैदा की । यह जैसे ही राजा को ग्याने दौड़ी वैसे ही चक्रसुदर्शन ने उसे मार डाला और ऋषि का पाँछा किया । उनको किसी दक्षता न शरण न दी । अन्त में राजा ने ही चक्रसुदर्शन को निवारण कर ऋषि को बचाया और भोजन कराके आप ग्याया । इस झगडे में एक वर्ष का समय लगा ।

१ भक्ता की इच्छा के अनुसार सम विपम विहार - अर्थात् ऊपर के नियमों का उल्लंघन कर देते ह ।

२ तीनों गुणों से रहित ३ देग्ने में न आवे ३ मान रहित ४ एक से ५ साकार ६ परोपकार में लगे हुए ७ अज्ञान ।

वरपि प्रसून हरपि सुरराऊ । लगे सराहन भरत मुभाऊ ॥
 एहि निधि भरत चले मग जाहीं । दसा देगि मुनि सिद्ध सिहाहीं ॥
 जबहि रामु कहि लोहि उसासा । उमगत^१ प्रेम मनहुँ चहुँ पासा ॥
 स्वहि^२ वचन मुनि कुलिस पपाना^३ पुरजन पेम न जाइ बराना ॥
 बीच पास करि जमुनहिं आए । निररि न्नीरु लोचन जल छाए ॥

दो०—रघु-वर वरन^४ विलोकि वर, वारि समेत समाज ।

होत मगन वारिधि त्रिरह^५, चढे त्रिवेक-जहाज ॥२०१॥

जमुनतीर तेहि दिन करि वास । भयेउ समयसम सत्रहिं मुपास ॥
रातिहि घाट घाट की तरनी । आई अगनित जाहि न बरनी ॥
 प्रात पार भये एकहि खेवा । तोपे राम सगा की सेवा ॥
 चले नहाइ नदिहि सिरु नाई । साथ निपादनाथ दोउ भाई ॥
 आगे मुनि वर वाहन आछे । राज समाज जाइ मव पाछे ॥
 तेहि पाछे दोउ बधु पयादे । भूपन बसन वेप मुठि भादे ॥
 सेनक मुहद सचिवसुत साथ । सुमिरत लपनु सीय रघुनाथा ॥
 जहँ जहँ राम-वास विस्त्रामा । तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा ॥

दो०—मगवासी नरनारि सुनि, धाम काम तजि धाट ।

देखि सरूप मनेह बस मुदित जनमफलु पाइ ॥२०२॥

कहहिं सप्रेम एक एक पाहीं । राम लपनु सरि होहि कि नाहीं ॥
 वय रघु^६ वरन रूपु सोइ आली । सीलु सनेहु सरिस सम चाली ॥
 वपु न सो, सरि सीय न सगा । आगे अनी^७ चली चतुरगा ॥
 नहिं प्रसन्नमुख मानस^८ खेदा । सरि सदेह होइ एहि भेदा ॥
 तासु तरक तियगन मनमानी । कहहिं सकल तोहि समन मयानी ॥
 तेहि सराहि वानी पुर पूर्जा । बोली मधुर वचन तिय दूजी ॥
 कहि सप्रेम सब कथा प्रसगू । जेहि निधि राम राजु रस-भगू^९ ॥

१ उमडता है २ पिबलते है ३ (पापाण) पत्थर ४ राम व रग का (नीग) ५ विभाग रूपी समुद्र म ६ सुविधा ७ शरीर ८ मेला ९ मानसिक १० राम के राज्य तिलक के आनन्द का विगाड ।

भरतहि बहुरि सराहन लागी । सील सनेह सुभाय सुभागी ।
दो०—चलत पयादे रात फल, पिता दीन्ह तजि राजु ।

जात मनावन रघुवरहिं, भरतसरिस को आजु ॥९२३

भायप भगति भरत आचरनू । कहत सुनत दुख-दूपन हरनू ॥
जो कछु कहव थोर सखि सोई । रामवधु अस काहे न होई ॥
हम सब सानुज भरतहि देखे । भइन्ह धन्य जु प्रतीजन लेखे ॥
सुनि गुन देखि दसा पछिताही । कैकेइ-जननि-जोगु सुतु नाही ॥
कोउ कह दूपनु राभिहि नाहिन । विवि सवु कीन्ह हमहि जो दाहिन ॥
कहँ ए न लोक-वद-विधि हीनी । लघुतिय कुल-करतृति मलीनी ॥
बसहि कुदेम कुगाँव कुनामा । कहँ एह दरसु पुन्य परिनामा ॥
अस अननु अचिरजु प्रति ग्रामा । जनु मरुभूमि कलपतरु जामा ॥

दो०—भरत दरसु देखत खुलेउ, मग लागन्ह कर भागु ।

जनुसिधल वामिन्ह भयेउ, विवि बस सुलभ प्रयागु ॥९२४

निज गुन सहित राम-गुन-गाथा । सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥
तीरथ मुनि आस्रम सुरधामा । निरखि निमज्जहि करहिं प्रनामा ॥
मिलहि किगत कोल वनग्रामी । वैपानस वटु जती उदासी ॥
करि प्रनाम पूजहिं जेहि तेही । केहि वन लपनु राम वैदेही ॥
ते प्रनु ममाचार सब कहती । भरतहि देखि जनम फलु लहती ॥
जे जन कहहि “कुमल” हम देखे ॥ ते प्रिय राम लपन-सम लेखे ॥
एहि विधि व्रक्त मवहिं सुवानी । सुनत राम वन वास-कहानी ॥

दो०—तेहि वासर बसि प्रात ही, चले सुमिरि रघुनाथ ।

रामदग्म की लालसा, भरत सरिस सब साथ ॥९२५॥

मगल सगुन होहि सब काहू । फरकहिं सुखद विलोचन बाहू ॥
भरतहि सहित ममाज उछाहू । मिलहहिं रामु मिटिहि दुगदाहू ॥

१ अथ त्रिषो के हिमात्र मे २ मागवाट, महस्थल ३ दग्म कर
४ स्नात करते है ५ अच्छी तरह ।

करत मनोरथ जस जिय जाके । जाहि सनेहसुरा^१ सब छाके ॥
 सिथिल अग पग मग डगि डोलहिं । त्रिहवल उचरत^२ प्रेमयस मोलहिं ॥
 राम सग्या तेहि समय देखावा । सैलमिरोमनि सहज सुहावा ॥
 जासु समीप मरित पय तीग । सीय समेत बसहिं दोउ घोरा ॥
 देखि करहिं सब दड प्रनामा । कहि जय जानकि जीवन रामा ॥
 प्रेम भगन अस राज समाज् । जनु फिरि अग्रध चले रघुराज् ॥

दो०—भरत प्रेम तेहि समय जम, तस कहि सकइ न सेपु ।

१—कनिहि अगम जिमि ब्रह्मसुरसु अह-मम मलिन जनेपु ॥२०६

सकल मनेह सिथिल रघुनाथ वें । गण कोम दुड दिनकर ढरके^३ ॥
 जल थल देखि बसे, निसि बीते । कान्ह गवनु रघु नाथ पिरीते ॥
 उहाँ रामु रजनी अचसंग्या^४ । जागे मीय मपन अस देखा ॥
 महित समाज भरत जनु आए । नाथ त्रियोग ताप तन ताए^५ ॥
 सकल मलिन मन दीन दुखारी । देखी नामु आन अनुहारी^६ ॥
 सुनिसिय मपन भरे जल लोचन । भए सोच बन मोच त्रिमोचन ॥
 लपन मपन एह नीक न होई । कठिन कुचाह सुनाइहि काई ॥
 अस कहि बन्धु ममेत नहाने । पूजि पुरारि^७ माधु मनमाने ॥

छंद—सनमानि सुर मुनि वडि बैठे उतर दिसि देखत भये ।

नभ धूरि खग मृग भूरि भागे सकल प्रसु आस्रम गए ॥

तुलसा उठे अबलोकिकि कारनु काह चित सचुकित रहे ।

सब नमाचार किरात कोलन्हि आइतेहि अग्रसर कहे ॥

सो०—सुनत सुभगल धैन, मन प्रमोद तन पुलक भर ।

मरठ मरोरुह नेन, तुलसी भरे सनह जल ॥२०७॥

१ स्नेह रूपा मद २ लडक्यडाती घान ३ दिन ढले ४ थाडी रात
 रहे ५ नाथ हुए ६ और ही भौंति ७ (पुर = त्रिपुर + वरि = बरि) महाद्वय ।

*कवि को ऐसा दुस्तर है जैसा कि अकार से मरि मनुष्या को महा सुख ।

भरतहि वधुरि सराहन लागी । सील सनेह सुभाय सुभागी
दो०—चलत पयादे खात फल, पिता दीन्ह तजि राजु ।

जात मनावन रघुनरहिं, भरतसरिस को आजु ॥१२३॥

भायप भगति भरत आचरनू । कहत सुनत दुख दूपन हरनू
जो कछु कहव थोर सरिस सोई । रामवधु अस काहे न होई
हम मव भानुज भरतहि देखे । भइन्ह वन्य जुगतीजन लेखे
सुनि गुन देखि दम्मा पछिताही । केकेइ-जननि-जोगु सुनु नाहीं
कोउ कह दूपनु रानिहि नाहिन । विविमयु कीन्ह हमहिं जो दाहि
कहै ह न लोक-वद-विधि हीनी । लघुतिय कुल-करतूति मलीन
वसहि कुदेस कुगाँव कुनामा । कहै एह दरसु पुन्य परिनामा
अम अनदु अचिरजु प्रति प्रामा । जनु मरुभूमि कलपतरु जा
दो०—भरत दरसु देखत सुलेउ, मग लागन्ह कर भागु ।

जनुसिंवल वासिन्ह भयेउ, विधि वम सुलभ प्रयागु ॥२०॥

निज गुन-सहित राम गुन-गाथा । सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथ
तीरथ मुनि आस्रम सुरधामा । निरखि निमज्जहिं करहिं प्रना
मिलहिं किगत कोल वनगामी । वैपानस बटु जती उदासी
करि प्रनामु पूजहिं जेहि तेही । केहि वन लपनु राम वैदेही
ते प्रभु समाचार सब कहही । भरतहिं देखि जनम-फलु लहहं
जे जन कहहिं “कुसल” हम देखे । ते प्रिय राम-लपन-सम-लेखे
एहि विधि वृक्षत मवहिं सुवानी । सुनत राम वन-वास-कहानी

दो०—तेहि वासर बसि प्रात ही, चले सुमिरि रघुनाथ ।

रामदरस की लालसा, भरत सरिस सत्र साथ ॥२०॥

मगल मगुन होहि सब काहू । फरकहि सुरद विलोचन बाहू
भरतहि सहित ममाज उद्याहू । मिलहहिं रामु भिटिहि दुखदाहू

करत मनोरथ जस जिय जाके । जाहिं सनेहसुरा^१ सत्र छाके ॥
 सिथिल अग पग मग डगि डोलहि । त्रिहवल बचन^२ प्रेमप्रम गोलहि ॥
 राम सग्या तेहि समप्र देखाया । सैलसिरोमनि सहज सुहावा ॥
 जासु मभीप सरित पय तीरा । सीय नमेत ब्रमहि दोउ नीरा ॥
 देखि करहिं सत्र ढड प्रनामा । कहि जय जानकि जीवन रामा ॥
 प्रेम मगन अम राज समाजू । जनु फिरि अग्रध चले रघुगजू ॥

दो०—भरत प्रेमु तेहि समय जस, तम कहि मरुइ न सेपु ।

॥ करिहि अगम जिमि ब्रह्मसुगु, अह मम मलिन जनेण ॥ २०६

सकल सनेह सिथिल रघुवर के । गण कोस दुइ तिनकर ढरके^३ ॥
 जल थल देगि बने, निमि बीते । कान्ह गवनु रघु-नाथ पिरीते ॥
 उहाँ रामु रजनी अग्रसेखा^४ । जागे सीय सपन अम देखा ॥
 सहित समाज भरत जनु आए । नाथ त्रियोग-ताप तन ताण^५ ॥
 सकल मलिन मन दीन दुग्यारी । देखी मासु आन अनुहारी^६ ॥
 सुनिसिय सपन भरे जल लोचन । भण सोच बस सोच विमोचन ॥
 लपन सपन गह नीक न होई । कटिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥
 अम कहि ग्रन्धु ममेत नहाने । पूजि पुरारि^७ माधु सनमाने ॥

धृद—सनमानि सुर मुनि वदि बंठे उतर दिसि देखत भये ।

नभ धूरि रग मृग भूरि भागे सकल प्रभु आस्रम गए ॥

तुलसा उठे अग्रलोकि कारनु काह चित मञ्जकित रहे ।

सत्र ममाचार किरात कोलन्हि आइतेहि अवसर रहे ॥

मो०—सुनत सुमगल वैन, मन प्रमोद तन पुलक भर ।

मरु सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल । २०७ ॥

१ सनेह रूपी मद्र २ लङ्गपडाती वानें ३ दिन ढले ४ थोडा रात
 रह ५ ताप हुण ६ और हां भोति ७ (पुर = त्रिपुर + अति = दूरी) महादेव ।

*कवि को ऐसा दुस्तर है जैसा कि अहवार से मलिन मनुष्या को ब्रह्म सुख ।

बहुरि सोच बस भे सियरवनू । कारन कउन भरत आगमनू ॥
 एक आइ अम कहा बहोरी । सेन सग चतुरग न थोरी ॥
 सो सुनि रामहिं भा प्रति मोचू । इत पितुबच उत बहु सँकोचू ॥
 भरत सुभाउ समझ मन माहीं । प्रभुचित हित थिति^१ पावत नाहीं ॥
 समागन तब भा एह जाने । भरतु कहे महँ साधु सयाने ॥
 लपनु लखेउ प्रमु हृदय रँभारू^२ । कहत समय सम नीति विचारू ॥
 विनु पूँछे कछु कहँ गोमाँई । सेवकुसमय न ढीठ ढिठाई ॥
 तुम्ह सरबग्य सिरोमनि स्वामी । आपनि समुझि कहँ अनुगामी ॥
 दो०—नाथ सुहृद् सुठि सरल चित सील-सनेह निधान ।

सब पर प्रीति प्रतीति जिय जानिअ आपु समान ॥२२॥
 विपयी जीव पाइ प्रमुताई । मूढ मोह बस होहिं जत्ताई^३ ॥
 भरतु नीतिरत साधु मुजाना । प्रभु पद-प्रेम सकल जगु जाना ॥
 तेऊ आजु राजपदु पाई । चले धरम मरजाद मेटाई ॥
 कुटिल कुग्रध कु अवमरु ताकी । जानि राम बनवास एकाकी^४ ॥
 करि कुमत्रु मन साजि समाजू । आए करइ अकटक^५ राजू ॥
 कोटि प्रकार कलपि^६ कुटिलाई । आए दलु बटोरि दोउ भाई ॥
 जौं जिय होति न कपट कुचाली । केहि सोहाति रथ-वाजि गजाली^७ ॥
 भरतहि टोप देइ को जाए^८ । जग वौराड राजपद पाए ॥
 दो०—ससि गुर-तिय-गामी, नहुपु चढेउ भूमि-सुर-जान ।
 लोकवेद तँ विमुख भा अधम न विवेन समान ॥२२९॥

१ (स्थिति) २ खलजली ३ अपने को दिखाते हैं अर्थात् घमड करते हैं ४ अकेला, अमहाय ५ पङ्कज ६ निर्दिष्ट ७ सोचकर ८ हाथियों का समूह ९ व्यर्थ

चन्द्रमा ने त्रिलोकी को जीतकर राजसूय यज्ञ किया और अपनी गुरपत्नी को हर लिया । देवताओं ने भी चन्द्रमा का ही पक्ष लिया । तब ब्रह्मा ने बीच में पड़ तारा वृहस्पति को दिला दी और चन्द्र का पुत्र बुध, जो तारा से पैदा था उसी के यहाँ रहा । बुध के पुत्र पुरुरवा से चन्द्रवशी राजाओं की उत्पत्ति हुई ।

१ स्वयम्भु मनु के वंशजों में राजा अग का पुत्र बधु जन्म से ही दुष्ट-

सहस्रबाहु × सुरनाथ + त्रिसकू । केहि न राजमद दीन्ह हलकू ॥
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । रिपुरिन रच न राखत्र काऊ ॥
एक कीन्हि नहिं भरत भलाई । निदरे राम जानि असहाई ॥

और उपद्रवी था । पिता दुग्धी हो बन को चले गये । यह राज्य पा, मदाथ हो गया, ऋषि मुनि आदि में दृष्टांत द्वारा पासा छुड़ाकर अपनी पूजा कराने को बाधित करने लगा । मुनियों ने समझाया पर ध्यान नहीं दिया, अन्त में उन्होंने ने भ्रम कर लिया ।

‡ सामवती कृतवीर्य के पुत्र सहस्रबाहु अर्जुन ने दत्तात्रेय की सेवा कर सहस्र हाथ पाये । इसकी राजधानी मात्स्यमती नवनाकेमिनारे पर थी । एक बार हमने रावण को बाँध लिया था ।

एक समय यमदक्षि ने राजा सहस्रबाहु का—नो शिकार को आया हुआ था ससैय स्वागत किया । ऋषि का वैभव देख राजा आश्चर्य में आगया । यह सब काम धेनु का पगलम है ऐसा जान कर उस नौगने लगा । ऋषि के न देने पर उह मार डाला । कामधेनु उसमें टूट कर स्वर्ग चली गई और इधर ऋषि के पुत्र परशुगम ने युद्ध में सहस्रबाहु का मार कर पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रिय-रहित कर दिया ।

× एक बार इन्द्र पेरवात हाथी पर बैठ कर जा रहे थे । राह में दुवासा ऋषि ने स्वर्गीय पुष्पों की माला दी । इन्होंने अभिमान वश हाथी की गर्दन पर रख दी । सुगंध में मस्त हाथी ने उसको गिरा दिया । हम पर दुवासा बड़ अग्रसन्न हुए आर इन्द्र को शाप दिया कि तुम्हारा ऐश्वर्य नाश होवे' (२) प्रावासी इन्द्र उपासक थे । भगवान् कृष्ण ने राक्ष किया । हम पर इन्द्र ने दृष्ट हाकर सात दिन घोर वर्षा कर ब्रज बहा बना चाहा । परन्तु भगवान् कृष्ण ने गौरवर्द्धन को धारण कर ब्रज की रक्षा की । अन्त इन्द्र को उनके अधीन होना पडा ।

+ सूर्यवंशी राजा निवन्धन का ज्येष्ठ पुत्र त्रिशकु बचपन से ही दुष्ट था । यह प्राज्ञणा की विधाहिता स्त्रियों को हर लेता था । राजा ने दुग्धी को इसका राज्य में त्रिशकु दिया तथा आप भी राज्य छोड़ तपस्या को चला गया । सूनो राज्य में बहुत उत्पात होत देख राजा ने बन में आकर त्रिशकु को राजा बनाया । राजा होने से पहले त्रिशकु ने विश्वामित्र के

बहुरि सोच वस भे सियरवन् । कारन कवन भरत आगमन् ।
 एक आइ अस कहा बहोरी । सेन मग चतुरग न थोरी ।
 सो सुनि रामहि भा अति सोचू । इत पितुवच उत बधु सँकोचू ।
 भरत सुभाउ समझ मन माहीं । प्रभुचित हित थिति^१ पावत नाहीं ।
 समागन तब भा एह जाने । भरतु कहे महे साधु सयाने ।
 लपनु लखेउ प्रभु हृदय सँभारू^२ । कहत समय सम नीति विचारू ।
 विनु पूँछे कछु कहँ गोसाईं । सेवकुसमय न ढीठ ढिठाईं ।
 तुम्ह सरवग्य सिरोमनि स्वामी । आपनि समुझिकहँ अनुगामी ।
 दो०—नाथ सुइइ सुठि सरल चित सील-मनेह निधान ।

सब पर प्रीति प्रतीति जिय जानिय आपु समान ॥२०८॥
 विपयी जीव पाइ प्रभुताई । मूढ मोह वस होहिं जताई^३ ।
 भरतु नीतिरत साधु सुजाना । प्रभु पद प्रेम सकल जगु जाना ।
 तेऊ आजु राजपदु पाई । चले धरम भरजाद मेटाई ।
 कुटिल कुत्रव कु-अवसरु ताकी । जानि राम वनवास एकाकी^४ ।
 करि कुमत्रु^५ मन साजि समाजू । आए करइ अकटक^६ राजू ।
 कोटि प्रकार कल्पि^७ कुटिलाई । आए दलु बटोरि दोउ भाई ।
 जौं जिय होति न कपट कुचाली । केहि सोहाति रथ-वाजि गजाली ।
 भरतहि दोष देइ को जाए^८ । जग वौराइ राजपद पाए ।
 दो०—ससि गुर-तिय गामी, नहुपु चढेउ भूमि-सुर-जान ।

लोकवेद ते विमुख भा अधम न ॥वेन समान ॥२२९॥

१ (स्थिति) २ गलबली ३ अपने को दिखाते हैं अर्थात् घमड करते हैं
 अकेला, असहाय ५ पदग्रन्थ ६ निर्विघ्न ७ सोचकर ८ हाथियों का समूह ९ व्य

चन्द्रमा ने त्रिलोभी को जीतकर राजसूय यज्ञ किया और अपनी गुरुपद
 को हर लिया । देवताओं ने भी चन्द्रमा का ही पक्ष लिया । तब ब्रह्मा ने पीछ
 पड तारा बृहस्पति को दिला दी और चन्द्र का पुत्र बुध, जो तारा से पैदा
 उसी के यहाँ रहा । बुध के पुत्र पुरुरवा से चन्द्रवशी राजाओं की उत्पत्ति हुई
 १ म्वायम्सु मनु के वंशजों से राजा अग का पुत्र वेनु जन्म मे ही दु

सहस्रगाहु × सुगनाथ + त्रिसकू । केहि न गनमद दीन्ह कलकृ ॥
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । रिपुरिन रच न रागव काऊ ॥
क कीन्ह नहिं भरत भलाई । निदरे राम जानि असहाई ॥

और उपद्रवी था । पिता दुखी हो बन को चले गये । वह राज्य पा, मदाध हो गया, ऋषि मुनि आदि में हठात् इन्द्रोपामना छुड़ाकर अपनी पूजा कराने को बाधित करने लगा । मुनियों ने समझाया पर ध्यान नहा लिया, अन्त में उन्होंने ने भ्रम कर लिया ।

‡ सोमवती कृतवीर्य के पुत्र सहस्रगाहु अर्जुन ने दत्तात्रेय की सेवा कर सहस्र हाथ पाये । इसकी राजधानी माहिष्मती नर्वादा के किनारे पर थी । एक बार इसका राजा को बाँध लिया था ।

एक समय यमदन्ति ने राजा सहस्रगाहु का—जो शिकार को आया हुआ था समैन्ध स्वागत किया । ऋषि का वेषधरैय राजा आश्चर्य में आगया । यह सब काम धेनु का पराक्रम है ऐसा जान कर दम नौंगने लगा । ऋषि के न देने पर उन्हें मार डाला । कामधेनु उससे दूर कर स्वर्ग चली गई और इधर ऋषि के पुत्र परशुगम ने युद्ध में सहस्रगाहु को मार कर पृथ्वी में इकस बार क्षत्रिय रहित कर दिया ।

× एक बार इन्द्र पेरारत हाथी पर बैठ कर जा रहे थे । राह में दुवासा ऋषि ने स्वर्गीय पुष्पा की माला दी । इन्होंने अभिमान बश हाथा की गर्दन पर रख दी । सुगध में मस्त हाथी ने उससे तिरा दिया । दम पर दुवासा यह अप्रसन्न हुए और इन्द्र को शाप दिया कि तुम्हारा पशु नश होवे (२) प्रजासी इन्द्र उपासक थे । भगवान् कृष्ण ने शपथ दिया । इस पर इन्द्र ने रथ होकर सात दिन घोर वर्षा कर प्रज बहा दना चाहा । परन्तु भगवान् कृष्ण ने गौरवर्द्धन को धारण कर प्रज की रक्षा की । अतः इन्द्र को उनके अधीन होना पडा ।

+ सूर्यवशी राजा निवन्धन का ज्येष्ठ पुत्र विशकु बचपन से ही दुष्ट था । यह ब्राह्मणों की विराहिता स्त्रियों को हर लेता था । राजा ने दुखी हो उसको राज्य से निकाल दिया तथा आप भी राज्य छोड़ तपस्या को चले गये । मूले राज्य में बहुत उत्पात होते देख राजा ने बन से भाकर विशकु को राजा बनाया ।

समुक्ति परिहि सोउ आजु विसेखी । समर^१ सरोप राममुख पेखी^२ ॥
 इतना कहत नीतिरस^३ भूला । रत्न-रस विटप^४ पुलक मिस फूला
 प्रभुपद वदि मीमरज राखी । बोले सत्य सहज बलु भाखी ॥
 अनुचित नाथ न मानव मोरा । भरत हमहि उपचार^५ न योरा ॥
 कहँ लागि सहिअ रहिअ मन मारे । नाथ साथ धनु हाथ हमारे ॥

दो०—अत्रिजाति रघु-कुल-जनमु, रामअनुज जगु जान ।

लातहुँ मारे चढति मिर, नीच को वरि समान ॥२३०॥

उठि कर जोरि रजायसुमाँगा । मनहु बीरस सोवत जागा ॥
 बाँधि जटा सिर कसिकटिसा^६था^७ । साजि सरासनु सायकु^८ हाथा ॥
 आजु राममेअक जमु लेऊँ । भरतहिँ समर सिखावन देऊँ ॥
 रामनिराएर कर फलु पाई । सोवहु समरसेज दोउ भाई ॥
 आइ बना भल सकल ममाजू । प्रगट करउँ रिस पाछिलि आजू ॥
 जिमि करि निकर^९दलड^{१०}मृगराजू । लेइ लपेटि लवा^{११}जिमि वाजू ॥
 तैसेहि भरतहि सेनसमेता । मानुज निदरि निपातउँ^{१२}खेता ॥
 जौँ सहाय कर सकर आई । तउ मारो रन रामदोहाई ॥

दो०—अतिसरोप मापे लपनु, लखि सुनि सपथ^{१३} प्रवान ।

सभय लोक सब लोकपति, चाहत भभगि भगान^{१४} ॥२३१॥

राल्पञ्चा की बड़ी रक्षा की थी । इसमें धोये से वशिष्ठ जी गाय माँगी
 गई थी । इस पर तीन भारी पाप होने से (१) ब्रह्मण पत्नी हरण (२)
 पिता का अपमान (३) गाय का मरना, इसका नाम त्रिशकु पडा । त्रिशकु
 ने सदेह स्वग जाना चाहा । ऋषि के अनुचित प्रताप पर उतका अनाएर
 किया । उन्होंने शाप दे चाण्डाल बना दिया । त्रिदवाभिन ने अपनी
 तपस्या बल से इसको स्वग भेना । लेकिन दमेर दिया गया । इस पर
 त्रिदवाभिन ने बीच ही लटका रक्ता । इसकी लार में कर्मनाशानदी प्रती ।

१ उडाइ २ देखकर ३ उचितानुचित का ध्यान न रहा ४ वीर रस रूपी
 वृद्ध ५ छेड़छाड़ ६ तरकस ७ तीर ८ हाथियों के झुँड ९ नष्ट करता है १० एक
 छोटी चिडिया ११ नष्ट कर डालूँ १२ मृगौघ १३ भडभडा कर, डर कर भागना ।

नगुभयमगन'गगनभट् वानी । लपन ग्राह्य बलविपुल वरानी ॥
 तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा । को कहि मक्कड़ को जाननिहारा ॥
 प्रनुचित उचित काज कछु होउ । समृभिकरित्र भल कह सत्र कोऊ ॥
 तहमा करि पाछे पछिताहों । कहहि वेद बुध 'ते बुध नाहों' ॥
 मुनि मुर उचन लपन सकुचाने । राम सीय सादर मनमाने ॥
 मही तात तुम्ह नीति मुहाई । सत्र ते कठिन राजमटु भाई ॥
 तो अँचपत' माँतहि नृप तेई । नाहिन माधु सभा जेहि मेई ॥
 मुनहु लपन भल भरत सरासा । त्रिधि प्रपव महँ सुना न दीसा
 दो०—भरतहि होइ न राजुमटु, त्रिधि हरि हर पट पाइ ।

कनहुँ कि काँजी सीकरनि', छीरसिधु विनसाइ ॥०३०॥

मिर'तरनतरनिहि' मकुगिलई । गगन'मगन मकुमेरहि' मिलई'^१
 गोपद जल बूडहि घटजोनी'^२ । सहज छमा वर द्याडइ छोनी'^३ ।
 मरु फूँक मरु मेरु उडाई । होइ न नृप मट भरतहि भाई ।
 लपन तुम्हार सपथ पितु आना । सुचि सुबधु नहि भरत समाना ॥
 गुन पीर अरवगुन जल ताता । मिलइ रचइ परपच'^४ विधाता ॥
 भरत हस रनि-बस तडागा'^५ । जनम कीन्ह गुन दोष त्रिभागा ।
 हि गुन पय तजि अरवगुन वारी । निज जस जगत कीन्ह उजियारी
 हत भरत गुन सीलु सुभाऊ । प्रेमपयोधि'^६ मगन रघुराऊ ॥

दो०—मुनि रघुवरवानी विबुध, देखि भरत पर हेतु ।

सकल सराहत राम सां, प्रभु को कृपानिकेतु'^७ ॥०३३॥

१ भयभीत २ अथाह ३ पीता ४ पायल ५ (बूटाई) की बूँद ६
 ७ सरता है ७ अँधेरा ८ दोषहर के सूर्य को ९ शायद निगल जाय १०
 ताश में ११ चादल १२ भगस्तमुनि १३ पृथ्वी १४ ससार १५
 लय १६ प्रेम का समुद्र १७ कृपा का घर ।

छेवाहे सागर को तीन खुल्ले में पीनेवाले भगस्त मुनि थोड़े से
 ल में दूध जावें ।

समुक्ति परिहि सोउ आजु विसैखी । समर^१ सरोप राममुख पेखी^२ ॥
इतना कहत नीतिरस^३ भूला । रन-रस विटप^४ पुलक मिस फूला
प्रभुपद वदि सीमरज राखी । बोले सत्य सहज बलु भागी ॥
अनुचित नाथ न मानव मोरा । भरत हमहिं उपचार^५ न थोरा ॥
रहूँ लगि सहिअ रहिअ मन मारें । नाथ साथ धनु हाथ हमारें ॥

दो०—इत्रिजाति रघु-कुल-जनमु, रामअनुज जगु जान ।

लातहुँ मारें चढति सिर, नीच को धूरि समान ॥२३०॥

उठि कर जोरि रजायसुमाँगा । मनहु वीरस सोवत जागा ।
बाँधिजटा मिर कसिकटिमाथा^६ । साजि सरामनु सायकु^७ हाथा ।
आजु रामसेवक जमु लेऊँ । भरतहि समर सिरयाग्न देऊँ ।
रामनिरादर कर फलु पाई । सोवहु समरसेज दोउ भाई ।
आइ बना भल सकल समाजू । प्रगट करउँ रिस पाछिलि आजू ।
जिमिकरि-निकर^८ दलइ^९ भृगराजू । लेइ लपेटि लवा^{१०} जिमि बाजू ।
तैमेहि भरतहि सेनसमेता । सानुज निदरि निपातउँ^{११} खेता ।
जौँ महाय कर सकर आई । तउ मारौ रन रामदोहाई ।

दो०—अतिसरोप मापेलपनु, लखि सुनि सपथ^{१२} प्रवान ।

सभय लोक सब लोकपति, चाहत भभरि भगान^{१३} ॥२३१॥

बालब्रह्मा की बड़ी रक्षा की थी । इसमें धोखे से वशिष्ठ जी गाय माते
गई थी । इस पर तीन भारी पाप होने से (१) वृहन्न पत्नी हरण (२)
पिता का अपमान (३) गाय का मरना, इमका नाम त्रिशकु पडा । त्रिशकु
ने सदेह स्वर्ग जाना चाहा । ऋषि के अनुचित बताने पर उनका अनाप
मिया । उन्होंने शाप दे चाण्डाल बना दिया । त्रिशामित्र ने अपन
तपस्या जल से इसको स्वर्ग भेना । लेकिन डकेल दिया गया । इस प
त्रिशामित्र ने वीच ही लटका रक्खा । इसकी लार से कर्मनाशा नदी बनी

१ ७डाइ २ देवसर ३ उचितानुचित का ध्यान न रहा ४ वीर रस रूप
घृत् ५ छेडछाड़ ६ तरकस ७ तीर ८ हाथियाके झुँड ९ नष्ट करता है १० एवं
छोटी चिड़िया ११ नष्ट कर डालूँ १२ सौगंध १३ भडभडा कर, डर कर भागना

ति भीति^१ जनु प्रजा दुस्वारी । त्रिविध ताप पीडित ग्रह भारी^२ ॥
 इ सुराज सुदेस सुस्वारी । होहि भरतगति तेहि अनुहारी ॥
 समास वनसपति भ्राजा^३ । सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा^४ ॥
 चिर त्रिरागु त्रिरेकु नरेमू । त्रिपिन^५ सुहायन पावन देसू ॥
 ट जम नियम सैल रजधाना । साति सुमति सुचि सुदरि रानी ॥
 कल अग सपन्न सुराऊ । रामचरन आभित^६ चित चाऊ^७ ॥
 दो०—जीति मोह-महिपालु दल^८ सहित त्रिवेक भुआलु ।

करत अकटक^९ राजु पुर सुख सपदा सुकालु ॥०३६॥
 त्रिप्रेस मुनिवाम घनेरे । जनु पुर नगर गाउँ गनुपेरे^{१०} ॥
 रेपुल^{११} त्रिचित्र त्रिहंग मृग नाना । प्रजासमाजु न जाइ वराना ॥
 गंगा^{१२} करिहरि^{१३} वाघ वराहा^{१४} देगि महिप^{१५} वृष^{१६} माजु सराहा ॥
 त्रिरु त्रिहाय चरहि एक सगा । जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरगा ॥
 करना मजहि, मत्तगज गाजहि । मनहुँ निसान विविध विधि वाजहि ॥
 वरु चकोर चातक सुक पिकु गन । क्रजत मजु मराल मुदितमन ॥
 अलिगन गात्रत नाचत मोरा । जनु सुराज मगल चहुँ श्रोरा ॥
 मलि विटप वृन सफल सफूला । मवु ममाजु मुद-मगल-मूला ॥
 दो० रामसैल मोभा निरगि, भरतुदय अतिप्रेसु ।

तापम तपफल पाइ जिमि, सुखी सिराने नेसु ॥०३७॥
 तत्र केरट उँचे चढि धाई । कहेउ भरत मन भुजा उठाई ॥
 नाथ देगि रहि विटपविसाला । पाकरि^{१७} जबु^{१८} रसाल^{१९} तमाला^{२०} ॥

१ इति का डर, इति ६ हे—भतिवृष्टि, अनावृष्टि, मूमक, टीढ़ी, शुक्र
 और समीपवर्ती राजाओं की चढ़ाई । २ भारी ग्रहदशा ३ शोभित है
 ४ जगत् ५ वीर ६ महारे मे ७ उरसाह है ८ मोहरूपी राजा की सेना
 ९ बलटक १० पुराने वस्त्रे हुए गाँव ११ बहुतही १२ गेडा १३ हाथी और सिंह
 १४ सुभर १५ भैंस १६ दैल १७ पापरी १८ जामुन १९ आम
 २० तमाल का पेड़, भावनूम ।

छ उत्प्रेक्षा में सावयव अभेद रूपक ।

जौं न होत जग जनम भरत को । सकल-धरम-धुर-धरनि-वरतको ॥
 कवि-कुल-अगम भरत गुन-गाथा । को जानइ तुम्ह विनु रघुनाथा ॥
 लपन राम निय सुनि सुरवानी । अति सुखु लहे उन जाइ बरानी ॥
 इहाँ भरतु सब सहित सहाए^१ । मदाकिनी पुनीत नहाए ॥
 सरितसमीप राखि सब लोगा । मोंगि मातु गुर-सचिव नियोगा^२ ॥
 चले भरत जहँ सियरपुराई । साथ निपादनाथ लघुभाई ॥
 समुक्ति मातुकरतव मकुचाहीं । करत कुतरक कोटि मन माहीं ॥
 राम लखन-सिय सुनि ममनाऊँ । उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ ॥

दो०—मातु मते मँहँ मानि मोहि, जो कछु कहहि सो थोर ।

अथ अवगुन छमि आदरहि समुक्ति आपनी ओरा ॥२३४॥

जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी । जौं सनमानहिं सेवक मानी ॥
 मोरे सरन राम की पनहीं^३ । राम सुखामि दोष सब जनहीं^४ ॥
 जग जमभाजन चातक मीना । नेम प्रेम निज^५ निपुन नवीना^६ ॥
 अस मन गुनत चले मग जाता । सकुच सनेह सिथिल सत्र गाता ॥
 फेरति मनहिं मातुकृत खोरी । चलत भगतिबल धीरजधोरी ॥
 जब समुक्त रघुनाथ सुभाऊ । तव पथ परत उतादल^७ पाऊ ॥
 भरतदसा तेहि अवसर कैसी । जलप्रवाह जल-अलि-गति^८ जैसी
 देखि भरत कर सोचु सनेह । भा निपाद तेहि समय विदेह ॥

दो०—लगे होन मगल सगुन सुनि गुनि कहत निपादु ।

मिटिहि सोच होइहि हरपु पुनि परिनाम विपादु ॥२३५॥

सेवक वचन सत्य सब जाने । आत्मम नकट जाइ नियराने^९ ॥
 भरत दीर्य बन सैल समाजू । मुदित छुप्रित^{१०} जनु पाइ सुनाऊ ॥

१ साथी २ आज्ञा ३ जूना (उपनाह) ४ सेवक का अर्थात्
 भरत कहते हैं 'मेरा' ५ अपना ६ नया ७ जल्दी जल्दी ८ पानी के बौं
 की दशा ९ दुःख १० पास आये ११ भूला ।

इति भीति^१ जनु प्रजा दुस्वारी । त्रिविप्र ताप पीडित ग्रह भारी^२ ॥
 बाद सुराज सुदेस सुस्वारी । होहि भरतगति तेहि अनुहारी ॥
 रामनास वनसपति भ्राजा^३ । सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा^४ ॥
 त्रिविप्र त्रियगु त्रिवेकु नरेसू । त्रिपिन सुहावन पावन देसू ॥
 भट^५ जम नियम सैल रजधानां । साति सुमति सुचिसुदरि रानी ॥
 सकल अग मपन्न सुराऊ । रामचरन आस्रित^६ चितचाऊ^७ ॥
 दो०—जीति मोह-महिपालु-दल^८ सहित त्रिवेक भुआलु ।

करत अकटक^९ राजु पुर सुख सपदा सुकालु ॥२३६॥
 ननप्रदेस मुनिवास घनेरे । जनु पुर नगर गाउँ गनुगरे^{१०} ॥
 वेपुल^{११} त्रिचित्र विहँग मृग नाना । प्रजासमाजु न जाइ बराना ॥
 गहा^{१२} करिहरि^{१३} वाप्र वराहा^{१४} देखिमहिप^{१५} वृप^{१६} साजुसराहा ॥
 यरु त्रिहाय चरहि एक सगा । जहँ तहँ मनहुँ मेन चतुरगा ॥
 रला भरहिं, मत्तगज गाजहिं । मनहुँ निसान त्रिविध विधि वाजहिं ॥
 क चकोर चातक सुकपिकगन । कृजत मजु मराल मुदितमन ॥
 लिंगन गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मगल चहुँ ओरा ॥
 लि पिटप वृन सफल सफुला । मवु समाजु मुद मगल-भूला ॥
 दो० रामसैल सोभा निरगि, भरतुहृदय अतिप्रेमु ।

तापम तपफल पाइ जिमि, सुखी सिराने नेमु ॥२३७॥
 केपट ऊँचे चढि धाई । कहेउ भरत सन भुजा उठाई ॥
 देगि रहि पिटपत्रिसाला । पाकरि^१ जनु^२ रमाल^३ तमाला^४ ॥

१ इति का डर, इति ६ ह-अतिवृष्टि, अनाश्रुष्टि, मूमक, टीदी, शुक्र
 २ समीपवर्ती राजाओं की चढ़ाई । ३ भारी ग्रहदशा ४ शोभित है
 ५ गण ६ वीर ६ सहारे से ७ उत्साह है / मोहरूपी राजा की सेना
 ८ अकटक १० पुराने बसे हुए गाँव ११ बहुतही १२ गेंडा १३ हाथी और सिंह
 १४ सुभर १५ भैंस १६ दैल १७ पापरी १८ जामुन १९ आम
 तमाल का पेड़, आधनुम ।

१० उपोक्षा में माचयव अभेद रूपक ।

तिन्ह तरुपरन्ह मध्य चट^१ मोहा । मजु त्रिमाल देखि मन मोहा ॥
 नील सघन पल्लव फल लाला । अत्रिरल^२ छाँह सुगन्ध सब काला ॥
 मानहुँ तिमिर-अरुन-मय रासी । विरची विवि सकेलि सुखमा^३ सी ॥
 ए तरु सरितसमीप गोमाड^४ । रघुवर परनकुटी जहँ छाई ॥
 तुलसी तरुवर विवि सुहाए । कहुँ कहुँ सिय कहुँ लपन लगाए ॥
 वटद्राया वैदिका घनाई । सिय निज-पानि-सरोज सुहाई ॥

दो०—जहाँ बैठि मुनि गन सहित, नित सिय रामसुजान ।

सुनहि कथा इतिहास सब, आगम निगम^५ पुरान ॥२३८॥

सखाचन मुनि विटप निहारी । उमगे भरत विलोचन वारी ॥
 करत प्रनामु चले दोउ भाई । कहत प्रीति सारद सकुचाई ॥
 हरपहि निरखि राम पद अका^६ । मानहुँ पारसु पायेउ रका ॥
 रजसिर धरि हियनयनन्हि लावहि । रघुवर-भिलन सरिस सुख पावहि ॥
 देखि भरतगति अकथ अतीवा^७ । प्रेममगन मृग रग जड जीया ॥
 सगृहि सनेहविवम मग भूला । कहि सुपथ मुर वरपहि फूला ॥
 निरखि सिद्ध साधक अनुरागे । सहज सनेहु मराहन लागे ॥
 होत न भूतल भाउ भरत कां । अचर सचर^८, चरअचरकरतको ॥

दो०—प्रेम अमिअ मदरु^९ विरहु, भरत पयोधि गँभीर^{१०} ।

मथि प्रगटेउ सुर-नाथु हित, कृपासिंधु रघुवीर ॥२३९॥

सखा समेत मनोहर जोटा । लखेउ न लपन सघन वनओटा ॥
 भरत दीख प्रभु आत्म पावन । सकल-सु मगल सदन सुहावन ॥
 करत प्रवेश मिटइ दुखदाया । जनु जोगी परमारथु पाया ॥
 देखे भरत लपन प्रभु आगे । पृच्छे बचन कहत अनुरागे ॥
 सीस जटा कटि मुनिपट बाँधे । तून कसे, कर सर, धनु

१ तरगद २ घना ३ सर्वदा रहने वाली

७ निशान ८ अत्यन्त अकथनीय ९ स्थिर

पवत १२ गहरा समुद्र ।

दीं पर मुनि साधु-समाजू । सीयसहित राजत रघुराजू ॥
 बलकल प्रसन^१ जटिल^२ तनुस्यामा । जनु मुनिनेप कीन्ह रतिकामा ॥
 कर-कमलनि धनुसायकु फेरत । जिय की जगनि हरत हैंनि हेरत ॥

गे०—लमत मजु मुनि-भण्डली मव्य सीय रघुचटु ।

ग्यानसभा जनु तनु धरे, भगति सधिदानदु ॥२१०॥

मानुज^३ सरसा समेत मगन मन । विसरे^४ हरप सोकु-सुर-दुर-गन ॥
 पाहि^५ नाथ कहि पाहि गोसाईं । भूतल परे लकुट^६ की नाई ॥
 वचन सप्रेम लपन पहिचाने । करत प्रनामु भरत जिय जाने ॥
 रघु मनेह सरम^७ णहि श्रोरा । इत साहिव-सेवा वरजोरा ॥
 मिलिन जाड नहि गुदरत^८ वनई । सुकपिलपनमन की गत भनई^९ ॥
 रहे राखि सेवा पर भारू । चढी चग^{१०} जनु रैच खेलारू ॥
 कहत सप्रेम नाड महि माथा । भरत प्रनाम करत रघुनाथा ॥
 उठे राम सुनि प्रेम अधीरा । कहूँ पट कहूँ निपग धनु तीरा ॥

गे०—वरजस लिए उठाड उर, लाए कृपानिधान ।

भरत राम की मिलनि लखि, विसरे सत्रहि अपान^{११} ॥२११॥

मिलनि प्रीति किमि जाड वरानी । कबिकुन अगम करम मन धानी ॥
 परम प्रेम पूरन दोड भाई । मन बुचिचित अहमिति^{१२} पिसराई ॥
 कहहु सुप्रेम प्रगट को करई । केहि छाया कपि-भति अनुसरई ।
 कपिहि अरथ आखर^{१३} बलु साँचा । अनुहरि ताल गतिहि नडु नाचा ॥
 अगमसनेह भरत-रघुवर को । जहँ न जाट मनु निधि हरि हर को ॥
 तो में कुमति कहीं केहि भाँती । बाजु सुगग कि गाँडरताँती^{१४} ॥
 मिलनि मिलोकि भरत रघुवरकी । सुरगन सभय धकयकी धरकी ॥

१ छाल के चख २ जटा रसाये दुण ३ स + अनुज, भाड व साथ
 ४ दूर होगये ५ रक्षा करो ६ लम्बी ७ स + रस, रस युक्त, प्रग ८ छोड़ते
 ९ कहता है १० पतग ११ अपनपे का १२ (अहन् + इति) अहकार
 १३ अक्षर १४ भेड (ऊन) की तौति ।

समुझाए सुरगुर जड जागे^१ । वरपि प्रसून प्रमसन लागे
दो०—मिलि सप्रेम रिपुसूदनहि केवट भेंटेउ राम ।

भूरि भाय भेंटे भरत, लछिमन करत प्रनाम ॥२४२॥

भेंटेउ लपन ललकि^२ लघु भाई । बहुरि निपादु लान्ह उर लाई
पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह वदे । अभिमत आसिप पाइ अनदे
सानुज भरत उमगि अनुरागा । वरिसिर सिय-पद-पदुम-परागा
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए । सिर करकमल परसि वैठाए
सीय असीस दीन्हि मन माहीं । मगन सनेह देहसुधि नाहीं
सब विधि सानुकूल लखि सीता । भे निसोच उर अपडर^३ बीता
कोउ कछु कहइन कोउ कछु पृछा । प्रेम भरा मन निज गति छूछा
तेहि अवसर कवदु धीरजु धरि । जोरि पानि विनवत प्रनामु करि

दो०—नाथ साथ मुनिनाथ के, मातु सकल पुरलोग ।

सेवक सेनप^४ सचिव^५ सब, आए विकल-वियोग ॥२४३॥

सीलसिधु सुनि गुरु आगवन् । सियसमीप राखे रिपुद्वन्
चले सवेग राम तेहि काला । धीर-धरम धुर दीनदयाला
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे । दडप्रनाम करन प्रभु लागे
मुनिवर धाइ लिए उर लाई । प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । कीन्ह दूर तें दडप्रनामू
रामसखा रिपि वरवस भेंटा । जनु महि लुठत^६ सनेह समेटा
रघुपति भगति सुमगल मूला । नभ सराहिं सुर वरपहिं फूला
एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं । वड वसिष्ठसम को जग माहीं ।

दो०—जेहि लखि लपनहुँ तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ ।

सौ सीता-पति-भजन को, प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥२४४॥

१ ज्ञान हुआ २ प्रेम के साथ जट्टी करके ३ अपने हृदय में डर पैदा
होना ४ सेना + ५=सेनापति ६ मंत्री ६ गिरे हुए ।

भारत लोग राम सबु जाना । रूनाकर मुजान भगवाना ॥
 नो जेहि भाय रहा अभिलाखी । तेहि तेहि कै तसितमि ररप राग्री ॥
 सानुज मिलि पल महुँ सत्र काहू । कीन्ह दूरि दुगु दारुन दाहू ॥
 एहि वड़ि रात राम कै नाहीं । जिमि पटकोटि एक गत्रि छार्ही ॥
 मिलि केपटहि उमगि अनुरागा । पुग्जन सकल सराहहिं भागा ॥
 देगी राम दुरित महतारी । जनु सुनेलि अबली^३ हिम^४ मारी ॥
 प्रथम राम भेंटी कैकेई । सरल सुभाय भगति मति भेई ॥
 पग परि कीन्ह प्रबोधु वहोगी । काल करम त्रि त्रि मिर वरि खोरी ॥

दो०—भेंटी रघुवर मातु मत्र करि प्रमोय परितोपु ।

अत्र ईमश्राधीन जगु, काहु न देइअ दोपु ॥२४५॥

गुर तिय पद वढे दुहुँ भाई । सहित त्रिप्रतिय जे सँग आई ॥
 गग गौरि-सम मत्र मनमानी^६ । देहिं असीस मुदित मृदुवानी ॥
 गहि पद लगे सुमित्राअका । जनु भेंटी सपति अति रका ॥
 पुनि जननी चरननि दोउ भ्राता । परे प्रेम-व्याकुल सत्र गाता ॥
 अति अनुराग अब उर लाए । नयन सनेह मलिल^७ अन्हवाए ॥
 तेहि अवसर कर हरप त्रिपादू । किमि कवि कहइ मूक जिमि स्वादू ॥
 मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ । गुन्मन कहेउ कि धारिय पाऊ ॥
 पुग्जन पाइ मुनीस नयोगू^८ । जल थल तकि तकि उतरेउ लोगू ॥

दो०—महिसुर^९ मत्री मातु गुरु, गने लोग लिये साथ ।

पावन श्रास्त्रम गत्रनु किए, भरत लपन रघुनाथ ॥२४६॥

सीय श्राड मुनि वर-पग लागी । उचित असीस लही मनमाँगी ॥
 गुरपतिनिहिं मुनि तियन्ह समेता । मिली प्रेम कहि जाइ न जेता ॥
 यदि यदि पग सिय सनही के । आमिरवचन^{१०} लहे प्रियजी के ॥

^१ दृष्टा २ करोडा घडों म ३ अच्छी बेलों की पौति ४ वर्ष ५ दोष
^६ वाक्त्र क्रिया ७ स्नेहरूपी पानी ८ मुनि की आज्ञा ९ द्राह्मण १० जादीवाद ।

सासु सकृत् जव सीय निहारी । मूँदे नयन सहमि सुकुमारी ।
परी अधिक-व्रम मनहुँ मराली^२ । काह कीन्ह करतार कुचाली ।
तिन्ह सिय निरखि निपट^३ दुखपावा । सो सब सहिअ जो दैउ सहावा ।
जनकसुता तव उर धरि धीरा । नील-नलिन-लोयन भरि नीरा ।
मिली सकल सासुन्ह सिय जाई । तेहि अवसर कर्ना^४ महि छाई ।

दो०—लागि लागि पग सवनि सिय, भेटति अति अनुराग ।

हृदय असीसहिं प्रेमवस, रहिअहु भरी सोहाग ॥२४७॥

विकल सनेह सीय सब रानी । बैठन सबहि कहेउ गुर ग्यानी ।
कहिं जगगति मायिक^५ मुनिनाथा । कहे कछुक परमारथ^६ गाथा ।
नृप कर सुर-पुर-गवतु सुनाया । सुनि रघुनाथ दुसह दुखु पाया ।
मरनहेतु निजनेहु विचारी । भे अति विकल धीर-धुर-धारी ।
कुलिसकठोर^७ सुनत कदुवानी । विलपत लपन सीय सब रानी ।
सोक विकल अति सकल समाजू । मानहुँ राजु अकाजेउ^८ आजू ।
मुनिवर वहुरि राम समुभाण । सहित समाज सुसरित नहाण ।
व्रतु निरबु^९ तेहि दिन प्रभु कीन्हा । मुनिहु कहे जलु काहु न लीन्हा ॥

दो०—भोर भए रघुनन्दनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह ।

नद्रा^{१०} भगति समेत प्रभु, सो सब सादर कीन्ह ॥२४८॥

करि पितु क्रिया वेद जसि वरनी । भे पुनीत पातक-तम-तरनी^{११} ।
जासु नाम पावक अधतूला^{१२} । मुमिरत सकृत् सु मगल-भूला ॥
सुद्ध सो भयेउ माधु समत अस । तीरथ आवाहन^{१३} सुरसरिजस ।
सुद्ध भएँ दुइ वासर दीते । बोले गुरसन राम पिरिते ॥

१ बहालया के वश म २ हासना ३ बिकुल ४ नाल कमल क
समान नेत्र ५ (नीर) पाती ६ शोक ७ माया सबधी ८ मोक्ष की कथा
९ वज्र से भी कठोर १० शय्यु ११ निर्जल वा १२ (धद्रा) आदरणीय
प्रेम १३ पाप रूपी अन्धकार के लिये जो सूर्यरूप है १४ पाप रद्द के
तुल्य है १५ बुलाना ।

नाथ लोग सत्र निपट दुग्वारी । कद-मूल-फल-अबु-अहारी ॥
सानुज भरतु सचित्र सब माता । देखि मोहि पल जिमि जुग जाता ॥
सत्र समेत पुर धारिअ पाऊ । आपु इहाँ अमरापति राज ॥
बहुत कहेउँ सत्र कियेउँ ढिठाई । उचित होइ तस करिअ गोसाई ॥

दो०—धर्मसेतु करुनायतन, कस न कहहु अस गम ।

लोग दुखित दिन दुइ दरस, देखि लहहि विन्ध्याम ॥०४९॥

राम वचन सुनि मभय समाजू । जनु जलनिप्रि महुँ विकल जहाजू ॥
सुनि गुरुगिरा सु-भगल-मूला । भयेउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥
पायनि पय तिहुँ काल नहाहीं । जो त्रिलोकि अप्रथोष^१ नसाहीं ॥
भगलमूरति लोचन भरि भरि । निरखहि हरपिदडप्रत करि करि ॥
गम-सैल-वन देखन जाही । जहँ सुरसकल सकल दुख नाही ॥
भरना भरहि सुधासम धारी^२ । त्रि विधि ताप-हर त्रिभिध प्रयारी ॥
निटपबेलि वृन्^३ अगनित जाती । फल प्रसून^४ पल्लव बहु भौंती ॥
सुन्दर सिला सुगन्ध तरु छाहीं । जाइ वरनि वन छवि केहि पाहीं ॥

दो०—मरनि सरोरुह जल त्रिहंग कूजत गुँजत भृग ।

वैर विगत विहरत त्रिपिन भृग त्रिहंग बहुरंग ॥०५०॥

लोक किरात भिल्ल वनवासी । मधु सुचि सुदर स्वादु सुगामी ॥
भरि भरि परनपुटी^५ रचि खरी । कद मूल फल अरु जरी^६ ॥
सत्रहि देहि करि त्रिनय प्रनामा । कहि कहि स्वादुभेदु गुन नामा ॥
देहि लोग बहु मोल न लेहीं । फेरत राम दोहाई देहीं ॥
कहहि सनेह मगन मृदुवानी । मानत साधु प्रेम पहिचानी ॥
तुम्ह सुकृती हम नीच निपादा । पात्रा दरसनु रामप्रसादा ॥
हमहि अगम अति दरसु तुम्हारा । जस मरुधरनि^६ देव धुनि धारा ॥
रापकपाल निपाद नेवाजा । परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा ॥

१ पापा का समूह २ पानी ३ घास ४ फूल ५ पक्षी ६ दोना

७ इक्षु ८ मरुन्धल, मारवाड़ ।

सासु सकृत्त जब सीय निहारी । मूँटे नयन सहमि सुकुमारी ॥
 परी प्रधिक्रम मनहुँ मराली^१ । काह कीन्ह करतार कुचाली ॥
 तिन्ह सिय निरखि निपट^२ टुरपात्रा । सो सब सहिअ जो दैउ सहावा ॥
 जनकसुता तव उर धरि वीरा । नील नलिन-लोयन भरि नीरा ॥
 मिली सकल सामुन्ह मिय जाई । तेहि अवसर करुना^३ महि छाई ॥

दो०—लागि लागि पग सवनि सिय, भेटति अति अनुराग ।

हृदय अमीसहिं प्रेमप्रस, रहिअहु भरी सोहाग ॥२४७॥

विकल सनेह सीय सब रानी । बैठन सत्रहि कहेउ गुर ग्यानी ॥
 कहिं जगगति मायिक^४ मुनिनाथा । कहे कञ्चुक परमारथ^५ गाथा ॥
 नृप कर सुर-पुर-गवनु सुनाया । सुनि रघुनाथ दुसह दुखु पाया ॥
 मरनहेतु निजनेहु विचारी । भे अति विकल धीर-धुर-धारी ॥
 कुलिसकठोर^६ सुनत कटुवाणी । विलपत लपन सीय सब रानी ।
 सोक विकल अति मकल समाजू । मानहुँ राजु अकाजेउ^७ आजू ॥
 मुनिवर बहुगि राम समुभाण । सहित समाज सुमरित नहाण ।
 व्रतु निरबु^८ तेहि दिन प्रभुकीन्हा । मुनिहु कहे जलु काटु न लीन्हा ॥

दो०—भोर भए रघुनन्दनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह ।

न्रद्धा^९ भगति समेत प्रभु, सो सब सादर कीन्ह ॥२४८॥

करि पितु त्रिया वेद जसि वरनी । भे पुनीत पातक-तम तरनी^{१३} ।
 जासु नाम पावक अत्रतूला^{१४} । सुमिरत सकृज-सु भगल मूला ॥
 सुद्व सो भयेउ माधु समत अस । तीरथ आवाहन^{१५} सुरसरि जस ॥
 सुद्व भएँ दुड वासर दीते । बोले गुरसन राम पिरिते ॥

१ बहालया के वश २ हासना ३ विलकुल ४ नाल कमल के समान नेत्र ५ (नीर) पानी ६ शोक ७ माया सदधी ८ मोक्ष की कथा ९ वज्र से भी कठोर १० मृत्यु ११ निर्जल घन १२ (श्रद्धा) आत्तरणीय प्रेम १३ पाप रूपी अन्धकार के लिये जो सूर्यरूप हैं १४ पाप रई के तुल्य है १५ बुलाना ।

नाथ लोग सन निपट दुग्वारी । कद-मूल-फल-अबु-अहारी ॥
सानुज भरतु सचिन् सव माता । देखि मोहि पल जिमि जुग जाता ॥
सन समेत पुर धारिअ पाऊ । आपु इहाँ अमरावति राऊ ॥
बहुत कहेउँ सन कियेउँ ढिठाई । उचित होइ तम करिअ गोसाई ॥

दो०—धर्मसेतु करुनायतन, कस न कहहु अम राम ।

लोग दुग्धित दिन दुइ दरस, देखि लहहिं त्रिनाम ॥२४९॥

राम बचन मुनि मभय समाजू । जनु जलनित्रि महुँ निकल जहाजू ॥
मुनि गुरुगिरा सु-मगल-मूला । भयेउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥
पावनि पय तिहुँ काल नहाही । जो त्रिलोकि अघओप नसाही ॥
मगलमूरति लोचन भरि भरि । निगगहिं हगपि द्रटत करि करि ॥
राम-सैल-वन देखन जाही । जहँ मुग्न सकल सकल दुखनाही ॥
करना करहिं सुधासम वारी^१ । त्रि त्रिधि ताप-ठर त्रिविध बयारी ॥
बिटप घेलि तृण^२ अगनित जाती । फल प्रसून^३ पल्लव बहु भाँती ॥
सुन्दर सिला सुरद तरु छाहीं । जाइ वरनि वन छनि केहि पाहीं ॥

दो०—सरनि सरोरुह जल त्रिहंग कूजत गुँजत भृग ।

वैर-त्रिगत त्रिहरत त्रिपिन मृग त्रिहंग बहुरग ॥२५०॥

लौक किरात भिल्ल वनवासी । मधु सुचि सुदर स्वादु सुगामी ॥
भरि भरि परनपुटी^४ रचि रूरी । कद मूल फल अकुर जूरी^५ ॥
सत्रहिं देहि करि त्रिनय प्रनामा । कहि कहि स्वादुभेदु गुन नामा ॥
देहि लोग बहु मोल न लेहीं । फेरत राम दोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेह-भगन मृदुवानी । मानत साधु प्रेम पहिचानी ॥
तुम्ह सुकृती हम नीच निपादा । पाग दरसनु रामप्रसादा ॥
हमहिं अगम अति दरसु तुम्हारा । जस मरुधरनि^६ देव धुनि धारा ॥
रापठपाल निपाद नेजाजा । परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा ॥

१ पापा का समूह २ पानी ३ घास ४ फूल ५ पक्षी ६ दोना

७ इकट्ठा ८ मरुस्थल, मारवाड ।

दो०—एह जिअ जानि सँकोचु तजि, करिअ छोहु^१ लगि नेहु ।

हमहिं कृतारथ करन लगि, फल वृन अकुर^२ लेहु ॥१०५१॥

तुम्ह प्रिय पाहुन^३ वन पग धारे । सेवाजोगु न भाग हमारे ॥
 देव काह हम तुम्हहिं गोसाईं । ईधनु पात किरात मित्ताई ॥
 एह हमारि अति बडि सेवकाई । लेहि न वासन^४ वमन चोराई ॥
 हम जड जीव जीव गन घाती^५ । कुटिल कुचाली कुमति कुजाती ॥
 पाप करत निसि वामर जाही । नहि पट कटि^६ नहि पेट अघाही ॥
 मपनेहुँ धरम गुट्टि कस काऊ । एह रघु-नदन दरस प्रभाऊ ॥
 जब तें प्रभु-पद-पदुम निहारे । मिते दुसह दुस्र दोष हमारे ॥
 वचन सुनत पुरजन अनुरागे । तिन्ह के भाग सराहन लागे ॥

छंद—लागे सराहन भाग सब अनुराग वचन सुनावहीं ।

बोलनि मिलनि सिय-राम-चरन मनेहु लगि सुखु पावहीं ॥

नरनारि निदरहिं नेहु निज सुनि कोल भिल्लनि की गिरा ।

तुलसी कृपा रघु-वस-मनि की लोह लै नौका^७ तिरा ॥

सो०—विहरहिं वन चहुँ श्रोर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ।

जल ज्यो दादुर मोर, भए पीन^८ पावस^९ प्रथम ॥१०५२॥

पुरजन नारि मगन अति प्रीती । वासर जाहि पलक सम बीती ॥
 मीय सासु प्रति वेप^{१०} वनाई । सादर करै सरिम सेवकाई ॥
 लखा न भरसु राम विनु काहू । माया सत्र सियमाया माहू^{११} ॥
 सीय सासु सेवा बस कीन्ही । तिन्ह लहि सुग्न सिग्न आसिप दीन्ही ॥
 लखि सियमहित सरल दोउ भाई । कुटिल रानि पद्धितानि अघाई ॥
 अत्रनि जमहि जाँचति कैकेई । महिन वीचु^{१२} विधि मीचु^{१३} न देई ॥

१ कृपा २ अ कुआ ३ अतिथि ४ पाग ५ जीवों का नाश करने वाले
 ६ कमर में फेंक ७ नाव ८ मडक ९ हट्ट पुष्ट १० बरसात ११ बीच
 १२ फटकर स्थान देना १३ मृत्यु के कई रूप ।

लोकहु नेत्र विदित कपि कहहीं । राम निमुख धनु नरक न लहहीं ।
एह ससउ सत्र के मन माहीं । राम गवँन^१ विधि अघ कि नाहीं ॥

दो०—निसिन नंद नहिं भृत्त दिन भरतु निकल सुचि सोच ।

नीच कीच विच्र मगन^२ जस, मीनहिं सखिल सँकोच ॥२५३॥

कीन्ह मातुमिस काल कुचाली । ईति भीति जस पाकत साली ॥

केहि विधि होइ राम अभिपेकू । मोहि अरु कलत^४ उपाउन एकू ॥

अवसि फिरहिं गुरु आयसु मानी । मुनि पुनि कहव रामरुचि जानी ॥

मातु कहेहुँ बहुरहिं रघुराऊ । रामजननि हठ करवि कि काऊ ॥

मोहि अनुचर कर केतिके वाता । तेहि महुँ कुम्भउ वाम विधाता ॥

जो हठ करउ त निपट कुरुमू । हरगिरि^५ तें गुरु सेवक धरमू ॥

एउ जुगुति न मन ठहरानी । सोचत भरतहिं रैनि विहानी ॥

प्रात नहाइ प्रभुहि मिर नाई । बैठत पठण रिपय बोलाई ॥

दो०—गुर पद कमल प्रनामु करि, बैठे आयसु पाइ ।

निप्र महाजन सचिव सत्र, जुरे सभासद आइ ॥२५४॥

बोले मुनिवर समय समाना । सुनहु सभासद भरत सुजाना ॥

धर्मधुरीन भानुकुल भान । राजा रामु स्ववस भगवान् ॥

सत्यसथ पालक स्रुति सेत । रामजनमु जग मगलहेत ॥

गुर पितु मातु उचन अनुसारी । खल दलु दलान देव हित कारी ॥

नीनि प्रीति परमाग्रथ स्वारथु । कोउन रामसमजान जथारथु ॥

गिरिदरि हरुसमि रनि द्विसिपाला^१ । माया जीव करम कुलि-काला^२ ॥

अहिप^३ महिप^४ जहँल गि प्रभुताई । जोग सिद्धि निगमागम गाई ॥

करि निचार जिय देखहु नीके । रामरजाइ सीस सबही के ॥

१ जाना २ टूठी हुई ३ पकी हुई धान की खेती ४ दिखाई देती है ।

५ कैलास पर्वत ६ रात्रि घीत गइ ७ व्याधीन ८ वास्तव ९ निगपात

१० सम्पूर्ण समय ११ शेषनाग १२ राजा ।

दो०—राखें गम रजाइ रर, हम सब कर हित होइ ।

समुक्ति सयाने करहु अथ, सब मिलि समत सोइ ॥२५५॥

सब कहँ सुखद राम अभिपेकू । मगल मोद-मूल मगु एकू ॥
 केहि विवि अथध चलहि रघुराउ । वहहु समुक्ति सोइ करि अउपाउ ॥
 सब मादर मुनि मुनि बरवानी । नय^१ परमारथ स्वारथ सानी ॥
 उतरु न आव लोग भए भोरे । तव सिरु नाइ भरत कर जोरे ॥
 भानुवस भए भूप घनेरे । अधिक एक तें एक बडेरे ॥
 जनम हेतु सब कहँ पितु माता । करम सुभासुभ देइ विधाता ॥
 ! दलि^२ दुख सजइ^३ सकल कल्याना । अस असीस राउरि जग जाना ॥
 सोइ गोसाइँ विधिगति जेहि छेकी^४ । सकइ को टारि टेक जो टेकी ॥

दो०—वृभिअ मोहि उपाउ अथ, सो सब मोर अभाग ।

सुनि मनेह-मय-वचन गुर, उर उमगा अनुराग ॥२५६॥

तात घात फुरि राम कृपाहीं । रामत्रिमुख सिधि सपनेहु नाहीं ॥
 सकुचउँ तात कहत एक वाता । अरधतजहिं बुध सरवस जाता ॥
 तुम्ह कानन गवँनहु दोउ भाई । फेरिअहि लपन सीय रघुराई ॥
 सुनि सुवचन हरपे दोउ भ्राता । भे प्रमोद-परि-पूरन गाता ॥
 मन प्रसन्न तन तेजु विराजा । जनु जिय^५ राउ^६ राम भए राजा ॥
 बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी । मम दुखसुख सब रोत्रहि रानी ॥
 कहहिं भरतु मुनि कहा सो वीन्हे । फलु जग जीयन्ह अभिमत^६ वीन्हे ॥
 कानन करउँ जनम भरि वासू । एहि तें अधिक न मोर सुपासू ॥

दो०—अंतरजामी रामुसिय, तुम्ह सरवस्य सुजान ।

जौं फुर कहहु त नाथनिज, वीजिअ वचनु प्रमान ॥२५७॥

भरतपचन मुनि देखि सनेहू । सभासहित मुनि भयेउ विदेहू ॥
 भरत-महा-महिमा जलरासी । मुनिमति ठाढि तीरअपलासी ॥
 गा चह पार जतनु द्विय हेरा^२ । पावति नाव न गोहित बेरा^३ ॥
 अउर करहि को भरत बडाई । सर नीपी^४ की सिबु समाई ॥
 भरत मुनिहिं मनभीतर भाए । सहित समान राम पैहि आए ॥
 प्रमु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु । बैठे मत्र मुनि मुनि अनुसासनु ॥
 गोलै मुनिवरु वचन विचारी । देस-काल-अवसर-अनुहारी ॥
 सुनहु राम सरवग्य मुजाना । धरम-नीति-गुन ग्यान निधाना ॥

दो०—मत्र के उर अतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ ।

पुरजन-जननी-भरत हित, होइ सो कहिअ उपाउ । १५८ ॥

आरत कहहिं विचारि न काऊ । सूफ जुआरिहि आपुन दाऊ^१ ॥
 मुनि मुनि वचन कहत रघुराऊ । नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥
 सत्र कर हित रुख राउरि राखे । आयसु किए मुदित पुर भाखे ॥
 प्रथम जो आयसु सो कहूँ होई । माथे मानि करउँ सिंग सोई ॥
 मुनि जेहि कहूँ जस कहब गोसाईं । सो सत्र भाति घटिहि सेपकाई ॥
 कह मुनि राम मत्य तुम्ह भाग्या । भरत-सनेह-विचार न राग्या ॥
 तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी । भरत भगति तस भइ मति मोरी ॥
 मोरे जान भरत रुचि राखी । जोकीजिअ सो सुभ सिपुमाखी^२ ॥

दो०—भरत विनय सादर मुनिअ, करिअ विचार प्रहोरि ।

करव साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि २५९ ॥

गुर अनुरागु भरत पर देखी । राम हृदय आनन्दु विसेयी ॥
 भरतहि धरम धुरन्धर जानी । निज सत्रक तन-मानस-धानी ॥
 गोलै गुरु-आयसु अनुकूला । वचन मजु मृदु मगलमूला ॥

१ स्त्री २ विचार किया ३ जहाज और घेडा ४ तालाब का सीप

५ घर ६ दाव ७ साक्षी (गवाही) ।

नाथ-सपथ पितु-चरन-दोहाई । भयेउ न भुवन भरत सम भाई ॥
 जे गुरु-पद-अबुज-अनुरागी । ते लोकहुँ वेदहुँ वडभागी ॥
 राउर जापर अस अनुरागू । को कहि सकइ भरत कर भागू ॥
 लखि लघु बन्धु बुद्धि सकुचाई । करत वदन पर भरत वडाई ॥
 भरतु कहहि सो किँँ भलाई । अस कहि राम रहे अरगाई ॥

दो०—तव मुनि बोले भरत मन, मव सँकोचु तजि नात ।

कृपासिन्धु प्रियवन्धु मन, कहहु हृदय कइ वात ॥२६०॥

मुनि मुनि वचन राम रुख पाई । गुरु साहिव अनुकूल अघाई ॥
 लखि अपने सिर सबु छरु भारू ३ । कहि न सकहि कछु करहि विचारू ॥
 पुलकि सगीर सभा भा ठाढे । नीरज नयन नेह जल वाढे ॥
 कहव मोर मुनि नाथ निग्राहा ४ । एहि ते अधिक कहउँ मैं काहा ॥
 मै जानउँ निज नाथ सुभाऊ । अपराधिहु पर कोह ५ न काऊ ॥
 सो पर कृपा सनेहु त्रिसेखी । खेलत खुनम ६ न करहूँ देखी ॥
 मिसुपन तें परिहरेउ न सगू । कवहुँ न कीन्ह मोर मन भगू ॥
 मैं प्रभु कृपा गीति जिय जोही । हारेहु खेल जिताबहि मोही ॥

दो०—महूँ मनेह-सँकोच-वस, सनमुग्य कहे न वयन ।

दरसन तृपित न आजु लागि प्रेम पियासे नयन ॥२६१॥

विधिन सकेउ सहि मोर दुलारा ७ । नीच वीचु जननी मिस ८ पाया ९ ॥
 एहुउ कहत मोहि आजु न सोभा । अपनी ममुफिसाधु सुचि कोभा ॥
 मातु मन्द मैं साधु सुचाली । उर अस आनत कोटि कुचाली ॥
 फरइकि कोद्व १० वालि मुसाली । मुकताप्रसव ११ कि सबु कताली १२ ॥
 सपनेहु दोस कलेसु न काहू । मोर अभाग-उदधि-अवगाहू १३ ॥

१ चुप हो २ अत्यंत ३ बोझ ४ गिराह क्रिया ५ क्रोध ६ प्रतिहिंसा
 ७ लाल प्यार ८ बहाना ९ हुआ १० कोदों ११ मोनी पैदा होते हैं १२
 नालाय की सीप १३ बुरे भाग्य का गहरा समुद्र ।

बिनु समुक्ते जिन अघ परिपाक^१ । जारिउँ जाय^२ जननि कहि काक^३ ॥
 हृदय हेरि हारेउ सव ओरा । एकहि भौंति भलेहि भल मोरा ॥
 गुर गोसाई साहिव सियरामू । लागत मोहि नीक परिनामू ॥
 दो०—साधु सभा गुर-प्रभु निकट कहउँ सुथल^४ मतिभाउ ।

प्रेम प्रपच कि भूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ ॥२६२॥
 भूपतिमरन प्रेम पनु राग्यी । जननी कुमति जगत सब साग्यी ॥
 देरि न जाहिं विकल महतारी । जरहि दुसह जर पुर नर-नारी ॥
 मही सरल अनरथ कर मूला । सोमुनि समुक्ति सहिउँ सत्र सूला ॥

मुनि जनगणनु कीन्ह रघुनाथा । करि मुनिपे लपन-सिय-माथा ॥
 जिन पानहिन्ह पयादेहि पाएँ । सकरु साथि रहेउँ गहि घाएँ ॥
 गुरि निहारि निपाद सनेहू । कुलिस कठिन उर भयेउ नवेहू ॥
 प्र सनु आँरिन्ह देगेउँ आई । जियत जीव जइ सत्र सहार्डे ॥

जेन्हहिं निरदि मग साँपिनि वीछी । तजहि विपमत्रिपताममतीछी ॥
 दो०—तेइ रघुनदनु लपनु सिय अनहित^५ लागे जाहि ।
 तामु तनय तजि दुसह दुस्र दैउ सहायइ काहि ॥२६३॥

नि अति निकल भरत-वर-वानी । आरति^६ प्रीति विनय-नय सानी ॥
 किमगन सत्र सभा खभास^७ । मनहुँ कमल जन परेउ तुपास^८ ॥
 हि अनेक विधि कथा पुरानी । भरतप्रबोधु कीन्ह मुनि चानी ॥
 ले उचित वचन रघुनदू । दिन कर कुल कैव नन-चदू^९ ॥

न जाय जिअ करहु गलानी । ईस अधीन जीवगति^{१०} जानी ॥
 नि काल त्रिभुवन मत मोरें । पुन्यसलोक^{११} तात तर^{१२} तोरें ॥
 आनत तुम्ह पर कुटिलाई । जाइ लोक-परलोक^{१३} नसाई ॥

१ अपने पापों का फल २ व्यथ ३ बुराभला (व्यग) कह कर
 विग्रह पर ५ दुःख ६ छेद ७ जड़ जीव के कारण सभी सहाय पडा
 तज, भयकर ८ घुरे १० दुःख पूर्ण ११ व्याकुल १२ पाला १३ मूषकुल
 १ कुमादिनी के यग को चन्द्रमा के समान सुखदाई १४ वन-गति
 पुण्यात्मा (पुण्यलोक) १६ नीचे ।

दोषु देहिं जननिहि जड तेई । जिन्ह गुर-साधु सभानहिं सेई ॥

दो०—मिटिहहिं पाप प्रपंच^१ सत्र अखिल^२ अमगल भार^३ ।

लोक-सुजसु परलोक सुखु सुभिरत नामु तुम्हार ॥२६४॥

कहउँ सुभाउ सत्य सिव सारणी । भरत भूमि रह राउरि राणी ॥

तात कुतरक करहु जनि जाएँ । वैर प्रेम नहिं दुरइ दुराएँ ॥

मुनिगन निरुट विहंगमृग जाहीं । वाधक बधिक^४ विलोकि पराहीं ॥

हित अनहित पसु पछिउ जाना । मानुष-तनु गुन-ग्यान-निगना ॥

तात तुम्हहिं मै जानउँ नीके । करउँ काह असमजस जी के ॥

रासेउ राय सत्य मोहि त्यागी । तनु परिहरेउ प्रेमपन लागी ॥

तासु वचन भेटत मन सोचू । तेहि ते अधिक तुम्हार सँकोचू ॥

ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा । अवसिजो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा ॥

दो०—मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करउँ सोइ आजु ।

सत्य-सध-रघुवर-वचन सुनि भा सुखी समाजु । २६५॥

सुर गन-सहित सभय सुरराजू । मोचहिं चाहत होन अकाजू^५ ॥

वनत उपाय करत कजु नाहीं । राममरन मव गे मन माहीं ॥

वहरि विचारि परसपर कहहीं । रघुपतिभगत-भगति बस अहहीं ॥

सुधि करि अवरीष दुरवासा । भे मुर, सुरपति निपट निरामा^६ ॥

सहे सुरन्ह वह काल विपादा । नरहरि किए भ्रगत प्रहलादा^७ ॥

लगिलगि कान कहहिं धुनि माथा । अब सुर-काज भरत के हाथा ॥

१ माया २ सम्पूर्ण ३ विघ्न का जोड़ ४ बहेलिया इत्यादि ५ म + नय = डरा हुआ ६ काम निगड़ना ७ “भरत भक्त हैं उन्हीं के अनुकूल राम चलेंगे” यह सोचकर ।

† त्रिपुण्यकश्यप के पुत्र प्रहलाद जन्म से हरिभक्त थे । वह समझते थे कि ईश्वर सर्वत्र और रक्षक है । पिता के दारुण दुःख देने पर भी भक्ति न छोड़ी अन्त में पिता तलवार ले मारने दौड़ा । मन्म में से नरसिंह रूप हरि निकले और दैत्यराज को मार डाला ।

पान उपाउ न देखिअ देवा । मानत रामु सुमेवक सेवा ॥
 अक्षयप्रमसुिमरहु सत्र भरतहि निनगुन सीलरामप्रस करतहि ।

दो०—सुनि सुर मत सुरगुरु^१ कहेउ भल तुम्हार बडभागु ।

सकल-सुमगल मूल जग, भरत चरन अनुरागु ॥२६६॥

सीतापति - सेवक - सेवकाई । कामनेनु सत सरिम सुहाई ॥

भरतभगति तुम्हरे मन आई । तजहु सोचु विधि रात प्रनाई ॥

देवु देवपति भरतप्रभाऊ । महज सुभाय प्रियम् रघुराऊ ॥

मन विर^२ करहु देव डरु नाई । भरतहि जानि रामरिछाई ॥

सुनि सुरगुरु सुरममत-सोचु । अतरजामी प्रभुहि मैकोचु ॥

निन मिर भार भरतु जिअजाना । करत कोटि विधि उर अनुमाना ॥

करि विचारु मन दीन्हा ठीका^३ । रामरजायसु आपन नौका ॥

निज पन^४ तजि राखेउ पनु मोरा । द्योहु सनेह कीन्ह नहि शोग ॥

दो०—कीन्ह अनुग्रह^५ अमित अति सत्र विधि सीतानाथ ।

करि प्रनासु बोले भरतु जोरि जलज-जुग हाथ ॥२६७॥

कहउ कहाउँ का अत्र स्वामी । कृपा अचु निधि अनरजामी ॥

गुरु प्रसन माहिअ अनुकृला । मिटीमलिनमन कलपित मूला ॥

अपहर डरेउँ न सोच समले^६ । रविहि न दोषु देवदिसि-भले^७ ॥

मोर अभागु मातृकुटिलाई । विधि गति विषम जाल कठिनाई ॥

गौँरोषि सत्र मिलि मोहि घाला^८ । प्रनतपाल पन आपन पाला^९ ॥

यह नड रीति न राउरि होई । लोकहु वेद प्रिन्ति नहि गोई^{१०} ॥

जगु अतभल, भल णकु गोसाई । कहिअ होइ भल कासु भलाई ॥

१ देवताओं के गुरु (बृहस्पति) २ स्थिर) धीरज धरा ३ विचार ४ निश्चय
 किया ५ भला है ६ प्रण, पैज ७ कृपा ८ दानों व मन्त्ररूपों हाथ ९ सीता का कारण
 नहीं है १० दिशा भूल होने पर ११ नष्ट किया १२ शरणागत पालक
 १३ छिपी हुई ।

दोषु देहिं जननिहि जड तेई । जिन्ह गुर-साधु सभानहि सेई ॥

दो०—मिटिहहिं पाप प्रपच^१ सत्र अखिल^२ अमगल भार^३ ।

लोक-सुजसु परलोक सुखु सुमिरत नामु तुम्हार ॥२६४॥

कहउँ सुभाउ सत्य सिव सारी । भरत भूमि रह राउरि राखी ॥

तात कुतरक करहु जनि जाएँ । वैर प्रेम नहि दुरइ दुराएँ ॥

मुनिगन निरुट विहँग मृग जाहीं । बाधक बधिक^४ विलोकि पराहीं ॥

हित अनहित पसु पछिउ जाना । मानुष-तनु गुन-ग्यान-निधाना ॥

तात तुम्हहिं मैं जानउँ नीके । करउँ काह असमजस जी के ॥

राखेउ राय सत्य मोहि त्यागी । तनु परिहरेउ प्रेमपन लागी ॥

तामु वचन भेटत मन सोचू । तेहि तें अधिक तुम्हार सँकोचू ॥

ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा । अवसिजो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा ॥

दो०—मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करउँ सोइ आजु ।

सत्य-सव रघुवर-वचन सुनि भा सुखी समाजु । २६५॥

सुर गन-नहित सभय सुरराजू । सोचहिं चाहत होन अकाजू ॥

बनत उपाय करत कछु नाहीं । राममरन सब गे मन माहीं ॥

बहुरि विचारि परमपर कहती । रघुपति भगत-भगति-वस अहदी ॥

सुधि करि अवरिष दुरवासा । भे सुर, सुरपति निपट निरासा^५ ॥

सहे सुरन्ह वह काल विपादा । नरहरि किए प्रगट प्रह्लादा ॥

लगिलगि कान कहहिं धुनि माया । अब सुर-काज भरत के हाथा ॥

१ माया २ सम्पूर्ण ३ विघ्न का शत्रु ४ बहेलिया डयादि ५ स+भय = डरा हुआ ६ काम त्रिगडना ७ "भरत भक्त है उन्हीं के अनुकूल राम चलेगें" यह सोचकर ।

† हिरण्यकश्यप के पुत्र प्रह्लाद जन्म से हरिभक्त थे । वह समझते थे कि ईश्वर सर्वत्र और रक्षक है । पिता के दारुण दुःख देने पर भी भक्ति न छोड़ी अन्त में पिता तलवार से मारने दौड़ा । खम्भ में से नरसिंह रूप हरि निकले और दैत्यराज को मार डाला ।

भरतजन सुचि सुनि सुर हरपे । साधु सराहि सुमन सुर वरपे ॥
 असमजसवम अवधनिवासी । प्रमुदित^१ मन तापस-जनत्रासी ॥
 चुपहि रहे रघुनाथ सँकोची । प्रभुगति देखि सभा सब सोची ॥
 जनरू-दूत तेहि अवसर आए । मुनि बसिष्ठ सुनि बेगि बोलाए ॥
 करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । बेपु देखि भए निपट दुखारे^२ ॥
 दूतन्ह मुनिवर वृष्णी वाता । कहहु त्रिभेद भूप कुसलाता ॥
 सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा । बोलें चर वर^३ जंरि हाथा ॥
 वृष्ण राउर सादर साई । कुसलहेतु सो भयेउ गोसाई ॥

दो०—नाहिं त कोसलनाथ के, साथ कुसल गढ़ नाथ ।

मिथिला^४ अवध विसेपते जगु सत्र भयेउ अनाथ ॥२७१॥

कोसलपति गति सुनि जनकौरा^५ । भे सत्र लोक सोक्यम वौरा ॥
 जेहि देखे तेहि समय विदेहू । नामु सत्य अम लाग न केहू ॥
 रानि कुचालि सुनत नरपालहि । सूभनकछु जसमनि विनु व्यालहि ॥
 भरत राज रघुवर-वन-वासू । भा मिथिलेसहि हृदय हराँसू^६ ॥
 नृप वृष्णे बुध-सचिव समाजू । कहहु त्रिचारि उचित का आजू ॥
 समुक्ति अवध असमजस दोऊ । चलिअ कि रहिअ न कह कछु कोऊ ॥
 नृपहि धीर धरि हृदय विचारी । पठाअ अग्रध चतुर चर^७ चारी ॥
 वृष्णि भरत सतिभाउ कुभाऊ । आयेहु वेगि न होइ लखाऊ^८ ॥

दो०—गए अग्रध चर भरतगति, वृष्णि गेवि करतति ।

चले चित्रकूटहि भरत, चार चले तिरहूति^९ ॥२७२॥

दूतन्ह आइ भरत कै करनी । जनकसमाज जयामति बरनी ॥
 सुनि गुरपरिजन सचिव महीपति । भे सत्र सोच सनेह विकल अति ॥

१ प्रसन्न २ अत्यन्त दुःखी हुए ३ चतुर दूत ४ जनकपुरी ५ राजा
 जनक की गति ६ जाकपुरी के लोग ७ (शास) दुख ८ दूत ९ रिमी
 को जात न हो १० जाकपुरी ।

देव देव - तरु सरिस सुभाऊ ।सनमुख विमुख न काहुहि काऊ।।

दो०—जाड निकट पहिचानि तरु छाँह समुनि^१ सब सोच ।

मांगत अभिमत पाय जग राउ रक भल पोच^२ । २६५।

लगि मन धिधि गुर-म्वामी सनेहू । भिटेउ छोग नहिं मन सदेहू ॥

अव करनाकर कीजिअ सोई । जन हित प्रभुचित^३ छोभन होई ॥

जो मेवकु साहिबहि मँकोची । निज हित चहइ तासु मति पोची ॥

सेवकहित माहिज - सेवकाई । करइ मकल सुख लोभ विहाई^४ ॥

स्वारथु नाथ फिरे सबही का किण^५ रजाइ कोटि विधि नीका ॥

एह स्वारथ - परमारथ - सारू । सकल सुकृत^६ फल मुगति सिंगार

देव एक विनती सुनि मोरी । उचित होइ तस करव बहोरी ॥

तिलक समाजु साजि सबु आना । करिय सुफल प्रभुजौ मनमाना ॥

दो०—मानुज पठइअ मोहिं वन कीजिअ सबहिं सनाथ ।

नतरु फेरिअहि बधु दोउ नाथ चलउँ मै साथ ॥२६६॥

नतरु जाहिं वन तीनिउँ भाई । बहुरिअ मीय महित रघुराई ॥

जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई । करनासागर कीजिअ सोई ॥

देव दीन्ह सब मोहि सिरभारू । मोरे नीति न वरम त्रिचारू ॥

रहउँ बचन भव स्वारथ हेतू । रहत न आरत के चित चेतू ॥

उतरु देइ सुनि स्वामि-रजाई । सो सेवकु लगि लाज लजाई ॥

अस मै अग्रगुन-उदधि-अगाधू^७ । स्वामि-सनेह सराहत^८ साधू ॥

अव कृपाल मोहि सो मत भावा । सकुच स्वामि मन जाइन पावा ॥

प्रभु पद-सपथ रहउ सतिभाऊ - जग मगल हित एक उपाऊ ॥

दो०—प्रभु प्रसन्न मन मकुच तजि, जो जेहि आयसु देव ।

सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि अनट-अबरेव^९ ॥२७०॥

१ कभी किसी वं प्रतिकूल नहीं होता २ नष्ट करने वाली है ३ नीच

४ आपके हृदय में ५ नीच ६ छोड़कर ७ पुण्य ८ बुराईयों का अथाह

समुद्र है ९ सराहना करते हैं १० अनुचित उल्लंघन ।

लगे कहन उपदेश अनेका । सहित धरमनय विरति प्रियेका ॥
 कौंसिक कहि कहि कथा पुरानी । समुभाई मव मभा सुवानी ॥
 वन रघुनाथ कौंसिकहिं कहेऊ । नाथ कालि जल पिनु^१ सवरहेऊ ॥
 मुनि कह उचित कहत रघुराई । गयेउ वीति दिन पहर अढाई ॥
 रिषि रुद्रलखि कह त्रिरुद्रतिराजू । इहाँ उचित नहि असन अनाजू ॥
 कहा भूप भलि सबहि सुहाना । पाइ रजायसु चल नहाना ॥

श्लो०—तेहि अवसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार ।

लै आए वनचर विपुल, भरिभरि काँवरि भार ॥२७९॥

कामद^३ भे गिरि रामप्रसादा । अत्रलोकत अपहरत^४ विपादा ॥
 सर सरिता वन भूमि विभागा । जनु उमगत आनंद अनुरागा ॥
 बेलि विटप सब सफल मफूला । बोलत रगमृग अलि^५ अनुकला^६ ॥
 तेहि अवसर वन अधिक उद्धाहू । त्रिप्रिध समीर^७ सुराद सत्र काहू ॥
 जाइ न बरनि मनोहरताई । जनु महि करति जनक पहुनाई ॥
 तत्र सब लोग नहाइ नहाई । राम-जनक-मुनि आयसु पाई ॥
 देखि देखि तरुवर अनुरागे । जहँ तहँ पुरजन उत्तरन लागे ॥
 दल फल मूल कद विधि नाना । पावन^८ सुन्दर सुधासमाना ॥

श्लो०—मादर सब कहँ रामगुरु, पठण भरि भरि भार ।

पूजि पितर सुग अतिथि गुरु लगे करन फलहार^९ ॥२८०॥

णहि प्रिधि वासर वीते चारी । रामु निरखि नरनारि सुग्यारी ॥
 दुहुँ समाज असि रुचि मन माहीं । पिनु मिय राम फिरबभल नाहीं ॥
 सीताराम सग वनजाम् । कोटि अमर पुर-सरिस सुपासू ॥
 परिहरि लपन राम वैदेहीं । जंढि घर भाव वाम प्रिधि तेहीं ॥
 पाठिन दइउ होइ जा सत्रहीं । रामसमीप वनिअ वन तथहीं ॥

१ निर्जल, भूये प्यासे २ अन्न का भोजन ३ इच्छा पूर्ण करने वाला

४ दूर कर देना ५ भौरा ६ सुहायने ७ दारा ८ पवित्र ९ फलों का आहार ।

धरि वीरजु करि भरत वडाई । लिए सुभट साहनी^१ बोलाई ॥
 पर पुर देम राखि रगवारे । हय गय रथ बहु जान^२ सँवारे ।
 दुपरी^३ सात्रि चले तनकाला । किअ त्रिधामुनमग महिपाला ॥
 भौरहिं आजु नहाड प्रयागा । चले जमुन उतरन सबु लाग्गा ॥
 खवरि लेन हम पठण नाथा । तिन्ह कहि अस महि नायेउ माथा ।
 साथ किरात छमातक दीन्हे । मुनिवर तुरत विदा चर कीन्हे ॥

दा०—सुनत जनक आगप्रनु सबु, हरपेउ अवधसमाजु ।

रघुनदनहि सकोचु वड, सोचविवस सुरराजु ॥२७३॥

गुरै गलानि^४ कुटिल कैकेई । काहि कहड केहि दूपनु देई ॥
 अस मन आनि मुद्रित नरनारी । भयेउ बहोरि रहव दिन चारी ॥
 एहि प्रकार गत वासर^५ सोऊ । प्रात नहान लाग सब कोऊ ॥
 करि मज्जन पूजहि नरनारी । गनपति गौरि पुरारि^६ तमारी^७ ॥
 रमा रमन-पद वदि बहोरी । विनवहि अजुलि अचल जारी ॥
 राजा राम जानकी रानी । आनँद अरधि अवध रजधानी ॥
 सुबस वमउ फिरि सहित समाजा । भरतहि रामु करहु जुनराजा ॥
 एहि सुख सुधा मीचि सब काहू । देव देहु जग-जीवन लाहू ॥

दो०—गुरसमाज भाइन्ह सहित, रामराजु पुर होउ ।

अछत राम राजा अवध, मरिअ माँग सब कोउ ॥२७४॥

सुनि सनेहमय पुर-जन-त्रानी । निदहिं जोग विरति^८ मुनि ग्यानी ।
 एहि विधि नित्य करम वरिपुरजन । रामहिं करहि प्रनामु पुलकि तन ॥
 उँच नीच मध्यम नर नरनारी । लहहिं दरसु निज निज अनुहारी^९ ॥
 साधान^{१०} सबही सनमानहिं । सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥

१ सेनापात २ सवारियों ३ द्विवटिका मुहूर्त ४ समोचमे गली जाती है ५ दिन बात गया ६ पुर + अरि=नहादेव ७ तम=अंधेरा + अरि=दूरी) ८ सुख = लक्ष्मी के स्वामी कपद ९ चराम्य १० अनुकूल ११ सुवचनता से ।

लगे वन उपदेश अनेका । सहित वरमनय विरति विवेका ॥
 कौसिक कटि कहि कथा पुरानी । समुझाई सत्र मभा सुवानी ॥
 वर खुनाथ कौसिकहि कहेऊ । नायकालिजल विनु मत्र रहेऊ ॥
 मुनि कह गचित कहत रघुराई । गयेउ वीति दिन पहर अढाई ॥
 रिषि शलसि कह तिरहुतिगजू । इहाँ उचत नहि असन-अनाजू ॥
 कहा भूप भलि सत्रहि सुहाना । पाड रजायसु चले नहाना ॥

दो —तेहि अवसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार ।

ले आए वनचर त्रिपुल, भरिभरि काँवरि भार ॥२७९॥

कामद भे गिरि रामप्रसादा । अवलोकत अपहरत विपादा ॥
 सर सरिता जन भूमि त्रिभागा । जनु उमगन आनंद अनुगगा ॥
 बलि विटप सत्र सफल सफूला । बोलत रग मृग अलि अनुमूला ॥
 तेहि अवसर वन अधिक उछाहू । त्रिनिप्रसमीर सुगद मत्र माहू ॥
 वाइ न बरनि मनोहरताई । जनु महि ऋति जनक पटुनाई ॥
 वन सत्र लोग नहाइ नहाई । राम जनक-मुनि-आयसु पाई ॥
 शिव नेरि तरुवर अनुरागे । जहँ तहँ पुगजन उतरन लागे ॥
 फल फूल मूल कद विधि नाना । पावन सुन्दर सुधाममाना ॥

ग —मादर सत्र कहँ रामगुरु, पठए भरि भरि भार ।

पूनि पितर सुर अतिथि गुरु लगे करन फलहार ॥२८०॥

पहि विधि पासर जीते चारी । रामु निगमि नरनारि सुगारी ॥
 दुहुँ समान असि नचि मन माहीं । त्रिनु मिय-राम फिरमज नारी ॥
 मीनाराम सग जनयासू । कोटि अमर-पुन-भरिसु सुपात्र ॥
 परिहार लपन-राम-वैदेही । जेहि प्रह भाव नाम विप्र तेही ॥
 दाहिन दइउ होइ जन सत्रही । रामसमीप प्रमिअ वन तवरी ॥

यामे २ अन्न का भोजन ३ इच्छा पूर्ण करने वाला

१ मुहावने २ दवा / पवित्र ३ फलों का आहार ।

आश्रम-उदधि^१ मिली जव जाई । मनहुँ उठेउ श्रवुधि अकुलाई ।
सोक विकल दोउ राज-समाजा । रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा ।
भूप-रूप-गुन-सील सराही । रोप्रहि सोकमिधु अवगाही^२ ।

छंद—अवगाहि सोक-समुद्र सोचहिं नारिनर व्याकुल महा ।

द्वै दोष सकल मरोप चोलहिं ग्रामप्रिधि कीन्हों कहा ।

सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा विदेह की ।

तुलसी न समरथ कोउ जो तरि सकइ सरित मनैह की ॥

सो०—किण अमित^३ उपदेश, जहँ तहँ लोगन्ह मुनिवरन्ह ।

धीरजु धरिअ नरेस, कहेउ वसिष्ठ विदेहसन ॥२७७॥

जासु ग्यानुरनि भवनिशि^४ नासा । वचन किरनमुनि कमल-विकास

तेहि कि मोह भमता निश्रराई^५ । गृह सिय-राम-सनेह बडाई ।

त्रिपथी साधक सिद्ध मन्याने । त्रिविध जीव जग वेद बरसाने ।

राम-सनेह-सरस^६ मन जामू । साधु सभा बड आठर तासू ।

सोह न राम प्रेम त्रिनु ग्यानु । करनधार^७ विनु जिमिजल-जानू ।

मुनि बहु विधि विदेह ममुभाए । रामगट सब लोग नहाए ।

मकल-सोक-सकुल नरनारी । सो वासर वीतेउ विनु वारी ।

पसुखग मृगन्ह न कीन्ह अहारू । प्रिय परिजन कर कवन विचारू ॥

दो०—दोउ समाज त्रिमिराज रघु, राज-नहाने प्रात ।

बैठे सब वट विटप तर, मन मलीन कृसगात^८ ॥२७८॥

जे महिसुर दसरथ-पुर-वासी । जे मिथिला पति नगर तिगासी ॥

हस-वस-गुर जनक पुरोध^९ । जिन्ह जगु मगु परमारथु सोधा ॥

१ आश्रमरूपी समुद्र २ दूध रह हे ३ बहुत ४ ससार रूपी रात्रि
५ पास जा मशती है ६ राम व स्नेह-जल से भरा हुआ ७ मल्लाह ८ नाव
९ दुबले शरीर वाले १० जनक के पुरोहित, शतानन्द जी ।

ॐ आश्रमरूप समुद्र जो शान्तरस रूपी जल मे भरा हुआ था, सेना
रूप नदी के मिलने से अशान्त होगया अर्थात् आश्रम में उथल पुथल
मच गई ।

मोह-भगन मति नहिं निदेह की । महिमा^१ सिय रघुनर-सनेह की ॥
 दो०—सिय पितु-मातु-सनेह-रस, त्रिकल न सकी सँभारि ।
 धरनिसुता धीरजु, धरेड, समउ सुधरमु विचारि ॥२८७॥
 तापसत्रेप जनक सिय देगी । भयेउ प्रेम परितोष त्रिसेपी ॥
 पुत्र पवित्र किए कुल दोऊ । सुजस धरल^२ जगु कह सन कोऊ ॥
 जिति सुरमरि^३ कीरतिमरि तोरी । गवन कीन्ह विधि अड करोरी ॥
 गग अन्ननिथल तीन बडेरे^४ । गहि किए साधु समाज घनेरे ॥
 पितु कह 'मय सनेह सुगानी । मीय सकुच महँ मनहुँ समानी ॥
 पुनि पितु मातु लीन्ह उरलाई । सिर आभिप हित नीन्हि सुहाई ।
 कहति न सोय सकुचि मन माहीं । इहाँ रसन रजनी भल नाहीं ॥
 लेखि रुस रानि जनायेउ राऊ । हृदय मराहत मीलु सुभाऊ ॥
 दो०—चार चार मिलि भेंटि मिय, त्रिदा कीन्हि सनमानि ।
 कही समय सिर भरत गति, रानि सुगानि सयानि ॥२८८॥
 मुनि भूपाल भरत व्यग्रहारू । सोन सुगय सुधा ससि सारू ॥
 सूँटे सजल, नयन पुलके तन । सुजसु सराहन लगे मुदित मन ॥
 सावधान सुनु सुमुख सुलोचनि । भरतरूथा भत्र-चव^३ त्रिमोचनि ॥
 धरम राननय ब्रह्म त्रिचारू । इहाँ जथामति मोर प्रचारू ॥
 सो मति मोर भरत महिमाही । कहइ काह छलि छुअत न छाहीं ॥

एक बार भगवान् से उनकी माया के टेरने को कहा । एक दिन अज्ञानक
 समुद्र बढने लगा और चारों ओर जल ही जल होगया । मुनि को तैरते तैरते
 एक बटका घृक्ष मिला उस पर चढ गये । घृक्ष के पत्ते पर एक बालक
 बैठा था । उसकी साँस के साथ ऋषि भीतर घुस गये और वहाँ सृष्टि
 करने लगे । जब थोड़ी देर म बाहर आये तो न जल ही था न घाऊक ।

१ प्रभुता २ स्वेत, उज्ज्वल ३ ससार के अधन (आवागमन इत्यादि)
 ४ गंगा पर हरद्वार प्रयाग और समुद्रसगम तीन बडे स्थान है ।

लखि सनेह सुनि बचन विनीता । जनक प्रिया गहि पाय पुनीता ॥
 देवि उचित असि विनय तुम्हहारी । दसरथ धरिनि^१ राम-महतारी ॥
 प्रभु अपने नीचहु आदरही । अग्नि धूम गिरि सिरतिनु धरही ॥
 सेवक राउ करम मन बानी । सदा सहाय महेस भवानी ॥
 रउरे^२ अग जोगु जग को है । दीप सहाय कि दिनकर^३ मोहै ॥
 रामु जाड वन करि सुर-राजू । अचल अवधपुर करिहहि राजू ॥
 अमर नाग नर राम-आहु-बल । सुरवसिहहि अपने अपने बल ॥
 यह सब जागबलि क कहि रागा । देवि न होइ मुधा^४ मुनि भारा ॥
 दो०—अस कहि पग-परि प्रेम अति, सियहित विनय सुनाइ ।

सिय समेत सियमातु तव, चली मुआयसु पाइ ॥२८६॥
 प्रिय परिजनहि मिली बैदेही । जो जेहि जोगु भौति तेहि तेही ॥
 तापसवेप जानकी देखी । भा सब विकल बिपाद विसेली ॥
 जनक राम-गुरु-आयसु पाई । चले बलहि सिय देखी आई ॥
 लीन्हि लाड उर जनक जानकी । पाहुनि पावन प्रेम प्रान की ॥
 उर उमगेउ अत्रुधि अनुरागु । भयेउ भूपमनु मनहुँ प्रयागु ॥
 सिय मनेह बटु^५ बाढत जोहा । तापर राम-प्रेम-सिसु सोहा ॥
 †चिरजीवी-मुनि^६ ग्यान विकल जनु । बूडत लहेउ बालअवलवनु^७ ।

१ दशरथ की रानी २ आपके ३ (दिन + कर)मूर्त्य ४ असत्य ५ बट
 वृक्ष ६ मार्कण्डेय-मुनि ७ बालमुकुन्द का सहारा ।

ज्जय महाप्रलय होनी है तो समुद्र उमड कर सब जगह जल ही
 जल कर देते हैं—पृथ्वी उसमें डूब जाती है—प्रयाग का अक्षयवट बढकर नहीं
 दूबता । उस बट के पत्ते पर ईश्वर बालरूप धरके रहता है । जनक के
 हृदय पर यही उपमा घटाई है । अर्थात् अनुराग समुद्र उमडा, राजा का
 मन प्रयाग, उसमें सीता का स्नेह बट और राम प्रेम बालमुकुन्द हुआ ।

† मार्कण्डेय अगिरा के वंशज थे । ये तपस्या के बल से अमर होगए । इन्होंने

विद्युधविनय सुनि देवि सयानी । बोली सुर स्वारथ जड जानी ॥
 मो सन कहहु भरत-मति फेरू । लोचन सहस न सूझ मूमेरू ॥
 विधि-हरि-हर माया बडी भारी । सोउ न भरतमति सकइ निहारी ॥
 मो मति मोहि कहत करु भोरी । चाँदिनि कर कि चढकर चोरी ॥
 भरतहृदय सिय-राम निवासू । तहँ कि तिमिर जहँ तरनिप्रकास ॥
 अस कहि सारद गइ त्रिलोका । विद्युत्त्रिकलनिसि मानहुँ कोका ॥
 श्लो०—सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमत्र दुठाडु ।

रचि प्रपचु मायाप्रबल भयभ्रम अरति उचाडु ॥०९३॥
 करि कुचालि सोचत सुरराज । भरत हाथ सबु काजु अकाज ॥
 गण जनक रघुनाथ समीपा । सनमाने सन रत्रि कुल-दीपा ॥
 समय ममाज धरम अविरोधा । बोले तव रघु वस पुरोध ॥
 जनक भरत सवाद सुनाई । भरत रुहाउत कही सुहाई ॥
 तात राम जस आयसु देहू । सो सबु करइ मोर मत एह ॥
 सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी । बोले सत्य सरल मृदु बानी ॥
 विद्यमान^२ आपुन मिथिलेसू । मोर कहव सब भौंति भदेसू^३ ॥
 राउर राय रजायसु होई । राउरि सपथ सही सिर मोई ॥
 श्लो०—रामसपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभासमेत ।

सकल विलोकत भरत मुगु उनइ न ऊतरु देत ॥१९८॥
 सभा सकुचवस भरत निहारी । रामवधु धरि धीरज भारी ॥
 कुसमउ देवि सनेहु सँभारा । बढत विधिजिमि घटज^४ निवारा ॥

१ अग्रम २ जी ऊरगा ३ सूर्य कुट के दीपक ४ मौजूद ५ बुरा ६ अगस्त ।

* एक समय सूर्य का तेज रोकने को विध्याग्रल बढ़ने लगा । उसके रोकने को कोई उपाय न देख कर देवताभा न उसके गुरु अगस्त्य मुनि को बसके पास भेजा । ऋषि को देख कर विध्य ने साष्टांग प्रणाम किया और प्रार्थना की कि मेरे लिये उचित आशा कीजिये । ऋषि ने कहा जब नरु में दक्षिण निशा से न लौटू तत्र तत्र नू पेमा ही पडा रह । आत्मा रहर वे फिर न लौट ।

लखि सनेह मुनि बचन विनीता । जनक प्रिया गहि पाय पुनीता ॥
 देवि उचित असि विनय तुम्हहारी । दसरथ घरिनि^१ राम-महतारी ॥
 प्रभु अपने नीचहु आदरही । अग्नि धूम गिरि निरतिनु धरही ॥
 सेवक राउ करम-मन वानी । सदा सहाय महेश-भवानी ॥
 रउरे^२ अग जोगु जग को है । दीप सहाय कि दिनकर^३ सोहै ॥
 रामु जाइ वन करि सुर-राजू । अचल अचधपुर करिहहिं राजू ॥
 अमर नाग नर राम-बाहु-गल । सुरा असिहहिं अपने अपने थल ॥
 यह सन जागवलिक कहि रागा । देवि न होइ मुग^४ मुनि भासा ।

दो०—अस कहि पग-परि प्रेम अति सियहित विनय सुनाइ ।

सिय समेत सियमातु तव, चली सुत्रायसु पाइ ॥२८६॥
 प्रिय परिजनहि मिली वैदेही । जो जेहि जोगु भौंति तेहि तेही ।
 तापसवेप जानकी देखी । भा मव त्रिकल विपाद विसेरी ॥
 जनक राम-गुरु-आयसु पाई । चले यलहिं सिय देखी आई ॥
 लीन्हि लाइ उर जनक जानकी । पाहुनि पावन प्रेम-प्राण की ॥
 उर उभगेउ अबुधि अनुरागू । भयेउ भूपमनु मनहुं प्रयागू ॥
 सिय सनेह वहु^५ वाढत जोहा । तापर राम-प्रेम-सिसु मोहाः ॥
 †चिरजीवी-मुनि^६ ग्यान विकल जनु । बूढत लहेउ बालअवलवनु^७ ॥

१ दशरथ की राणी २ आपके ३ (दिन + कर)सूर्य ४ असत्य ५ घट
 वृक्ष ६ मार्कण्डेय-मुनि ७ बालमुकुन्द का सहारा ।

जब महापलय होनी है तो समुद्र उमड़ कर सब जगह जल ही
 जग कर लेते हैं—पृथ्वी उसमें डूब जाती है—प्रयाग का अक्षयवट बढ़कर नहीं
 खूबता । उस वट के पत्ते पर ईश्वर बालरूप धरके रहता है । जनक के
 हृदय पर यही उपमा घटाई है । अर्थात् अनुराग समुद्र उमड़ा, राजा का
 मन प्रयाग, उसमें सीता का स्नेह घट और राम प्रेम बालमुकुन्द हुआ ।

† मार्कण्डेय अगिरा के वंशज थे । ये तपस्या के बल से अमर हो गए । इन्होंने,

भरत प्रीति-नति विनय बडाई । सुनत सुखद धरनत कठिनाई ॥
 जसु त्रिलोकि भगति लखलेसू । प्रेममगन मुनिगन मिथलेसू ॥
 महिमा तासु कहइ किमि तुलसी । भगति सुभाय सुमति द्विय हुलसी ॥
 आपु छोटि महिमा बड़ि जानी । कनिकुल-कानि^१ मानि सकुचानी ॥
 कदिन सकति गुन रुचि अधिकारै । मतिगति बाल प्रचन की नाई ॥

दो०—भरत विमल जसु विमल विधु, सुमति चकोर-कुमारि ।
 उन्ति विमल जनहृदय नभ, एकटक रही निहारि ॥३०४॥

भरत सुभाउ न सुगम निगम हूँ । लघुमति चापलता^२ कनि छमहूँ ॥
 कहत सुनत मतिभाउ भरत को । सीय-राम पद होइ न रत को ॥
 सुभिरत भरतहिं प्रेम गम को । जेहि न मुलमु तेहि सरिस रामको ॥
 देवि दयालु दसा सजही की । राम सुजान जान जन जी की ॥
 धरमधुरीन धीर नयनागर । मत्य-सनेह-सील-सुख-सागर ॥
 देसु कालु लखि समउ ममाजू । नीति-प्रीति-पालक रघुराजू ॥
 बोले बचन बानि-सरजसु सेइ । हित परिनाम सुनत ससिरसुते^३ ॥
 तात भरत तुम्ह धरम धुरीना । लोक-वेद विद^४ परमप्रवीना ॥

दो०—करम बचन मानम^५ विमल, तुम्ह समान तुम्ह तात ।
 गुर ममाज लघु बधु-गुन, कुसमय किमि कहि जात ॥३०५॥

जानहु तात तरनि-कुल-रीती । मत्यसध पितु कीरति प्रीती ॥
 समउ समाजु लाज गुरजन की । उदारमान हित अनहित^६ मन की ॥
 तुम्हहिं विदित सबही कर करमू । आपन मोर परम हित धरमू ॥
 मोहि सज भौति भरोस तुम्हारा । तदपि कहउँ अवसर अनुसार ॥
 तात तात निनु बात हमारी । केवल-कुल-गुरु कृपा सँभारी ॥

^१ बाडा नी २ मयादा ३
 और वेद के जात वाले ६ मन ७
 भावात् सु दर और माथक ।

कौसिकादि मुनि सचित्रसमाजू । ग्यान-अंबु-निधि^१ आपुन आजू ॥
 सिसु सेवकु आयसु-अनुगामी^२ । जानि मोहि सिर देइअ स्वामी ॥
 एहि समाज थल वूभ्रव राउर । मौन^३ मलिन में बोलव वाउर^४ ॥
 छोटे बदन कहउँ बडि वाता । छमव तात लरि वाम^५ विधाता ॥
 आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधरमु कठिन जगु जाना ॥
 स्वामि धरम स्वारथहिं विरोधू । बडर-अव^६ प्रेमहिं न प्रबोधू ॥

दो०—राखि रामरस धरमुव्रतु, पराधीन मोहि जानि ।

सब के समत^७ सर्वहित, करिअ प्रेम पहिचानि ॥२९४॥
 भरत वचन सुनि देखि सुभाऊ । सहित समाज सराहत राऊ ॥
 सुगम अगम मृदु मजु कठोरे । अरथ अमित अति आसर^८ थोरे ॥
 ज्यो मुखु मुकुरु^९, मुकुरु निजपानी । गहिन जाइ अस अदभुत बानी ॥
 भूपु भरतु मुनि साधु-समाजू । गे जहँ विबुध-कुमुद-द्विज^{१०} राजू^{१०} ॥
 सुनि सुधि सोच बिकल सब लोगा । मनहुँ मीनगन नवजल-जोगा ॥
 देव प्रथम कुल गुर-गति देखी । निरखि विदेह सनेह विसेसी ॥
 राम-भगति-मय भरतु निहारे । सुर स्वारथी हहरि हिय हारे ॥
 सब कोउ राम प्रेममय पेसा । भए अलेख^{११} सोच बस लेखा^{१२} ॥

दो०—राम सनेह-सकोच-वस, कह ससोच सुरराजु ।

रचहु प्रपचहिं पच मिलि, नाहिं त भयउ अकाजु ॥२९५॥
 सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही । देवि ! देव सरनागत पाही^{१३} ॥
 फेरि भरतमति करि निज माया । पालु विबुधकुल करि छलझाया ॥

१ ज्ञानरूपी समुद्र २ आज्ञाकारी ३ गूँगा ४ बावले की भौति ५ प्रतिकूल ६ (बहिर) बधिर-अन्व ७ सलाह ८ अक्षर ९ दर्पण १० देवतारूप कुमुद घन के लिये चन्द्रमा, ११ जो लिखने म न आवे १२ देवता १३ रक्षा करो ।

१ द्विज, दोवार जन्म, द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) पक्षी, सर्प, दौत और चन्द्रमा यह द्विज कहलाते हैं ।

भरत प्रीति-नति विनय बडाई । सुनत सुरपद वरनत कठिनाई ॥
 जासु विलोकि भगति लजलेसू^१ । प्रेममगन मुनिगन मिथलेसू ॥
 महिमा तासु कहइ किमि तुलसी । भगति सुभाय सुमति हिय हुलसी ॥
 आपु छोटि महिमा बडि जानी । कप्रिकुल-कानि^२ मानि सकुचानी ॥
 कहिन सकति गुन रचि अधिकाई । मतिगति बाल-वचन की नाई ॥

दो०—भरत विमल जसु विमल त्रिधु, सुमति चकोर-कुमारि ।

उदित विमल जनहृदय, नभ, एकटक रही निहारि ॥३०८॥

भरत सुभाउ न सुगम निगम हूँ । लघुमति चापलता^३ कवि छमहूँ ॥
 कहत सुनत सतिभाउ भरत को । सीय राम पद होइ न रत को ॥
 सुभिरत भरतहिं प्रेसु राम को । जेहि न सुलभु तेहि सरिस वामको ॥
 देखि दयालु दसा सबही की । राम सुजान जान जन जी की ॥
 धरमधुगीन धीर नयनागर । सत्य-स्नेह-मील-सुग-सागर ॥
 देसु कालु लखि समउ समाजू । नीति-प्रीति-पालक रघुराजू ॥
 बोले वचन वानि-सरवसु से^४ । हित परिनाम सुनत ससिरसुसे^५ ॥
 तात भरत तुम्ह धरम बुरीना । लोक-वेद त्रिद^६ परमप्रतीना ॥

दो०—करम वचन मानस^६ विमल, तुम्ह समान तुम्ह तात ।

गुर समाज लघु वधु गुन, कुसमय किमि कहि जात ॥३०५॥

जानहु तात तरनि-कुल-रीती । सत्यसध पितु कीरति प्रीती ॥
 समउ समाजु लाज गुरजन की । उदासीन हित अनहित^७ मन को ॥
 तुम्हहिं त्रिदित सबही कर करमू । आपन मोर परम हित धरमू ॥
 मोहि सत्र भौति भरोस तुम्हारा । तदपि कहउँ अवसर अनुमाग ॥
 तात तात बिनु तात हमारी । केवल कुल-गुरु कृपा संभारी ॥

१ थोडा भी २ मर्यादा ३ चबलता ४ अमृत सी मीठी ५ व्यवहार
 और वेद क जानो वाले ६ मन ७ वैरि, सरस्वती के सेवक के समान
 भयात् सु-दर और सार्थक ।

—प्रभु-पद-कमल गहे अकुलाई । समउ मनेहु न सो कहि जाई ॥
 कृपासिंधु सनमानि सुवानी । वैठाए ममीप गहि पानी ॥
 भरत-विनय मुनि देखि सुभाऊ । मिथिल सनेह सभा रघुराऊ ॥

छंद—रघुराउ सिथिल सनेहु साधु-समाज मुनि मिथिलावनी ।
 मन महुँ मराहत भरत भायप भगति की महिमा घनी^१ ॥
 भरतहिँ प्रसमत विबुध वरपत सुमन मानस-मलिन^२ से ।
 तुलसी विकल मवलोग मुनि मकुचे निसागम-नलिन^३ से ॥
 सो०—देखि दुखारी दीन, दुहुँ समाज नरनारि मव ।

मघवा^४ महामलीन मुएहिँ मारि मगल चहत ॥३०२॥
 कपट-कुचाल-सीयँ सुरराजू । पर-अकाज-प्रिय आपन काजू ॥
 काकसमान पाऊ रिपु^५ रीती । छली मलीन कतहुँ न प्रतीती ॥
 प्रथम कुमति करि कपटु सकेला^६ । मो उचाटु^७ मवके सिरमेला^८ ॥
 सुरमाया सब लोग विमोहे^९ । रामप्रेम अतिसयनविछोहे^{१०} ॥
 भए उचाटवस मन थिर नाहीं । छनवनरुचि, छनसदन सुहाहीं ॥
 दुविध^{११} मनोगति प्रजा दुखारी । मरित-सिंधु सगम जनु वारी ॥
 दुचित कतहुँ परितोपु न लहहीं । एक एक मन मरमु न कहहीं ॥
 लखि हिय हंसि कह कृपानिधानू । सरिस स्वान मघवान जुवानू^{१२} ॥

दो०—भरतु जनकुमुनिजन सचित्र, साधु सचेत विहाइ ।

लागि देव माया सरहिँ, जथाजोगु जनु पाइ ॥३०३॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । निजसनेह सुर-पति-छल भारे ॥
 सभा राउ गुर महिसुर मत्री । भरतभगति सब कह मति जत्री ॥
 रामहि चितवत चित्र लिखे मे । सकुचत बोलत वचन सिखे से ॥

१ बहुत २ कपटी मग से ३ जैसे रात्रि आने पर कमल ४ इन्द्र ५ पाक
 राक्षस का बेरी, इन्द्र ६ जमा किया ७ उछाटा ८ चपेकदिया ९ मोहित
 किया १० दूर हुण ११ दुविधा, दुचितता, चिंता १२ दबन् मधुवन् युवन् तीनों
 शब्द एक से हैं अतः सबके म्बभाव भी समान ही हुण (यही आशय है) ।

कतहुँ निमज्जन^१, कतहुँ प्रनामा । कतहुँ त्रिलोकत मन अभिरामा^२ ॥
 कतहुँ वैठि मुनिआयसु पाई । सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥
 देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा । देहिँ असीस मुदित बन देवा ॥
 फिरहिँ गए दिनु पहर अढाई । प्रभु पद कमल त्रिलोकहिँ आई ॥

दो०—देखे थलु तीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँक ।

कहत सुनत हरि-हरसुजसु, गयेउ दिवस भइ साँक ॥३१३॥

भोर न्हाइ सव जुरा समाजू । भरत भूमिसुर तिरहुति राजू ॥
 भल दिन आजु जान मन माहीं । रामु कृपाल कहत सकुचाहीं ॥
 गुर नृप भरत सभा अवलोकी^३ । सकुचिराम फिरि अवनि त्रिलोकी ॥
 सील सराहि सभा सव सोची । कहुँ न राम सम स्वामि सँकोची ॥
 भरत सुजान राम रुख देखी । उठि सप्रेम धरि धीर विसेखी ॥
 करि दडवत कहत कर जोरी । राखी नाथ सकल रुचि मोरी ॥
 मोहि लागि सत्रहि सहेउ सतापू^४ । बहुत भाँति दुखु पावा आपू ॥
 अथ गोसाईं मोहि देउ रजाई । सेवउँ अवध अवधि भरि जाई ॥

दोहा०—जेहि उपाय पुनि पायँ जनु, देखइ दीनदयाल ।

सो सिख देखअ अवधि लागि, कोसलपाल कृपाल ॥३१४॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं । सव सुचि सरस सनेह सगाईं ॥
 राउर वृदि^५ भल भव दुख दाहू । प्रभु त्रिन वादि परमपद-लाहू ॥
 स्वामि सुजानु जानि सव ही की । रुचि लालसा रहनि जन जी की ॥
 प्रनतपालु पालहि सव काहू । देव दुहँ दिसि ओर निवाहू ॥
 अस मोहि सव विधि भूरि भरोसो । किए विचारु न सोच खरोसो^६ ॥
 आरति भोर नाथ कर छोहू । दुहँभिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू^७ ॥
 यह बड दोष दूरि करि स्वामी । तजि सकोच सिरसइअ अनुगामी ॥

१ स्नान करते हैं २ सुन्दर ३ देखी ४ दुःख ५ आपका कहा कर ६ सच्चा थोडासा ७ मुझको बरबस ढीठ बना दिया (हठि का पाटान्तर भति) ।

सानुज आपु अत्रि मुनि साधू । सहित गए जहँ कृप अगाधू ॥
 पावन पाय पुन्य-थलु राखा । प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा ॥
 तात अनादि-सिद्ध^१ यल एहू । लोपेउ काल विदित नहिं केहू^२ ॥
 तव सेवकन्ह सरस थलु देखा । कान्ह सुजल हित कृप विसेखा ॥
 विधिअस भयेउ विस्व उपकारू । सुगम अगम अति धरम-विचारू ॥
 भरतकृप अव कहिहहिं लोगा । अति पावन तीरथ-जल जोगा ॥
 प्रेम सनेम निमज्जत प्राणी । होइहिं विमल करम मन चानी ॥

दो०—कहत कृप-महिमा सकल, गए जहाँ रघुराउ ।

अत्रि सुनायेउ रघुवरहिं, तीरथ-पुन्य-प्रभाउ ॥३११॥

कहत धरम इतिहास सप्रीती । भयेउभोर निसि सो सुख वीती ॥
 नित्य निवाहि भरतु दोउ भाई । राम-अत्रि-गुर-आयसु पाई ॥
 सहित समाज साज सब मादे । चले राम वन अटन^३ पयादे ॥
 कोमल चरन चलत विनु पनहीं । भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं ॥
 कुस कटक, काँकरी फुराई^४ । कटुक कठोर कुवस्तु दुराई ॥
 महि मजुल मृदु मारग कीन्हे । बहत समीर त्रिविध सुख लीन्हे ॥
 सुमन धरपि सुर घन करि छाँहीं । विटप फूलि फल तून मृदुताहीं^५ ॥
 मृग विलोकि खग वोलि सुवानी । सेवहिं सकल रामप्रिय जानी ॥

दो०—सुलभ मिद्धि सब प्राकृतहु^६, राम कहत जमुहात ।

राम-पान-प्रिय भरत केहुं, एह न होइ बडि बात ॥३१२॥

एहि, विधि भरतु फिरत वन माँहीं । नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं ॥
 पुन्य जलासय भूमि विभागा । खग मृगत रुतून गिरि वन चागा ॥
 चारु विचित्र पवित्र विसेली । वृक्षत भरतु दिव्य सब देखी ॥
 सुनि मन मुदित कहत रिपिराऊ । हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ ॥

१ अन + भादि (जिसके भादि का पता नहीं) सिद्धि २ किसी को
 ३ वन में घूमना ४ टूँठ ५ कडवी ६ नर्म होने से ७ साधारणतया ।

कतहुँ निमज्जन^१, कतहुँ प्रनामा । कतहुँ विलोकत मन अभिरामा^२ ॥
कतहुँ वैठि मुनिआयसु पाई । सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥
देवि सुभाउ सनेहु सुसेवा । देहिं असीस मुदित वन देवा ॥
फिरहिं गए दिनु पहर अढाई । प्रभु पद कमल विलोकहिं आई ॥

दो०—देखे थलु तीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ ।

कहत सुनत हरि-हर सुजसु, गयेउ दिवस भइ साँझ ॥३१३॥

भोर न्हाइ सब जुरा समाजू । भरत भूमिसुर तिरहुति राजू ॥
भल दिन आजु जान मन माहीं । रामु कृपाल कहत सकुचाहीं ॥
गुर-नृप भरत सभा अवलोकी^३ । सकुचिराम फिरि अबनि विलोकी ॥
सील सराहि सभा सब सोची । कहूँ न राम सम स्वामि सँकोची ॥
भरत सुजान राम रुख देखी । उठि सप्रेम धरि धीर विसेखी ॥
करि दडवत कहत कर जोरी । राखी नाथ सकल रचि मोरी ॥
मोहि लागि सगहि सहेउ सतापू^४ । बहुत भौंति दुखु पावा आपू ॥
अन गोमाई मोहि देउ रजाई । सेवउँ अवध अवधि भरि जाई ॥

दोहा०—जेहि उपाय पुनि पायँ जनु, देखइ दीनदयाल ।

सो सिर देइअ अवधि लागि, कोसलपाल कृपाल ॥३१४॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाई । सब सुचि सरस सनेह सगाई ॥
गड-बुदि^५ भल भव दुख-दाह । प्रभु बिन वादि परमपद-लाह ॥
स्वामि सुजानु जानि सन ही की । रुचि लालसा रहनि जन जी की ॥
प्रनतपालु पालहि सब काहू । देव दुहूँ दिसि ओर निगाह ॥
अस मोहि सन विधि भूरि भरोसो । किए विचारु न सोच सरोसो ॥
आरति मोर नाथ कर छोहू । दुहूँमिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू ॥
यह बड़ दोष दूरि करि स्वामी । तजि सकोच सिराइअ अनुगामी ॥

१ स्नान करते हैं २ सुन्दर ३ देखी ४ दुःख ५ आपका कहा कर, पाड़ासा ६ मुझको शरवस ढीठ बना दिया (हठि का पाठान्तर)

सानुज आपु अत्रि मुनि साधू । सहित गए जहँ कूप अगाथू ॥
 पावन पाथ पुन्य थलु राखा । प्रमुदित प्रेम अत्रि अस्स भाखा ॥
 तात अनादि-मिद्ध^१ थल एहू । लोपेउ काल विदित नहिं केहू^२ ॥
 तत्र संवकन्ह सरस थलु देखा । कीन्ह सुजल हित कूप विसेखा ॥
 विधिअस भयेउ निख उपकारू । सुगम अगम अति धरम-निचारू ।
 भरतकूप अब कहिहहिं लोगा । अति पावन तीरथ-जल जोगा ॥
 प्रेम सनेम निमज्जत प्राणी । होइहिं निमल करम मन बानी ॥

दो०—कहत कूप-महिमा सकल, गए जहाँ रघुराउ ।

अत्रि सुनायेउ रघुरहिं, तीरथ-पुन्य-प्रभाउ ॥३११॥

कहत धरम इतिहास सप्रीती । भयेउभोर निसि सो सुख वीती ॥
 नित्य निजाहि भरतु दोउ भाई । राम अत्रि-गुर-आयसु पाई ॥
 सहित समाज साज सब सादे । चले राम धन अटन^३ पयादे ॥
 कोमल चरन चलत विनु पनहीं । भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं ॥
 कुस फटक काँकरी फुराई^४ । कटुक^५ कठोर कुवस्तु दुराई ॥
 महि मजुल मृदु मारग कीन्हे । नहत समीर त्रिनिध सुख लीन्हे ॥
 सुमन वगपि सुर धन करि छाहीं । विटप फूल फल तून मृदुताहीं^६ ॥
 मृग विलोकि रग बोलि सुबानी । सेवहिं सकल रामप्रिय जानी ॥

दो०—सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु^१, राम कहत जमुहात ।

राम-पान प्रिय भरत केहुं, एह न होइ बडि वात ॥३१२॥

एहि विधि भरतु फिरत बन माँहीं । नेमु प्रेमु लरि मुनि सकुचाहीं ॥
 पुन्य जलासय भूमि विभागा । रग मृग तरु तून गिरि बन वागा ॥
 चारु विचित्र पवित्र विसेरी । वृक्षत भरतु दिच्य सब देखी ॥
 सुनि मन मुदित कहत रिपिराऊ । हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ ॥

१ अन + आदि (जिसके आदि का पता नहीं) सिद्धि २ किसी को
 ३ यत्र में घूमना ४ टूट ५ कड़वी ६ नर्म होने से ७ साधारणतया ।

सो कुचालि सत्र कहँ भइ नीकी । अत्रि आस मम जीवन जी की ॥
 नतरु लपन सिय राम वियोगा । हृदि मरत सयु लोग कुरोगा ॥
 रामकृपा अवरै^१ सुधारी^२ । विबुधारि^३ भइ गुनद । गोहारी^४ ॥
 भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो । राम प्रेम रसु कहि न परत सो ॥
 तन मन वचन उमग अनुरागा । धीरधुरधर धीरज त्यागा ॥
 वारिजलोचन मोचत^५ वारी । देखि दसा सुरसभा दुखारी ॥
 मुनिगन गुरुधुर^६ धीर जनकसे । ग्यानअनल मन कसे कनकसे^७ ॥
 जे विरचि निरलेप^८ उपाये । पटुमपत्र^९ निर्मजग जलजाये^{१०} ॥

दो०—तेउ निलोकि रघुवर-भरत प्रीति अनूप अपार ।

भए मगन मन तन वचन सहित विराग विचार ॥३१८॥

जहाँ जनक-गुर गति मति भोरी । प्राकृत प्रीति कहत बडि खोरी ॥
 धरन्त रघुवर भरत वियोगू । मुनि कठोर कवि जानिहि लोगू ॥
 सो मकोच रस अकथ सुनानी । समउ मनेहे सुमिरि सकुचानी ॥
 भेंटि भरतु रघुवर समुभाए । पुनि रिपुदवन हरपि हिय लाए ॥
 सेनक सचिव भरत-रुग्य पाई । निज निज काज लगे सब जाई ॥
 मुनि दारुन दुरु दुहँ समाजा । लगे चलन के साजन साजा ॥
 प्रमु पत्र पटुम बडि दोउ भाई । चले मीस धरि रामरजाई ॥
 मुनि तापस वन देव निहोरी । सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥

दो०—लपनहि भेंटि प्रनामु करि, सिर धरि मिय पद वृरि ।

चले सप्रेम असीस मुनि, सकल सुमगल मूरि ॥३१९॥

सानुज राम नृपहि सिर नाई । कीन्हि बहुत विधि विनय बडाई ॥
 देव दयाप्रस बड दुरा पायेउ । सहित समाज काननहि आयेउ ॥

१ विगडो हुई २ सुधर जाती है ३ देवताओं की धारणा (इच्छा)
 ४ गुहार, रक्षार्थ जोर से बुलाना ५ छोड़ना ६ धुरधर ७ ज्ञानरूपी अग्नि
 से मा रूप सोने को तपाकर निर्दोष कर लिया था ८ माया में रहित ९
 कमल के पत्ते १० गुणद । १० पानी से पदा कमल ।

भरत विनय सुन सचहि प्रससी । रीर-नीर-विवरन-गति^१ हसी ॥

दो०—दीनबन्धु सुनि बन्धु के, वचन दीन छलहीन ।

देस-काल अवसर सरिस, बोले रामु प्रवीन ॥३१५॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की । चिंता गुरहिं नृपहि घर बनकी ॥

माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू । हर्माहि तुम्हहि सपनेहुँ न कलेसू ॥

मोर तुम्हार परम पुरपारथु । स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु ॥

पितु आयसु पालहि दुहुँ भाई । लोक वेद भल^२ भूप भलाई ॥

गुर पितु-मातु-स्वामि-सिरा पाले । चलेहु कुमग पग परहिं न खाले ॥

अस बिचारि मव सोच विहाई । पालहु अवध अवधि भरिजाई ॥

देसु कोमु पुरजन परिवारु । गुरपद-रजहिं लाग छरु भारु^३ ॥

तुम्ह मुनि-मातु सचिव सिरामानी । पालेहु पुहुमि^४ प्रजा रजधानी ॥

दो०—मुखिया मुखु सो चाहिए, खान पान वहुँ एक ।

पाइल पोपइ सकल अँग, तुलसी सहित विवेक ॥३१६॥

राज धरम सरवसु - एतनोई । जिमि मन माँह मनोरथ गोई ॥

बन्धु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । त्रिनु अधार मन तोपु न साँती ॥

भरत सील गुर सचिव समाजू । सकुच सनेह विवस रघुराजू ॥

प्रभु करि कृपा पौवरी दीन्ही । सादर भरत सीस धरि लीन्ही ॥

चरनपीठ^६ करुना निधान के । जनु जुगजामिक^७ प्रजा प्रानके ॥

सपुट^८ भरत सनेह-रतन के । आरर जुगजनु जीवजतन^९ के ॥

कुल कपाट करकुसल^{१०} करम के । विमल नयन^{११} सेवा सुधरम के ॥

भरत मुदित अवलव लहे ते । अस सुरजससिय राम रहेंते ॥

दो०—माँगेउ विदा प्रनामु करि, राम लिए उर लाइ ।

लोग उचाटे^{१२} अमर पति, छुटिल कुअवसर पाइ ॥३१७॥

१ दूध पानी के अलग करने की गति २ पाठान्तर—दुह ३ बड़ा बोझ

४ धरती ५—६ खडाऊ ७ पहरेआ ८ टफन ९ रक्षार्थ १० उत्तम

११ सुन्दर नेत्र १२ उघाटन किया ।

सो कुचालि सन कहँ भइ नीकी । अत्रधि आस सम जीवन जी की ॥
 नतरु लपन सिय राम बियोगा । हहरि मरत सबु लोग कुरोगा ॥
 रामकृपा अवरैव^१ सुधारी^२ । शिवुधधारि^३ भइ गुनद । गोहारी^४ ॥
 भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो । राम-प्रेम-रसु कहि न परत सो ॥
 तन मन बचन उमग अनुरागा । धीरधुरधर धीरज त्यागा ॥
 वारिजलोचन मोचत^५ बारी । देखि दसा सुरसभा दुखारी ॥
 मुनिगन गुरुधुर^६ वीर जनक से । ग्यानअनल मन कसे कनक से^७ ॥
 जे विरचि निरलेप^८ उपाये । पद्दुमपत्र^९ जिमि जग जलजाये^{१०} ॥

दो०—तेउ विलोकि रघुवर-भरत प्रीति अनूप अपार ।

भए मगन मन तन बचन सहित विराग विचार ॥३१८॥

जिहाँ जनक-गुर गति मति भोरी । प्राकृत प्रीति कहत बडि खोरी ॥
 धरनत रघुवर-भरत बियोगू । सुनि कठोर कपि जानिहि लोगू ॥
 सो मकोच रस अकथ सुधानी । नमउ सनेह सुभिरि सकुचानी ॥
 भेंटि भरतु रघुवर समुभाण । पुनि रिपुदवन हरपि हिय लाण ॥
 सेवक सचिव भरत-रुप पाई । निज निज काज लगे सब जाई ॥
 सुनि दासुन दुगु दुहँ समाजा । लगे चलन के साजन साजा ॥
 प्रभु पद पद्दुम बदि दोउ भाई । चले सीस धरि रामरजाई ॥
 सुनि तापस बन देव निहोरी । सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥

दो०—लपनहिं भेंटि प्रनामु करि, सिर धरि सिय पद धूरि ।

चले सप्रेम असीस सुनि, सकल सुमगल मूरि ॥३१९॥

सानुज राम नृपहि सिर नाई । कान्हि बहुत विधि तिनय पड़ाई ॥
 देव दयावस बड दुख पायेउ । सहित समाज काननहिं आयेउ ॥

१ त्रिगंडी हुई २ सुधर जाती है ३ द्रवताओं की धारणा (इच्छा)

४ गुहार, रक्षार्थ जोर से बुलाना ५ छोड़ना ६ धुरधर ७ ज्ञानरूपी अग्नि
 से मन रूप सोने को तपाकर निर्दोष कर लिया था ८ माया से रक्षित ९
 कमल के पत्रों १० गुणद । १० पानी से पेदा कमल ।

पुर पगु धारिअ देइ असीसा । कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा ।
मुनि महिदेव साधु सनमाने । विदा किए हरि-हरसम जाने ।
सासुसमीप गए दोउ भाई । फिरे वदि पग आसिप पाई ।
कौसिक वामदेव जावाली । परिजनपुरजन सचिव सुचाली ।
जयाजोगु करि विनय प्रनामा । विदा किए सब सानुज रामा ।
नारि पुरुष लघु मध्य बडेरे । सब सनमानि कृपानिधि फेरे ।

दो०—भरत-मातु-पद वदि प्रभु, सुचि सनेह मिलि भेंटि ।

विदा कीन्ह सजि पालकी, सकुच सोच सब भेंटि ॥३२०॥

परिजन मातु पितहिं मिलि सीता । फिरी प्राण प्रिय प्रेम पुनीता ।
करि प्रनामु भेंटि सब सासु । प्रीति कहत कवि हिय न हुलासु ।
मुनि सिख अभिमत आसिप पाई । रही सीय दुहुँ प्रीति समाई ।
रघुपति पदु पालकी मँगाई । करि प्रबोधु सब मातु चढाई ।
बार बार हिलि मिलि टुहुँ भाई । 'सम सनेह जननी पहुँचाई ।
साजि वाजि गज वाहन नाना । भूप भरतदल कीन्ह पयाना ।
हृदय राम सिय लपन समेता । चले जाहि सब लोग अचेता २ ।
वसहुँ^३ वाजि गज पसु हिय हारे । चले जाहिं परवस मन मारे ॥

दो० - गुर-गुरतिय-पद वदि प्रभु, सीता लपन समेत ।

फिरे हरप विसमय-सहित, आए परननिकेत ॥३२१॥

विदा कीन्ह सनमानि निपादू । चलेउ हृदय बड विरह विपादू ।
कोल किरात भिल्ल बनचारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी ॥
प्रभु सिय लपन बैठि बट छाहीं । प्रिय-परिजन वियोग बिलखाहीं ॥
भरत-सनेह-सुभाउ सुवानी । प्रिया अनुज सन कहत वषानी ॥
प्रीति प्रतीति वचन मन कगनी । श्रीमुख^४ राम प्रेमवस चरनी ॥
तेहि अवसर खग मृग जल मीना । चित्रकूट चर अचर मलीना ॥

विविध विलोकि दसा रघुवर की । वरवि सुमन कहि गति घर घर की ॥
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो । चले मुदित मन डर न खरोसो ॥

दो०—सानुज सीयममेत प्रभु, राजत परनकुटीर ।

भगति ग्यान धैराग जनु, मोहत धरे सरीर ॥३२२॥

मुनि महिसुर गुर भरत भुञ्छालू । रामनिरह सब साजु विहालू^१ ॥
प्रभु-गुन-ग्राम गुनत मन माहीं । सब चुपचाप चले मग जाहीं ॥
जमुना उतरि पार मनु भयेऊ । सो वासरु^२ विनु भोजन गयेऊ ॥
उतरि देवसरि दूसर वासू । रामसखा सब कीन्ह सुपासू^३ ॥
सई उतरि गोमती नहाए । चौथे दिवस अवधपुर आए ॥
जनक रहे पुर वासर चारी । राज-काज सब साज सँभारी ॥
सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू । तिरहुति चले साज सब साजू ॥
नगर-नारि नर गुर-सिस्र मानी । बसे सुगेन^४ राम रजधानी ॥

दो०—रामदरस लागि लोग सत्र, करत नेम उपवास ।

तजि तजि भूपन भोग सुख, जिअत अवधि की आस ॥३२३॥

सचिव सुसेवक भरत प्रजोये । निज निज काज पाइ सिस्र-सोधे ॥
पुनिसिस्र दीन्ह बोलि लघु भाई । सौंपी सकल मातु सेवकाई ॥
भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करि प्रनामु वर विनय निहोरे ॥
ऊँच नीच कारजु भल पोचू^५ । आयसु देव न करन सँकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा गुलाए । समाधानु^६ करि सुवम^७ रसाण ॥
सानुज गे गुरगेह जहोरी । करि दंडवत कहत कर जोरी ॥
आयसु होइ त रहउँ सनेमा^८ । बोले मुनि तन पुलकि^९ सप्रेमा ॥
समुझव कहव करन तुम्ह जोई । धरममारु^{१०} जग होइहि सोई ॥

१ धवडाये हुए २ दिन ३ आराम, सुभीता ४ मुख्य से ५ शिष्ट-
नुसार काम करने लगे ६ घुरा ७ ममक्षाकर सतुष्ट किया ८ अच्छी तरह
९ नियम और द्रव्य के साथ, १० रोमांचित होकर ११ धर्म का तप ।

पुलकि गात द्विय सियरघुवीरू । जीह नाम जप लोचन नीरू ॥
 लपन राम सिय कानन वसही । भरत भवन वसितपतनु कसही ॥
 दोड दिसि समुक्ति कहत सत्र लोगू । सत्र त्रिधि भरत सराहन जोगू ॥
 सुनि व्रत नेम साधु सकुचाही । देखि वसा मुनिराज लजाही ॥
 परम पुनीत^१ भरत आचरन^२ । मधुर मजु मुद मगल-करन^३ ॥
 धरन कठिन कलि-कलुप कलेसू^४ । महा-मोह निसि दलन दिनेसू^५ ॥
 पाप पुज कुजर-भृग-राजू । ममन सकल सताप समाजू ॥
 जनरजन^६ भजन भवभारू^७ । रामसनेह सुधाकर सारू ॥

छंद—निय राम प्रेम-पियूप पूरन^१ होत जनम न भरत को ।
 मुनि-मन श्रगम जम नियम मम दम त्रिपम व्रत आचरत को ॥
 दुखदाह दारिद दभ दूपन सुनस मिस अपहरत को ।
 कलिकाल तुलसी से मठन्हि हठि रामसनमुत्प करत को ॥

सो०—भरतचरित करि नेम तुलसी जो सादर सुनहिं ।
 सीय-राम पद प्रेम अबसि होइ भव रस विरति ॥३०६॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुपविध्यसने
 विमलविज्ञानवैराग्यसपादनो नाम
 द्वितीय सोपान समाप्त ।

१ अत्यन्त पवित्र २ भरत के आचरण ३ कलियुग के पापों और कुशों
 ४ मृत्यु ५ भक्तों का प्रसन्न करने वाला ६ ससार की कठिनाइयों के नाशक
 ७ राम के प्रेम रूप अमृत से भरा हुआ ।

- २४ लोक—अतल, वितल सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल,
भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनर्लोक, तप लोक, सत्यलोक।
- १४ विद्या—१ ब्रह्मज्ञान, २ रसायन, ३ श्रौतकथा, ४ वैद्यक, ५ ज्योतिष,
६ व्याकरण, ७ धनुर्विद्या, ८ जल में तैरना, ९ सांगीत, १० नाटक,
११ अद्वारोहण, १२ कोकशास्त्र, १३ घोरी, १४ चतुरता ।
- ४ वेद—ऋग्वेद यजुर्वेद, साम और अथर्वण ।
- ४ उपवेद—१ ऋग्वेद का आयुर्वेद, २ यजुर्वेद का धनुर्वेद, ३ सामवेद
का गान्धर्व, ४ अथर्वण वेद का स्थापत्य ।
- ६ वेदवाग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण निरुक्त, द्रव्य, ज्योतिष ।
- ६ शास्त्र—सायण, योग, वेदान्त, मीमांसा न्याय, वैशेषिक ।
- १६ शृङ्गार—१ अगशुचि, २ मजन, ३ दिव्य वस्त्र, ४ मण्यवर, ५ केश
सँभारना, ६ माँग में सिन्दूर, ७ ठोटी पर तिल, ८ माथे में चिनी,
९ मेहर्दी, १० अरगजा लगाता, ११ भूपण, १२ सुगन्ध १३ माल
राग, १४ दतराग, १५ अधरराग, १६ काजल ।
- ६ रस—कटु, तीव्र, अम्ल, मधुर, कषाय, लवण ।
- सप्तऋषि—ऋषिष्ठ, अत्रि, ऋश्यप, विद्व्यामित्र, भरद्वाज, जमदग्नि, गौतम
- सप्तावरण—१ जल, २ पत्र, ३ अग्नि, ४ आकाश, ५ अहकार, ६ मह
त्तर, ७ प्रकृति ।
- १६ पूजा (पोडसपूजा) आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमन
मधुपर्क, फिर से आचमन, स्नात, वस्त्राभूषण, गन्ध पुष्प, धूप, दीप
नैवेद्य, चन्दना ।



